

मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली



डा. ललिता झा

पैथली भाषा समस्त ओ पैथलीभाषक
 एकटा सभसँ महत्वपूर्ण पक्ष पावन अछि
 लोकभाषिक ओ पारिवारिक प्रकृतिक अन्तर्गत
 राज्य-राजिक संघ, परिवार, अधीनस्थ इत्यादि
 कतिपय प्रमुख ग्रन्थसँ पैथली भाषक कोषका
 वैचारिक एवं साधनत्व लोकभाषिक पुष्कल
 परिपाकमे सामग्री पेटवे कहनि, अर्थात् निम्नलिखित
 अन्तर्गत ओ वर्णन कालक अधीन, साधनिक,
 सांस्कृतिक जीवनक समावेशशाली
 अध्यय-विश्लेषणक हेतु संपाद-शास्त्री लोकभाषिक
 मेहो मूलवान् अभिमत उक्तान सब पेटनि ।
 सारांशतः कहल जा सकैत अछि जे पैथलीका
 अन्तःगुण अमूर्तसभक जीवनक लक्ष्य देखवाक हेतु
 ई ग्रन्थ एकटा महत्वपूर्ण रूपमे सिद्ध होयत । अन्तर्गत
 ग्रन्थ पैथली-साहित्य-परिवारसँ पैथलीका
 लोकभाषिक शब्दक महत्वपूर्ण रूपमे सभसँ अछि ।
 लोकजीवन ओ ओषधि अन्तर्गत कः पैथली
 भाषा-साहित्यक ज्ञानकोषक समृद्धि महत्वपूर्ण
 योगदानक रूपमे पैथलीक भोजन सभसँ
 शब्दावली सभसँ विविध ओ महत्वपूर्ण ग्रन्थक
 एषण-प्रस्तुति हेतु एकर लेखिका डा. ललितामा
 अशोक साधुवादक समुचित उत्तराधिकारिणी होय ।

पैथली सेवा आ गजेंद्र ठाकुरजी के
 शुभाशिषक सः ।

ललितामा

20/6/2011

MAITHILIKA BHOJAN SAMBANDHI SHABDAVALI

By Dr. Lalita Jha

सर्वसिद्धांत : लेखिका

प्रकाशक : मिथिला रिजर्च सोसाइटी
कचिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा-846001
मो. - 09430639249

पुस्तक प्राप्ति स्थान : श्रीशिवकान्त झा (अधिवक्ता)
मो. - बलभद्रपुर (बैठा रोड)
लहेरियासराय, दरभंगा-846001
दूरभाष- 06272-244765, 09708254805

अवधि : अठ्ठारह सत्रहवींमे पूर्णतः हवेलीमे निमित्त मंडक रेंटिंग
एकगोट चित्रक अनुकृति, अनुकृतिकार- सचिनचन्द्र

प्रथम संस्करण : 2011

मूल्य : सात सय रुपया (700/-)

मुद्रक : मिथिला
राम, दरभंगा

उपाति : लोकभाषिक शब्दावलीक

मनुष्यक तीन गोर रूपधर आवश्यकता होइत छैक- भोजन, वस्त्र, एवं आवास । एहिने सबसँ पहिल एवं अनिवार्यतम आवश्यकता धिक भोजन । से मनुष्यक नहि अपितु प्राणीसभक जीवनक आधार होइत छैक भोजन । भोजनक बिना जीवनक समस्त क्रिया-कलाप सम्भव भऽ जाइत छैक । पैघन पैघ ओ लघुसे लघुतम जीवक जीवनचर्य भोजनकसँ रहैत अछि ।

मिथिलसभक एकटा खिलिअ शब्दमे मधुश्रावणीमे पूजा-पाठक क्रममे अनेक काया सब कहल जाइत छैक । अछि कवनमे एक गोट कथामे महादेव द्वारा जीव मात्रक आहर बढाक काजक वर्णन कयल गेल अछि ।

महादेव निरुद्ध दिन सोने-पौर उठि कऽ चलहु काल जाइत छलक । अबैत-अबैत बहुत अबर भऽ जाइत छलनि । पूजा-पाठमे ते बेसी अबर भऽ जाइत छलनि । पार्वती महादेवक नित दिनक एहि चरबापर सोने-मोन खीझाइत रहैत छलीह । महादेव बखन आवधि हो चरखी बेर-बेर पुछथिन-अब अऊ महादेव । अहाँ सब दिन सोने उठि कऽ कतल चल जात छी ? कोन काजमे जाइ जात छी जे एते अपरहान भऽ जाइए ।

महादेव चुपचाप मुनि लोक कायि । कोनो देवता नहि देखिन । पार्वतीकेँ एहि पर छमस लहरि लक्ष्मि, सौम्य ओ सोन मयौहि कऽ चुप रहि जायि ।

पार्वतीक भव दिन बेर-बेर पुनारिसेँ अकल कऽ एक दिन ओ कटलधिन जे-सब दिन आहर बँटैत न बढ छ । आहर बँटैत-बँटैत अबर भऽ जाइए ।

पार्वती चुकलधिन जे ककल-ककल आहर बँटै छी जे एते अबर भऽ जाइए ?

महादेव कहलधिन ते- सकल जीवा-वस्तु, चिहँ-दुनमुनी, फर-फाँतमा, कुरी-पिपरी, काँहो-मकोहीकेँ आहर बँटै छिरे ।

महादेवक बातपर पार्वतीकेँ विकास नहि भेलनि । ओ महादेवक बातकेँ परखलक बिचार कयलनि ।

एक दिन पार्वती सोझेंमे एकटा फलिंग फकड़े लेलनि । ओकर एकटा कियौड़ी
मे बन्द कऽ कोछोक सोधनीमे नुका कऽ रहि देलनि आ ओकरा पुन - पुन
कपड़ा-लपारां झौंष-तोषि देलनि ।

दोसर दिन, तिसरु दिन जकां महादेव आहर बाँटि कऽ ओकर अपनबंद । पार्वती
महादेवके पुछलथिन-जय अओ महादेव । आहर बाँटल पऽ गेल ? ककर-ककर आहर
देलिसे ?

महादेव कहलथिन-मनुखसँ लऽ कऽ जोष-जनु, मिहै-गुलगुली, फर-फाँटल,
बुट्यो-पिपरो, कौड़ो-मकोड़ी सबके जबाजोम आहर बाँटि देलिसे ।

पार्वती पुछलथिन केओ बुट्यो ककरा ?

महादेव कहलथिन- केओ जबवे रहि रहल । सबके आहर भेंटि गेलै ।

पार्वती हेसैत कहलथिन - हे जगो महादेव ! एकटा फलिंग तँ छुटि गेल
अकर हम काल्हसँ कियौड़ोमे बन्द कऽ नुका कऽ रखने छी ।

महादेवो बिहुँसैत कहलथिन - हे अग पार्वती ! ककरा आहर रहि छुटलै ।
अहाँ देखिबो तँ बा कऽ । सब परमाना छुटि नापल ।

पार्वती अनधिसनभामु होइत जे कऽ कियौड़ी लऽ अनथनि । महादेवक सोझेंमे
ओकरा खोललनि तँ देखैत छथि, ओहिमे बन्द फलिंगक मुठमे दुधिक एकटा हनिपर
दुधनी संथल । ओ देखि पार्वती छकित पऽ गेली । ओ महादेवके कहलथिन धन छी
जहाँ हे महादेव जे कियौड़ीमे बन्द फलिंगक मुठमे आहर बाँटि देलिसे ।

एहि पीधिली लोककथाक तथपर्यंत ई अछि जे ज्ञापक जगदीश जीवित रहबाक
आधा आधा अर्थात् भोजन धिकैक जरूर उपलब्ध - सर्वसम्पन्न ईश्वर द्वारा कल
गेल अछि, से कही अथवा शक्ति द्वारा कल गेल अछि । शक्ति एतन साधनके विधि
प्राणी अपना-अपना रीतिरें बुझावनि हेतु उपलब्ध बना लैत अछि ।

मानव जीवनक विरलत सत्य धिकैक पुछ ओ मोहन । एहि हेतु लोकके सभ
प्रकारक कार्य-अपक्रम, सुकर्म-कुकर्म करऽ रहैत छैक । सलोक दिनक लोकनि हँस
तथ्यके विभिन्न रूपमे अभिव्यक्ति दैत रहला अछि । कभीकर चन्दाइ बर-बर कहैत छथि-

‘ऊपर धरन कलन भुमि धुपलह
नीक ऊँच बा जतम तल ।’
‘बढ़ा धरन धरन जल हिंस
केओ हाकिम केओ दास ।’
‘हुस बन्ना प्य सभ बन आबुल
केओ रहि रहित फलेश ।’

जठानल कारम जन हलचल
देखल नावा बेस’

एकटा गीतमे उदाहरणकय विचलक वर्णन करैत कहैत छथि -

उदाहरण दुखपारो हे किब विकल सकल संभारी ॥
छरबि महीपति पारब रक्षा कोटि कोटि विव मारी ।
स्थायी दास शत्रुसँ होइत जठानल दुखकारी ॥
सुकुरमाव बूढतात नूह राति दिवस रक्तकारी ।
अपन प्रभोजन बन संभोजन के कर ककर पुहारी ॥
धन किनु रहबि गृहस्थ जाल मन धिरस पुरुष उपकारी ।
विजयमल कर विजयमल हर चन्दमूड़ दुख दारी ॥

कलकलस सन निगुण बहक उपलक सल सोहो ईश्वरमे न्यूनतम याचनामे
‘भोजनके’ स्थान देने छथि; से उतवा, जतवामे अपने सकुटुब तथा अतिथि रूपमे आभल
सबु लोकनि भूखल रहि रहल -

सौंइ इतब दीजिए जमे कुदुम समाव ।

पै थो भूखा न रहूँ सभु न भूख जय ॥

मनुष्य जखने जन्म लैत अछि, तखने ओकर सबसँ पहिल अनुभूति भूखिक
होइत छैक । कोनो नजगत गिरु अन्य तलक सुरत पश्चात् चिचिआय लैत अछि ।
तखन ओकर भयक दूध, बकरीक दूध अथवा चिकित्सकक निर्देशानुसार आने कोनो
रहित पेश देल जाइत छैक । गिरु चितिया कऽ पनीहीन भनि-माया अथवा अलारक
आवश्यकताक अभिव्यक्ति करैत अछि । कहल जाइत छैक जे किनु कनने बन्नाके मायो
दूध नहि पियवैत छैक ।

जन्मक उपलिक चन्दाइमे प्रायैःजनिक लोकनि अनेक प्रकारक विद्वान
रहितकरैत करैत रहला अछि । ओ विद्वान सब कते दूर धरि संगत वा मान्य पऽ सकैत,
रहि पीधियसँ होइ एकटा भूत धारण स्थापित कयल जा सकैत अछि जे पनुष्यक कागदसँ
अदृश्य चण्डालक सम्भवको कालीक स्वरूप मेल होयतक अर्थात् जिबिअथवाक धनि क्रमशः
चण्डालक, शम्भालक एवं आक्यात्मक रूप धारण कयने होयतक, तँ निश्चय ओहिमे
भूखक अनुभूति एवं ओकर समर्थ उपपादनक भाव अवश्य निहित रहल होयतक ।
प्रायःक पहिल प्रयोजन निश्चय भूख-मोहनक अन्तश्चेतनाक अभिव्यक्ति छल होयतक
आ क्रमशः भूख जो भोजन सम्बन्धी शब्दावली आवश्यकतानुसार गढ़ाइत चल गेल होयत ।

भोजनक प्रकार-वैविध्य ओ तदर्थ उद्भूत शब्दावली निर्धार करैत अछि कोनो

जा ६३ सामान्य होइछ । एहि वक्य भोजनक अर्थक मान्यता, सहायक उपकरणसभ, विभिन्न कार्य-सहकार्य विभिन्न अवस्था भोजन पर्यायक प्रकार, अक्षर भन्दा, अन्य एवं भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक अनेक संज्ञासद एवं क्रियासद, शब्दक गुण-रूप इत्यदिभ अर्थ-व्यञ्जक शब्द सभ भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक सीमामे अर्बुत अछि ।

मैथिलीसहितल भाषाक सारथक नियम धिकैक । मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे सेहो ई विषय प्रष्टित होइत रहलैक अछि । भोजनक आधार मान्यताक उपलब्धता, अल्पलब्धता, बहुलब्धता, ऐतिहासिक घटनाक, भाषावैज्ञानिक परिवर्तन, विज्ञातोप सम्पर्क, दार्शनिक संक्रमण, रुचिपरिवर्तन इत्यादिक कारणे भोजन सम्बन्धी बहुतेक शब्द अतीतक विस्मृति-वर्तमे मिलीन भऽ गेल । बहुतेक शब्दक रूप ओ अर्थमे परिवर्तन भऽ गेल । वर्णान्तराकार इत्यादि प्रचलन साहित्यमे, विभिन्न प्रकारमे उल्लिखित भोजन सम्बन्धी शब्द संशय बहुतेक आब अर्थहीन वा अर्थव्यन्तर भऽ गेल । दोसर दिन भोजनसँ सम्बद्ध बहुतेक स्त्रीन शब्द सम्बद्ध प्रचलन भऽ गेल ।

सम्यकाल वा आधुनिक कालक मैथिली साहित्यमे भोजन सम्बन्धी ओहने शब्द समक प्रयोग संधारणत, देखल जाइत अछि जे साधारण प्रकृतिक अछि । सामान्य भोजन सामग्रीक जतिरिक्त मिष्ठान, पकवान, भाज-पात, वा-बिरण, फहन-पक इत्यादिक विशिष्ट भोजन-विन्यासक वर्णनमे विशेष प्रकारक भाष्य सम्बन्धीक शब्दावलीक सन्तति एवं आचारादि विषयक शब्दक प्रयोग देखल जाइत अछि । किन्तु ओहने समक पूर्वमे प्रयुक्त उपपान, संयोजन, एक विषयक विभिन्न कार्य-सहकार्य समक वर्णन मात्र; सेहो अथवा वर्णित देखल जाइत अछि । विशेषतः वर्णनक द्वि एवं त्रिविध भोजन- वर्णन आ चूड़ा । ताँक दही-बूझा सारदेन अछि वा चूड़ा-दही सनि का खायत अछि । सहित्यमे एकर बड़ चर्चा भेल । परन्तु चूड़ाक सही कौनक खान-जकान-जिवा इत्यादि, बचा-भाग तारब, भाइब, भूखब, कूटब, फटकब, चुनिक, जाइनि, ओक, चापडि, सदादि, उकसगि, उकसगिक कोष, मपाड, दगाडक नदी, ठकुर, सट्टा अथवा रुधरी दही बनदबाक टोर्क प्रक्रिया- एहि समक उल्लेख कहीं मा पवैत अछि । एहन शब्द सभ लोकमुखे भरि सौमिल रहैत अछि ।

फिट्ठर अन्नकें परस्पर फलक काकाक हेतु अथवा अन्नमे मिश्रित गर्दा इत्यादि अपपदार्थकें फलक करबाक हेतु एकटा समष्टल वृत्ताकार बरतिसकरणे मूष / डगरक प्रयोग होइछ । मूषक द्वारा अपपदार्थकें फलक कऽ अन्न परोक्ष करबाक क्रियाकें साधारणतः फटकब कहल जाइत । किन्तु फटकब हें एकटा क्रिया मात्र फिक । उस्तुतः मूषकें हुनु हायसँ एकडि बापो-दोहेना, जानी-पानी, जगर-नीची, विषक-वृत्ताकार गति दैत संघालित कयल जाइछ । सभ गतिक पिन्न-पिन्न क्रियायक नाम अछि हिलोरब, ओतब, डोकब, डगरक/डगायब/डगरक/डगरब/डगरब, नितबब, पैचब, फटकब,

इतकब इत्यादि । एहि क्रियाक परिणामे पिन्न-पिन्न प्रकारक होइछ । परन्तु एहन-एहन शब्द सब साहित्यमे वर्णित भेटि जाब सँ सम्भव अछि ।

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे एहन-एहन कतोक सभ परिभाषिक प्रकृतिक शब्द अछि जे दैनन्दिन जीवनमे लोकमुखीद्वारा प्रयुक्त भऽ लोकभाषिक शब्दावलीक सम्बन्धमे रहि जाइत अछि । शब्दावलीमे एहन कतोक लोकभाषिक शब्दावली स्थान प्रयुक्तमे वर्णित रहि जाइत अछि । कोषमे यदि स्थान प्रकृतिक अछि तँ वैकल्पिक रूप शब्दकें अक्षरमे देल जाइछ । कतोक अनेकाधी शब्दमे भोजन-सम्बन्धी अर्थकें छोडि देल जाइछ । अनेक भोजन सम्बन्धी शब्दक अर्थ अशुद्ध वऽ देल जाइत अछि ।

मैथिलीमे नवोन्नत प्रकाशित शब्दकोष अछि प.गोविन्दशा द्वारा सम्पादित कल्याणी कोश (१९९९) जकरा ए मैथिली इंगलिश डिक्शनरी सेहो कहल गेल अछि, कारण एहिमे अनेकोमे सेहो अर्थ देल गेल अछि । मैथिली भाषाक अद्यापि प्रकाशित एकल शब्दकोषमे ई एकमे इतिहास एवं मानक मानल जाइत अछि । मैथिलीकोष सभमे मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक स्थितिक सम्बन्धमे ऊपर जे धारणा व्यक्त कयल गेल अछि तकर समुचित कल्याणी कोशक किछु उदाहरण प्रस्तुत कयल जा सकैत अछि ।

कल्याणी कोश (क.को.)मे कचुरी शब्दक एकटा अर्थ- एक मास कहल गेल अछि छप दोसा अर्थ सभ कचौड़ी देखबाक निर्देश अछि । कचौड़ीक अर्थ कहल गेल अछि- पोच आ फुटि एए बनाओल पूरी, बेसनमे काँच तरकारी सनि बनाओल बड़ी । परन्तु हुन अर्थ अशुद्ध । कचौड़ी वास्तवमे पेन वऽ कऽ सान्त चिककसकेँ पी अथवा बनयति तेलमे ज्वाल अचन छोटे-छोटे फूलत-फूलत मोहारोकें कहल जाइत छैक । कचुरी/कचुरी सम्बन्धितः पैसनमे पिण्ड/पिण्ड/पेवज पिण्ड/ काँच पिण्ड जो पोच जिन कऽ तेलमे ज्वाले कऽ बनाओल जाइत जकरा पिण्ड/पिण्ड/पिण्ड/पिण्ड सेहो कहल जाइछ । छलपटक अर्थ होइत अछि जेवनपासमे मूखसँ धमल सटकल पेट जे प्रायः खाली पेटसँ बनल हुनि पडैछ । परन्तु क.को.मे एकर अर्थ खलपटक कहल गेल अछि । खलपटक अर्थ होइछ केश उड़ल जाबि अथवा एहन भावना जकरा चनैल कहल जाइछ ।

मैथिलीक एकटा नव प्रकाशित शब्द अछि- बरिक् । क.को.मे एकर अर्थ देल गेल अछि- मुखिया, चरक मुखिया, घोखे परसबाक व्यवस्था कथनिहार । स्वतन्त्र रूपमे मुखिया वा चरक मुखिया अर्थमे एकर प्रयोग सुनल नहि जाइछ । अथवा एकटा सामाजिक शब्दक उत्तर फलक रूपमे "बारिक" प्रयुक्त होइछ जे भिन्न धारणीक । बाइरो व्यक्तिक दृष्टिमे धारणीक कोरो पुरुष सदस्य धारणीक होइत छैक । दोसरो अर्थ प्रमाह अछि । भोज कर्तव्यक घोखी कहल जाइछ । वास्तवमे भोज-भातमे विभिन्न भाज्य समष्टी पौडिमे भुजि-भुजि कऽ परसनिहारकें बारिक कहल जाइछ । सजबी शब्दक अर्थ कोषमे देल अछि- विशेष विन्यासमे पौरन शूद्र दूधक ओस (दही) । दही पौरामे

कांयां स्त्राय विन्यासक आवश्यकता नहि होइत छैक । ओहिमे जेकरा भास ओ दूधक ऊपरतक भास देखल जाइत जे कोनो अनुपयोगी नहि होइत छैक, से गूढ होइत वा दुर्दोष । एहो भास दही वा कलहा दहीमे पिन्ना सुधिल करबाक हेतु गूढ दूधक दहीमे सजबी दही कहल जाइत ।

अनकोट अर्थात् अन्यमे लगनिहार कोड़ा समक सम्बन्धमे क.को. कोटन घाण्ड रखैत अछि सेहो देखल जा सकैत । एकटा कोड़ा होइत छैक घुन जे काटने लागैत छैक । अतः क.को. टोके कहने अछि- काटने लगनिहार एकटा छोट कोड़ा । अन्यमे लगनिहार कोड़ाक रूपमे सूड़ा/सुँड़ा प्रसिद्ध अछि । क.को. कहैत अछि- चाउमे लगनिहार एकटा कोड़ा । एकटा ओर अन्यकोट कोड़ाक अर्थ क.को. काटने रेल अछि- कलहा आ अन्यमे लगनिहार एक कोड़ा, सुँड़ा, घुन । घुन आ सुँड़ाक अर्थ अपना-अपना स्थानमे टोके अछि । परन्तु फोड़ाकेँ 'काट ओ अन्य-दुनुमे लगनिहार कोड़ा' तथा अकर धर्यो सुँड़ा एवं घुन कहि कऽ अर्थकेँ और अस्पष्ट एवं भ्रान्तजनक काट रेल गेल अछि तँ फोड़ा तँ अपने अर्थहोम पर गेल । अनकोट अनेक प्रकारक होइत । एकटा होइत छिकनो बकर तल्लेख वा को. मे नहि जाइ । ई लगपन अछि-कोन गोलोपीटर नाम, कटपीटर रोक गोलीन मुहपला कीट छिक जे काटने फोड़ा छैक । ई नाउकेँ अछि रहि कऽ ओकरा छिकन बना दैत अछि । तँ एकरा घनपन्ना सुँड़ा कहल जाइत । एकर कोड़ा होइत सूड़ा/सुँड़ा जे काटी रोक लगपक चारि पिन्नेकोट नाम ओ सुँद सुल राखत । ई चाउ, गहू, सकेमे लागैत अछि । अन्यक भितरका भासकेँ स्त्राय फोड़ल बना दैत अछि । एकटा तेसर कोड़ा होइत बेइबा । कोषमे एकरा नाम रहि अछि । ई गेल रोक तीन-चारकोन गोलोपीटर तथाक गोल आकारक एवं फोड़ एक कोड़ा होइत जे दलहनमे लागैत अछि । ई अन्यमे घुन का ओकरा घोड़मे जे कऽ भितरका ओरकेँ स्त्रा जाइत अछि । फोड़ा एक सेटोपीटर नाम, फोड़युक्त उच्च रोक फोड़ कोटिक कोड़ा होइत अछि जे धानमे लागैत जाइत अछि । ओ धानक पुन्ना-आवाककेँ 'फोड़ का भितरका चाउरकेँ स्त्रा जाइत, तँ एकर नाम फोड़ा रहि गेलैक । घुन चाउमे जल्ला लागैत छैक । ओहो सँग उच्च वर्गक लगपन एक सेटोपीटर नाम पिन्नेकोट फोड़ जाइत छैक जकरा पेटाको कहल जाइत । क.को. मे ई शब्द तँ अछि किन्तु अनकोट कल अर्थ नहि अछि । ओहि ठाम पेटाकोक अर्थ कहल गेल अछि- कटहरक पेटमे धान फोड़ा घन वस्तु । वास्तवमे कटहरक क.को.ओकर पेटमे ओहो सँग सटल गुराइन बेरग ओरकेँ पेटाको कहल जाइत छैक जे पेटक सल हानिकारक होइत तँ खपका कल ओहो सँग ओकरा निष्कासि देल जाइत । कन्तु कोआ कल जाहि फोड़ कल वस्तु सबसँ आवृत होइत तकरा कपरी कहल जाइत । क.को. कलकेँ अर्थ कहैत अछि- कटहर फलक छोड़बा जे अस्पष्ट । कपरी कटहरक गोड़मे कोआकेँ आवृत कयने रहैत अछि । कपरी दु प्रकारक होइत । एकटा तँ कोआमे एकाका पेल मरल । दुधमे पिन्ना रहैत

तँ कलने काल लोक इहो खा गेल कहैत । ओकर बादक जे खपन वस्तु-समूह रूपमे कपरी होइत से अनुपयोगी होइत । कटहर आ कपरीपर एकटा लोककोक्तियो अछि-

आदरे कनिचो कटहरा नहि जाधि,

कपरी जाटऽ वस्तुआइ जाधि ।

ऐहिमे ध्वन्युकरण मूलक अथवा कही, ध्वन्युकरणात्मक शब्दक बाहुल्य अछि जे साधारणतः क्रिया-विशेषणक भास कहैत अछि, तथापि अनेक अप विशेषण, भावनाक बल एवं वाग्भातक रूपमे सेहो अर्थयानु बनि जाइत अछि । कतेक एहन शब्द क्रियाविशेषण रूपमे रहैत अछि ।

ध्वन्युकरणात्मक शब्द द्विर्गोणक एवं त्रिर्गोणक होइत अछि । एहि दुनूक दुइ वर्ग अछि । पहिल वर्ग ओहन ध्वन्युकरणात्मक शब्दक अछि जे एकाक रूपमे अपहोम रहैत अछि, परन्तु पुनरावृत्ति पेलबाक धर्योक पर जाइत अछि । एहन कतेक शब्द ध्वन्यु शब्दकेँ प्रकृति, स्थान अथवा क्रिया-वैशिष्ट्यकेँ सूचित करैत अछि । क.को.मे एहि कोटिक कुड़कुड़, गुनगुन, मुहमुह, मुड़मुड़, पखड़-पखड़ सन शब्द तँ स्थान पौने अछि परन्तु हड़हड़ (तौल/नोम/पनि/नोम), छिटछिट, चिमचिम, (तौल-विकृति-सूचक छिटछिटान, चिमचिमान), कुचुर-कुचुर, कुटुर-मुटुर, गजर-गजर, पसर-पसर, मुड़-मुड़, घुस-घुस, घुसर-घुसर, मुह-मुह, मुचुर-मुचुर आदि पाँडे देखल जाइत ।

दोसर वर्ग ओहन ध्वन्युकरणात्मक शब्दक अछि जे क्रियाक आकस्मिकता, निरन्तरता तथा दृढतायुक्त निरन्तरताक स्थिति सूचित करैत अछि । ई एकल एवं पुनरावृत्ति, तथाक रूपमे अर्थयानु रहैत अछि । एकल रूपक उदाहरण 'सँ' विभक्ति अथवा 'दऽ' अक्षय लगभग होइत अछि । पुनरावृत्ति पेलबाक 'सँ' अथवा 'दऽ' रहि लागैत अछि । ध्वन्यु शब्दकेँ क्रिया स्थापन, पोषण, मोड़न, कोटन, फोड़न इत्यादि क्रियाक संग एहि वर्गक ध्वन्युकरणात्मक क्रिया वैशिष्ट्य सूचक घटघट/घटाघट शब्द तँ अछि । परन्तु एकर मूल शब्दक शब्द 'घट दऽ' रहैत रहैत अछि । एकर विस्तारित त्रिर्गोणक रूप घटाक दऽ वा घटाक-घटाक रूप सेहो रहि देल गेल अछि । इन परार्थ पीबक/घोड़बाक वैशिष्ट्य सूचक शब्द घटघट, घटाघट तँ अछि किन्तु घटघट/दऽ, घटाकमे/दऽ, घटाक-घटाक रहि रहैत ।

ध्वन्यु शब्दकेँ ध्वन्युकरणात्मक रहने अगुदीत अन्य शब्द सब सेहो अछि, यथा- गघट/सँ, गघण, गघण, गघाक दऽ/सँ, गघाक-गघाक, घुटदऽ/सँ, घुटघुट, घुटक दऽ/सँ, घुटक-घुटक, टप दऽ/सँ, टपटप, टपाटप, टपाक दऽ/सँ, टपाक-टपाक, टप दऽ/सँ, टपटप, लप दऽ/सँ, लपलप, लपाटप, लपाकदऽ/सँ, लपाक-लपाक इत्यादि ।

भोजनमें सम्बद्ध विशेष अर्थक व्यंजन बहुशः सामयिक शब्द सब कल्याणी कांषमे स्थान पथशर्भे वर्तित रहि गेल अछि, वंचा- कओर-घोट, खपड़भुम्ब, खपड़मुख, गुड़चौरी, गुड़भट्टा, विचक, चिकनफट, चमूटा (कनो-चूटक मिश्रण), जलजोग, भलकपहन, तेलचटका, तेलपक (खक), इतिघोटना, इतिभिटी, दहिबाड़ा, दुधमूह (पुलक बन्धनक परचाक एकटा कर्ष), नौनपनिचो, पनचकका, पेटकटारि (-लागाव), पेटचालक, पेटपकौषा, भलगेटिभा, भरिपेटा (-उलटै), मैडमिन्ना, मैडमिन्ना, भरिचदाना, रोडिपकका इत्यादि ।

कल्याणीक्षोषमे भोजन सब नौकक महत्त्वपूर्ण पक्षमें सम्बद्ध बहुशः उचलित महत्त्वपूर्ण शब्द, शब्दक वैकल्पिक रूप अथवा अन्य अनुवर्तन रहि गेल अछि । दुनैमें अ में क धर्ण धरिक चालिस-पैतालिक छोट भोजन सम्बन्धी शब्द प्रसंगक्रमे अन्यत्र (अक्षर, डा. योगानन्दका चन्द्र पौषलोक सामयिक भारतीय व्यवसायक व्यवस्थामे अचले सम्बन्धित) उद्धृत कयल गेल अछि । एहि ठामे किछु आरौ शब्द सब देखल जा सकैत अछि -

पेलाइन- काँच जरियो-रैची मसल्ला बेगो खुरिआयक- दूध फटवाक पूर्व रूपमें खुरी
 भदि गेलसँ उत्पन्न होत स्वाद सन अक्षुति बनन
 कुम्बा- छोट पोटिक पात्र खोपनी- कोठो वा भीरपे बनल छोट तल्ल
 कुम्कुम- चिककस इत्यारिक घंभी दिन खोर- पैर तैल
 रहलापर उत्पन्न विकृति खौरझाइन }- पेयी चीनका
 कुम्कुमाइन- कुम्कुम होयवाक गन्ध-स्वाद खौरछाह
 कुम्कुमावक- कुम्कुम होयव गगरी- एक प्रकारक माछ
 कुड़कुड़ावक- दुधको कनेक गरम कच गजपुरना- मदन पुरेन
 कोक- उकस्यारिक चेटक बीर्या बनल छोट गद }-दुबडि कयल भोजनविषयक
 सांघली मरह } करामे उपपन्न अमुक
 छटहुकस- फलक किंचित् अन्नत स्वाद गन्धकाबुन- गन्धको कोड़ी सन गन्ध,
 खबीनी- चच्चाकेँ अल्प भोजन रूपमें देल विकृतिगन्ध गन्ध, सटहन
 गेल साध-कस्तु बरम्भ- नव विकसित प्रकारक धान
 खलपट- भूखसँ सटकल पेट गमकनकक- अतिपक्व भट्ठै, नूट तथा
 खाड- खासुर महुअकेँ मर औषधमे भूख
 खाटी- अर्धपिथण रदित, गुड पलिआवन- अर्धचन्द्रावकाल अन्नकेँ
 खिन्जा- अन्नको (फल, तरकारी आदि) मुहमे लपेटत रहब
 खिरखुऔनी- महुअक पाय- काँच(विनु उँटल) दूध विशेषतः

वर्तित दूधक मलहात जपल मेनु मोडै- धँटल-धँटल अन्न; गहून औ आदि
 (गणकच्छ- गण काठल) अन्न; रन्नी अन्नक मिश्रण
 खाली- शाय भट्ठैकेँ दुदकाकाल धनक गौला- अँधुरल गरियर वा ताइक फलक
 दूधक धमकेँ मोड़ी लोकक(विशेष मोषा) मोतरक कांमल इन्कर गुदरा
 कऽ बच्चाक) मुँहमे देब मोलबनी- चातरक खुपसोकेँ चोन-इदि
 गिलसी- छोट गिलास रऽ कऽ रन्तल भालक गोलो; रिताको
 गुड़चौरी- फुलाकोत जलवा चोर एवं गुड़क गौरवाह- गिलम्बसँ पचनकार छाट पण्य
 मिश्रण बटरा- आवस्यकतासँ बेसी सौझल; सीध
 गुड़काज- गुड़मे रन्तल लौर कऽ बनाओल मिश्रण
 गुड़को- गुड़ मिश्रण कऽ बनल (पकमान चरुआर }-घरक काव-घंघा धानस-पात
 आदि) चरुआर }आदि करब
 गुड़ोँत- दुरगमनिये कनियोकेँ गुड़ बुरमा- गुदमा शायक लता फल
 सुखस्यक विधि हुलब- हुलमे होम वस्तुक गलि कऽ मोलब
 गुड़ब- एक प्रकारक लता-फल छैन- पैल
 गुकटो- योट रोटी पैलिया }- छोट पैल, बमनी
 गुयब- काँच तँडल फल-आम, कटहर, घटहर, कँरा, अनारंदा, आदिक घनी }
 छकल-पाकल फलब, प्रेणार्थक-गुमक्य घनी }
 गुमाइन- अन्न, चिककस आदिक गुमबससँ पोद- फलक गुच्छ
 उत्पन्न गन्ध-स्वाद धीर- कँराक इत्या समक संलग्न सफू,
 गुल्लो- सलु, पैदा आदिकेँ छानिमे बीजवाँ गहने तनल कोनहु फलक गुच्छ
 विनु बीजवाँ कोनो बनल आन, दालि, चाकी- चाक सगक भिरादा, अन्धिम
 छिन्चाहि, खोर रन्तवाने गोलो बनि कोहनिये तँडल भिरादा
 गेल उमिझल सन अन्न खलओँस- चालकाक बाद बचल अपशिष्ट
 गुलाबसाम- अन्नक एकटा प्रविष्ट प्रपद चलना- अन्न चालवाक पैघ चलनि
 गुड़ोँदोड़ी- अत्यन्त छोट छोट गुल्लो सन छलनिचो- चलनि, चलनो
 गुनामुना- लहुरक आकारक पकमान वें चाकी- जौत बेधकधाक लोल दौड़ाक
 दुरगमनक अवसरपर मिललल जाइक, आकारक पोटिक आवाम
 छेकक फट्ठे
 गेहरी- एक प्रकारक सग, चतरी गेहरी
 गेहरी- एक प्रकारक सग, चतरी गेहरी

कनेक छाड़चला चहटपर बस्तु
जना-पूजा, कचुरी, पुष्पी आदि
चिनुआर- मनसापसरे धानस लेल बगजोल
पोटिक ठैव खुतर
खोड़वन- चौतवद गवनि, कादस प्रसक्त
शुक्तापसक्त कतुयोकेँ मेन्तिह प्रमिह
पावनि
चौरतु- चोटरक चिक्कस
टोसक- भक्खनकेँ आँचपर गधम कउ ची
बनाचव
दुक्क- रोटिक चारिम खण्ड
दूक- खण्ड, सुपारीक चारिम खण्ड
- (एक सुपारी कय दूक?)
- चारि दूक ।
- हमरा तोर कय ओरिह?
- चारि ओरिह ।)
ठिमिषा- छोटे पैल, बसनी
दूआ-ठक्का- तालये ने कन ने बेरो
इहक- फल(लताम)क भक्कवाक पुर्वक
अवमस, एककायोग्य, पूर्ण कुआला
उक- अन्न रखवाक हेतु बौकक बतोर
बनल नगहर कोले
उकमी- छोटे हाकन
उकिया- चाकर भुङकला पधिया, हाको
हाकन- तौलाक पुँड डोपवाक लेल बनल
पाटि या काटक विरांग आकारक
उपकरण, इकेन
नक्कर- दहीकेँ घोरि कउ बनाओल जीरसी
बौकल नोनगर शर्वत, तह

इरकाइन- दिनकारिक बिनयाँबल
रम(सकु)क वासनमे रखल खाद्य
चतुमे सेनबादु जेवनन कय वा इवत
किरनी- छोटे स्महको, इकठ पेटिक पार
फुफटिआइन- गृहहोश कालमे उत्पन्न कय
या स्वाद
फोकडाइन- चिनुआरले दूधक चिक्कलेनय
कय वा स्वाद
बंगला- गहदिया(दलहन)
बसिआइन- पंडित बल्लुक बाँधे पैलपर
उत्पन्न मय वा स्वाद
बानिक- भोक्मे खाद्य खण्डो परमिह
बेदवा- अन्नकोट, अन्नमे लागप्रवाल एक
प्रकारके कोइ
महाज- मल दूधक मही
महाली- ताड़ी रखकक बदका पैला
मही- थोर
यो- चिक्कस कयकमे मिलाओल खाकाल
यो; मेर; चुड़ण देल जायकला पोरिक
इल्लुक छिक्क
र/उ- लिक्कियामे पयल जायकला पुहुतु
बनओल मसल्ल, पारसद
लट्टा- कुक्षिल मोकुकेँ भूजल तोसी संग
कूटि कउ बनओल खाद्य, इण्डा
रहो- दलियांटेन
रिक्कशी- बच्चा सरकेँ भिनसामे
खुजकालेले अन्न माथमे गडल भत,
रिक्का
रिक्का- खूँ पैल पैल
रोटियाहा- एकदस्तोअ दिन रोये मात्र खाद्य

समयक परिवर्तनक संग रुचि, व्यवहार, उपलब्धता आदिमे निरंतर परिवर्तन कारणे
अन्य एवम कसौ मैथिलीमे प्रभावित भऽ रहल अछि । मैथिलीभाषी बहुते अभिन्न अभिन्नता
अन्य अभिन्नतेँ विविध वर्गक जनसंख्याक संगे राहरी हिन्दूक शब्दावली सब फैशनक
रूपमे प्रयोग करऽ लगलाह अछि जकर कुछभरमे गाम-देहातमे काज-परजन, भोजन-पात,
क-बोरिलोक अगल-स्वगतमे नव पीढ़ी द्वारा भोजन सम्बन्धी अपन शब्दावलीक स्थानमे
खाद्य (भोजन), चावल (भात), इलना/इलना (चर्चरी), बाल (धर/धारी) नासल
(कलखे/बलबो/बलधमन/बलपान/पनिगिआइ), धतल (पात), कैगल (गाँव), धिण्डो
(रामदेहुनी/खजुरी), रसोह (धानस), रसोइघर (भनसाघर), रसोइया (भनसाँया), सक्की
(जकासी/लोमन), ससाद (इक्का/झकली) इत्यादिक प्रयोग कयल जाय लागल अछि ।

यै अन्यप्रादेशिक सम्बन्ध-सम्पर्कक कारणे अनेक नव मधुर-मिठइ- कलाकन्द,
समयम, रमकदम, रसधताइ, मनपापही, लबंगलत, लालमोहन इत्यादि परम्परागत
खाद्य-मुहककेँ पसण्डे अपन अवशिष्टार्य स्थान बना लेलक अछि । तँ दोसर दिस वैज्ञानिक
अधिकार, नव-नव खाद्य-उत्पाद, वैश्वीकरण, बाजारवादक संगहि अंग्रेजीक प्रबल प्रभाव
वृद्धिक कारणे आधुनिक धरातिय जीवन-पद्धतिक अनुगमन करैत मैथिली-बीघन-
पद्धतिमे-खान कउ नगरीय-महानगरीय मैथिल जीवन-पद्धतिमे मौजन-सम्बन्धी अंग्रेजी
शब्द अगल पैल वा रहल अछि । एकर किछु उदाहरण देखल जा सकैत अछि- अपसेट /
आपसेट / ओमलेट, आइस्क्रीम, इमटोप / स्टोप / स्टोव, कटलेट, कप, किचन,
कूकर, केक, कोल्डाइक, कोफी/काफी, ब्रेड, गलास/गिलास/ग्लास, मेसिंटिंग, गैस,
गैस-बुल्का, गैस मिलिंडा, जॉय, जग, जूस, टप, टमाटर, टिफिन, टिफिन-केरियर,
टिफिन-बक्स, टी, टी-फटी, टी-पॉट, टीफी/टीफी, डाइनिंग-टेबुल, टोस्ट, डाइनिंग
हॉल, बालइर (ई हाण्ड नञ राव तनगण्डि भोक् सेल रुदु भऽ गेल अछि), ट्रिंक, बरमस,
फाटी/फाटी, पिकनिक, पिलेट/पलेट/प्लेट, प्रेस-कूकर, फास्ट फूड, फार्मिंटिंग, फ्राइ,
फ्रोज, बगल्लो/बाल्लो, विस्कुट, नूफे, ब्रेक फास्ट, ग्रेह, पग, पिक्सर, पीट, पैग, शरान,
सिक्काइन/सिक्काइंड तेल, लंच, सेवनडूम/सेवनडूम, मैडमिय, होटल, होटलबाजी इत्यादि ।
एकर समक लसेव गामो-देहात धरि परसि रहल अछि ।

जेन पूर्वमे प्रचलित बहुते अंग्रेजी शब्द लट्टव वा लक्ष्म रूपमे मैथिली
शब्दकोषमे स्वीकार्य भऽ गेल अछि, लहिना कालक्रमे इहे शब्द सब मैथिली क्षेत्रमे अपन
स्थान बनाइये लेत से किछु पर्यायवाची शब्दभावक विचारातमे आ किछु मैथिली शब्दकेँ
पकिया कऽ ।

निर नव-नव उपभोगक सम्झौक प्रचार, नव उपकरण, अन्नक नव-नव
प्रकारमे मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्द सब विलोपित होइत जा रहल अछि । स्टील,
एलस्टिक, फाइबर इत्यादिक प्रचलनमे परम्पराक उपकरण समक उपयोगिता समाप्त भेल

जा रहल अछि । धानक आम्परीक प्रकृति समाप्त जकाँ अछि । सान, काटन, कोटो, भीम, गददरि, गहरो इत्यादिक तँ कपपौखोकेँ घराने दुर्लभ । घनकुट्टी-बुडकुट्टी घोल सभ देकी, ठकुरि, समाट, ठकुरकेँ सभाज कऽ देलक । आँटचक्को आ मसालाचक्को तँ जौत, चकरो, लोडी-मिर्चीट इत्यादिकेँ अग्रजकेँ बना देलकैक अछि । बेतो विश्वस्तार्थ परिवर्तनक कारण आ स्वरूपक विकरण देब अनवश्यक ।

आवश्यकता अछि भोजन सम्बन्धी सामान्य ओ परिभाषिक प्रकृतिक लोकमूर्तिक शब्दावलीकेँ सशारीक समेटि लेल जाय । ई भाव लोक-समाज जाय अनुसन्धान करबने अधिकारि रखनिहारसँ सम्भव ।

संक्षिप्त नारायण मिथिला विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर मैथिली विभागमे अपन अध्यापन-कालमे मैथिलीक लोकभाषिक शब्दावली विषयक अनुसन्धानक योजना बनय ओकर कार्यान्वयनक दिशामे प्रयासरत भेल छलहुँ । एहि विषयक वैश्वदेव लोकभाषिक शब्दक आठ गोट विवरण-वर्ण बनाय ओकर विस्तृत प्राप्ति तैयार कयने छलहुँ । ओहिमे एकटा विषय मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली सेहो छल ।

भोजन तँ आवासलुद्ध स्रो-पुरुष सब कौत अछि । जन्तु भोजन-पचन भोजनार्थ खाए-सामग्री प्रस्तुत होयवामे पूर्व भोजन सम्बन्धी सभसँ सम्पन्न संश्लेष, परिश्रम, उपयोग, प्रयोग एवं साधनो कार्य-व्यापार पहिलानिते कहैत अछि । अतः मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक मात्रि-अस्ती इतिहास प्रायक सामाजिक इतिहास ओ अर्थिक प्रमाण मिथिलाक महिले लोकनि भऽ सकैत छथि, यही विरोधः मिथिलाक राम-चक्र जोवरसँ पूर्णतः सम्पन्न । मिथिलाक जन-गुण अपीलि छी, सुशील छी, पुरुषक निर्वाह इतिहास सम्पन्न छथि । अतः ओहने महिला एवंपिका मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली विषयपर शोधकार्य कऽ सकैत छलीह जे नै केवल इतिहास ओ अर्थिक इतिहास अपितु सभसँ मिथिलाक ग्राम परिवारा एवं ओकर आभ्यन्तर जीवनचर्यासँ सुसम्पन्न एवं सुपरिचित होथि ।

एहने स्थितिमे श्रीमती ललिताजा श्री-एच.डी. ठापाय हेतु अनुसन्धान कार्यालय ओ शोधसमिति लिखधर्म इनामसँ योग-निर्देशन देलनि । दिनका सभसँ अनेक विषय छलनि जाहिमे एकटा विषय मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली सेहो छलनि । इन्कर हाईक इच्छा छल जे एहि विषयक हेतु ई उपयुक्त कार्यिका भऽ सकैत छथि । किन्तु हम अपन विचार धोपऽ नहि चलाई छलियनि । ई सत्य एहि विषयक प्रति अपन उत्सुकता देखबैत कहलनि जे— श्रीमान् ! भोजन सम्बन्धी शब्दावली कहन होयतैक ?

हम कहलियनि जे— ओना मिथिलाक इन्तेक समयमे श्री-बुद्ध होइत छैक । बुद्धक रूपमे अनेक नाम जे एक नाममे बसैत अछि, ई श्री रूपमे कोनो नाम अनेक रूपमे

जोबैत अछि । इतिहास प्रमाण बाधमे एकदि सभ अनेक गोटो जोबैत अछि । १- चायियो सभसँ नीक जकाँ लोक-समयक कयने भोजन सम्बन्धी शब्दावलीपर बहुत काज सकारल जा सकैछ, तथापि—

तथापि सम्पन्न निवृत्त शरत्कालपर जाय शोध-कार्यमे जे व्यावहारिक कसिस्ता भऽ सकैत छैक ताहिसेँ श्रवणत करौलियनि । ललिताजा एहिमे हठात्मक नहि भेलीह, अपितु एहि विषयपर अनुसन्धानक हेतु अपिकेँ ठानुक भऽ छललीह । तिनक विषयक शोधक छलनि 'मैथिली साहित्य ओ भाषामे प्रयुक्त भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक सांख्यिक अन्वयन' ।

स्वोपेक्षा अत्यन्त क्रम ओ मनोयोग पूर्वक अपन शोधकार्य सम्पन्न कथलनि तथा ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय द्वारा दिनका श्री-एच.डी. ठापाय प्रधान कयल छलनि । मैथिलीक लोकभाषिक शब्दावली विषयक शोध कार्यमे तखन ई द्वितीय शोधप्रबन्ध छल ।

हमए निर्देशनमे मैथिलीक लोकभाषिक शब्दावलीसँ सम्बद्ध जाहि आठ गोट विषयसँ विभिन्न अनुसन्धान द्वारा शोधकार्य कयल जाय लागल छल, ताहिमे तिनिसँ गोट अनुसन्धान शोधकार्य सम्पन्न कऽ शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत कऽ सकलाह । ओहिमेसँ दूटा शोध-प्रबन्ध हालमे प्रकाशित भऽ चुकल अछि । हमरा एहि कतरसँ अत्यन्त सन्तोष ओ आह्लाद भऽ रहल अछि जे हमए द्वारा निर्दिष्ट तेसरौ शोध-प्रबन्ध ग्रन्थकारमे प्रकाशित भऽ कऽ किछु समाजक सपथ आबि रहल अछि ।

हम ललिताजाक जे मूल शोध-प्रबन्ध छलनि ताहिमे प्रकाशनसँ पूर्व कुराः परिवर्तन कयल गेल अछि । एहि ओहिना ठट्टासँ सबकेँ यदि अनेक नाम हटा देल गेल, ई अनेक नव साधनी एवं शब्दावली जोड़ल गेल अछि । मूल शोध-प्रबन्धमे जे कोनो कयो कयने दुष्टिमे आबि सकलनि तकर सुनिचित सम्पादन कऽ देल गेल अछि । यदि भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे कयल जाय तँ कहि सकैछ छी जे ऐतिहासिक भोजन सम्बन्धी पूर्व शोधप्रबन्ध रूपे अनेक पुनः नैक जकाँ रिगोर्डि-ओलि, दफरि-मिर्चीट, चिचि-फटकि, बोलि-बनाय परिशोधित रूपमे प्रस्तुत कयल दिशामे कचेष्ट रहलीह अछि । अतः कहि सकैत छी जे वर्तमान स्वरूपमे प्रस्तुत ग्रन्थ मूल धीमिसक प्रतिवृत्ति नहि, अपितु ओहिपर कायल तथ्याति सर्वथा अभिमत ग्रन्थ थिक अकरा उचित अभिनव अभिधान देल गेल अछि— मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली ।

एहि ग्रन्थमे आरम्भमे विषय-प्रवेश ओ अन्तमे इत्यहासक आतिथिक बारड गोट अप्पस रहल गेल अछि । अन्तमेक प्रथम तीन अध्यायमे क्रमशः भारतीय भोजनक सामान्य, मैथिल भोजनक सामान्य एवं मैथिल खाना प्रथा ओ इत्यादि परिकल्पनापर विचार

[illegible][illegible]

संकेत सूची

अ	आर्चो
अं	अक्षरंजो
कि	क्रिया
प्रि	विभाग पीजन्त लाइफ ग्रियर्सन
वि	जिना
दे	देशो
पु	पुष्ट
फा	फारमो
फाय्ले	३ फारमोन आफि ६ पैयिलो मैवेज - डा. सुमदत्त
मुक	एन एकाउन्ट अफ द डिस्ट्रिक्ट अफ यूनिफ इन् 1809-10. आमिस बुकनन
पि. पा. का.	पिघिल्ल अफ कांथ-दोन्गभुडा
पे.	पैयिली
स	संस्कृत, संपादक, संस्कृत
हि.	हिन्दी
.	परिकल्पित गद्य

विषय प्रवेश

शब्द कोशों में भाषाक आचार होइत लैक । ई भाषाक एकाई धिक एकरे
 सङ्गमें उदाहरण पार्श्ववर्तित न होइतक रिवाज होइत लैक । शब्द आपष्टिक
 आधारपर कानों भाषाक समृद्धिके आँकल जा सकैत

कान पाठक हन्त वृत्तय आका जन्मस्थ पौर्णमास आथवा धार्मिक
नर नक्षत्रय पंचमण नच नरुत धार्मिक हन्त निम्न भाषा धार्मिक धर्म्याक
विलन नच अन्य अनक क्षण धार्मिक शब्द मानच प्रमाणित नाइत रहैत हैक

[illegible][illegible][illegible]

मैथिल भोजनक परम्परा

निम्नलिखित माध्यमों में से किसी एक में निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

प्रेमिलन प्रमाण प्रमाणिक अंतर आ सदनिक विज्ञापन महत्त्व मॉडल विधिबलाक

[illegible]

“सिंहनाथ धर्मशाला नाम संन्यास आश्रम स्थापक श्रीमान्” एवम् अत्र गणना केवल
रहना अर्थात् “द्वय आ योग” के अन्तर्गत गणना के अन्तर्गत “सुख भव” अर्थात् “सुख भव”

एतत् तत्र 'समान्यतया तौ नैव प्रोक्तं कर्मबद्धं परिपाद्यं अस्ति ।

[illegible][illegible]

प्रथम विधान आ विविध प्रकार के पक्षपात में प्रत्यक्ष विचार
अथवा मध्या गृहण करने बहुत रहने आते हैं। इससे एक प्रकार के पक्षपात
एक प्रकार के विचारों आदि विचारों में आने से एक प्रकार के विचारों
विचारों के कारण यह विचारों आदि विचारों में आने से एक प्रकार के विचारों
एक प्रकार के विचारों आदि विचारों में आने से एक प्रकार के विचारों

विश्वनाथ साहू परम्परागत शैक्षणिक नज़र से अत्यंत उच्च स्तर पर

[illegible]

पिथिलाक छपंशम्बीच काङ्गपयस मैथिल भाजन

[illegible][illegible][illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमो गुरुभ्यो कृष्ण कौटिल्यो कौटिल्यो प्रयाग भाग्य

गृहशाला पाठवि शैक्षणिक शालाक संक्रान्तिक यत्न दिन सन् अन्त जाइछ । एहि पाठानिक अवसरमा बालि मास छाडी आ शिवपूजा खुरबाक विधान अछि । एहिमे एक दिन पूर्व अनुष्ठान पनामान जाइछ । अनुष्ठान दिन मनुआ खुरबाक विधान अछि । एहि दिन भोजन जाइछ आ गृहशालाक माध्यम शैक्षिक छद्म मनु भवनक अनिवार्य तथ्य बालि छोटशोक धारणा संक्रान्त अछि ।

अपारक पथमा एत सवाही अछि जकरा सवाही कहिछ । एहि सवाहीक अवसरमा खीरक पथमा एत जाइछ । यद्यपि एहि सवाही एत भोजन करार नै भेल । एत एत एत एत सवाही अनिवार्य ब्रह्मल अछि ।

सञ्जान पाठक कथा पथ सवाही दिन सवाहीक अवसरमा जाइछ । सञ्जानक अवसरमा खीर आ सञ्जानक अवसरमा जाइछ । सञ्जानक अवसरमा जाइछ । सञ्जानक अवसरमा जाइछ । सञ्जानक अवसरमा जाइछ ।

मादक पाठक शुक्ल पक्षक चौकक विधानमा ब्रह्मल कथन अछि । एहि अवसरमा खीर छडी द्वारा ब्रह्मल भोजन जाइछ । एहि विधान पक्षक एत आ एतक अवसरमा जाइछ । एतक अवसरमा जाइछ । एतक अवसरमा जाइछ । एतक अवसरमा जाइछ ।

अभिनेत कथा पक्षक अवसरमा दिन सञ्जानक अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा एक विधान पक्षक द्वारा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ ।

एहि अवसरमा शुक्ल पक्षक अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ ।

कविताक अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ ।

इलाक खुरबाक अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ ।

अभिनेत कथा पक्षक अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ ।

अभिनेत कथा पक्षक अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ ।

अभिनेत कथा पक्षक अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ ।

अभिनेत कथा पक्षक अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ ।

अभिनेत कथा पक्षक अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ ।

अभिनेत कथा पक्षक अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ । एहि अवसरमा जाइछ ।

[illegible]

आमलप्रसवाकं लक्ष्यं कः न पार गतवान् तद्वत् ० मछीरेक भार गतवत्
द्विप आर कमान जारिक प्रधानता गतवत् प्रधानता प्रविर्वाकं ३ पार गतवान्
गाइड ० पोरिज पार कतल गतवत् ० नै खड्य नदय वकडुज कतल गतवत् ०
मुठौग कतल गतवत् ० नै खड्य नदय कतल गतवत् ० नै खड्य नदय कतल गतवत् ०
नदवाक एकर आठि एते अवसरक पुसौठ कतल गतवत् ० नै खड्य नदय कतल गतवत् ०
द्विपक निपति जाल गतवत् ० नै खड्य नदय कतल गतवत् ० नै खड्य नदय कतल गतवत् ०
चतुर वा पान आरिषयक कतल गतवत् ० नै खड्य नदय कतल गतवत् ० नै खड्य नदय कतल गतवत् ०
खड्यवाक विधान अलि ० नै खड्य नदय कतल गतवत् ० नै खड्य नदय कतल गतवत् ०
आन ० करा वही आ नदक रुपमुचक भार गतवत् ० नै खड्य नदय कतल गतवत् ०
अधक कहाइत / कहाइत भार कतल गतवत् ०

एहि तरङ्ग सङ्केत छी जे विधेयक सामाजिक अरु सांस्कृतिक अङ्कन प्रभावित
द्वारा बहुश समञ्जित अछि ;

अन्वयः निर्देशः :-

दानवनाशाय ॥ ८ ॥ ३

[illegible]

३. दाशभाष्यावलोकने पृ. ३२५
पाठ्यमपुष्पपूर्विका विष्टकवि ।
४. सैन सर्वसंसार प्रमाण भूत मुरारि संघट-संग्रह संस्करण १९७५
५. गृहस्थ चलाकर पृ. ३५३
कथका काष्ठप्रतिष्ठा कनकानि अणि यन्त्र धर्मचरित्रः ।
६. शांतकल्प स्मृति-स्तोत्रक . ४०
अनाथ नरक ६॥ दिवाना गुणधामि गोमाने दुग्गाणे अ न
गरेय ज्ञातः स १५
७. सैन सर्वसंसार प्रमाणभूतपुराणसंग्रह पृ.-१३०, स्तोत्रक संस्करण-६७८
८. गृहस्थाश्रमाकर पृ.-३७५ धर्मिकपर्यवे खासरीनि धर्मचरित्रः ।

52/मिथिलीक भोजन सम्बन्धी जानकारी

[illegible]

मैथिल रुचिपर प्रभाव ओ तन्त्रन्य पम्बर्तन

आधुनिक कालमें यद्यपि पारम्परिक वैश्वीय संतत व्यवसायिक व्यवस्था बचने अति शक्ति सम्पन्न संस्कृतिक संक्रमणक ओ ओद्योगिक क्रान्ति तक जाय वैश्वीय संतत व्यवसायिक कालगम्य परिवर्तनमें मूल अति न परिवर्तन वैश्वीय संतत व्यवसायिक संस्कृतिक संक्रमण, प्रत्यक्ष अथवा प्रभावक कारण मूल अति

[illegible]

पञ्चमक्षयक विनय, यथा पयोज पञ्चनः तेषु गच्छेत् तत्र तत्र भित्ति

[illegible]

सत्यमेव जयते के छंदःग्व आब ज्ञानवाप गति देखल जाइछ। भावक काल वैदिक
इह पद्यस काब प्रवचन छ'इह भावनाक हनु बैसबाप दिना विचार भाजनमें
लौकिक भाजनकायस भौन रहब आर्थिक विचार तुल भा रहल अर्थि भक्ति
इत्येक आपनका भाजन चलाइ बूझल जाइत छल। भुदा आब लकर विचार नहि कथय
जाइछ। लौक पाठ्य भाजन भक्ति अर्चित छल मुदा आब सामान्यक लौकपात्र भाजन प्रवचन
प्रधान भाव भऽ चुकल जाइछ। अपतिप्र नाथिक पद्यमें भाजन अग्रह बूझल जाइत छल।
मुदा अब विचरकालक भाव बहुधा अत्युक्त होइछ। भाजन कालक विचार संगत नहि देखि
होइछ। भाजन काल शुक्ल खर धांगन करबक विधान छल। य आब अपेक्षिक नहि
होइछ पढ़ैछ। भुदा कल कल मूल मांस इत्यादिकें हौमैं काटि कऽ खुपबाक विधान
नहि छल। भुदा आब एकर शिकक नहि रहल भात। बाम हाथमें खादन भाजनकें
छोडि लोडि छल। * जख नकर विचार नहि देखल जाइछ। बाम हाथं पालि पोर साफ-स
नहि होइछ। पढ़िने इ नहि होइ छल। गान्धारिक भोजन सब लक्षमें बड़ाप गाम-घरमें
कलकल गयल। उन्मारा अछि भुदा जहने क्षय ई बहुत बखु रिगोयल भऽ गेल अछि।
अर्थात् भाजन वक्तव्य मिथ्यासिद्धक विचार नहि देखि पढ़ैछ।

[illegible]

2. मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे वर्णित श्रोतन-विषयस
3. आधुनिक मैथिली साहित्यमे वर्णित श्रोतन-विषयस
4. लोकसाहित्यमे वर्णित श्रोतन-विषयस

सन्दर्भ विवेक.

ज्ञान्य न्यायकः ५. १५

सप्तवन्धः स्यात् ३

८ तत्रैव, पृ. ३३

4. गण्यः = शून्यः ३.

तारीख १५. २. १९८५

5. तारीख, पृ. 330

तत्रैव पृ. ३३

चतुर्थं अध्याय

प्राचीन मैथिली साहित्यमे वर्णित भोजन विन्यास

ज्ञान मेधला लक्ष्मण वगैरे भाजन विन्यासमें भाष्ये अनिर्देश्य आ
 र्थमें एक देशमें सज्जत्यो वगैरे पावन विन्यासाभासे अलि अति कालक संस्कृत
 शब्द शरीर अद्वयता जादिक साहित्यमें मिथिला दर्शाव लुप्त शब्दक उत्कीर्ण अनेक
 फल अलि बार्हिमें भाजनमें सम्बद्ध शब्द संदेश बलिखित होइत रहल ।

शिक्षक अपने 'उपपदक' को वगैरहोकर पत्रों को विशिष्ट विधियाँ प्रयोग करके उपलब्ध नहीं होकर, अथवा एक विशिष्ट विधि : गुरु करके वे एक 'चक्रवाक्य' अथवा 'विधि' गुरु तक ही विधि उपपदक मॉडल प्रस्ताव वापस करने : स्वयं ही विधि उपपदक अथवा व्यवहारिक शिक्षण होकर रहने के लिए

सिद्धिगन्तुं वाहं पश्ये पङ्क्तिभरं

यच्छु पिबन्तो विस्तरञ्च एषहृष्य' -संग्रहपाद

[illegible]

एक: ब्रह्मण्य आ दहं विदुषां इन्द्राय एकं त्रिं पदं अहं

राज्यतः धनं यत्र बाह्यं गच्छेत्तु ।

हार्दिक भावों में निम्न आवांसी ४२

१. चण्डिका देवी मूर्ति खंडात्त भस्मक ५१ भाग स्वःक १५६/१०१
 हार्दिक अर्पणं भेल अर्चि ।

संस्कृत में चर्च के प्रमुख वाक्यांशों और वाक्यों में विशेष ध्यान देना।

[illegible]

एहि द्वाहमे विधिवत्क शोचन-विवाहक अत्यन्त रोचक घणन भेल अछि ।
 अत्यन्त भयानक ईश्वर पावन विवाहान्तर्मे सम्बन्ध ई पर जखने यथाधे अछि । पत्नी
 ५ ७ ८ ९ द्वाहक साग जालक गेट प्रसाजक पुण्यवी दिस परिवर्तमान कहान
 (कहल) अइया मैथिल शोचन परम्परामे अपन स्थिर स्थान रहल अछि ।

साल खरबक सोठे जीने पाई चाह बघक नवबेचन सँ बालिका दुनू जौनन जइत छल एहि दुघरमे एहेन पोइत दए ग्याइ अइए बहोई ई तइबक अन्तर नयनकरा पूर्ण चानन त्रिछि एहेन ईहे देखबस पावेत अ स्वधर अमलापर कहल तब सहे

तेहिआ अहिमि पाइो कम गान हाथ बागन आंगण इ दिन एक नाम दिन दि लणन नहि लीनि काणठ कइहबुनि पातमि वृद्ध गंधक दुनि अघोरि सबक बंदिआ तँ औतन चलाओल लवार्ग बरकत्वान्ता । अही डोनि चाहका पौठि । घन लाने पयुन त्वाने दुध औतन जाई मुहोकि मसू भा कटथे टाकार पालस अइ पाए फकभाव विद्यभित्त य मुहमे । ते उष बिचाने दुध पीस्य इतयक योकेत तिनि हाथ काकर निमुठ हाथ ठाई गंग पंण हाथ पौरडने मय गगार आरु अन्त पचनि । कांडे कापी लेसन देल । तैमन टाछ हातक बट्टमा पूर्णिया हाथ आमरु रोजन खाइ दशने पवित्र दुध उधगत कह ।

नवगो खरबक पयु आचम ओगस गन रहि दुघरमे तैम हाथ चका अ निमुठ हाथ ठाई पायम दल नयनकरा तय गिला उतर पंणक गंन मट्टा थ, बघक बघयस स्पष्ट अछि व पायस दुघरमे खसरीत जाल देवने क्षमालन वडन छन हाथन अहिमे खपम अधिक छल्लाई पांड सकय एगार आइगु कालोथ सनय हाकन छल्लाक अत्यन्त मोन ओ कटगर हाथबास तैमन ओहोकि रूपम कांच कमुक अपहरा इहल छल हाचत ।

कविशेखरक एहि वर्णनमे मिथिलाक तइहोवतय चूडा इहोकि शो अमरकक संगी बंध हाइल दहोकि वर्णन करैत कविशेखरकाय कहलमि अछि व ई तइक भिन्न अछि अ बोहो आ तइमे विधान थ, गन चैक जोडथे छैल तै नारमे यथेष्टय जइत ओ तानमे लुटैल तै बंधन मरि हाइल एहन मुन दहोके उकान लोडकाक इत इतबीना निष्य चींगे श्रौडिक प्रयाग हाइल अछिअ थक गंगा धरना । वृद्ध वरुण हाइत छल अत्यन्त वडा शोक सय चींगे अओ श्रवक अकइल हाइ । अहि चूडा कुपना चाइल त हाथन घट्टे वृद्ध किछु पजन क ग जइत छन सयन इत तन मोहा सन हायत । इ श्रुत संग बट्टना हाइल काण ठाई वृद्ध कृष्ण चोरी अछि क वरुणायन मय नै इहोकि सय गोक ककौ नि वृद्ध सयन अछि । हाथकाय वृद्ध एही परसबाक तथा भोजन करबाक विवरण एहि प्रकारक अछि-

मुचणक वीर्य दुध कओल विडता उषा मुन हाथ दल कइइत जानि दइइत कपित पाइ देइत घमति मुचणक काकमल पल्लव घुच गंगक छोर छओल शशुपाय हाथ देम नाचक पशुपाय कएत काने चलकि चलकोक चिकरुपलाह बिहणह शोवाद लल कइहकिअ रिहा = साइर रिहा साइतविभ सार न हाइए । देवजीनी खण्डक संगो गयका विवाद ललल ।

मुचणक वीर्य मुचणक उषा दृष्ट आल दृष्टी भाल गल चिचल चूडा कइत जानि कान हाथ कइइत काल मुचणक पल्लव मट्टा आकपित काग लोह आठ दृष्टी कविता कालिक दुधकायल कौप, लोत भांग सय देइत एहेन सय तबक काल गंगमत स हाइत सोड मनक हाथ छओल मांगक सय हा व चनन मे लाने अ अचोइ हा नगमि क शरुख मट्टा हाई इमिधन गबक जइत कइल अछिअ गबक उल्लागपुर्तक शो कओर लल क भोजन उगम कइल चलको छल्लाक चिकरुपलाह काण नोह आ नकम बिडत आ भे भेल ज जोनोक प्रयवी सपास भेल ।

एका उपरान पछाल लल उधवाक वर्णन अछि किछु कथाने दिनुक एहेनमे मयल गइल तँ अथ प्रवचनमेक एहेन वर्णन कइल आ रहल अछि-

पयुक्तयो इ धरुन अछिअ चैन लल जाक आका कृष्णक पकाव हाइत छल होइत । इही बंसय सँ बनेत छै ।

मिथिला गोन एव एहक खोयमे वमल विषय नुदय पदथक तिलका कहल इहल सन चेतकइ इओ प्रयाग सजुक मखिलाम सैहो खूब अछि तिलकाकालि प्रबल लल वरु वृद्ध किला क, तैमन घट्टे इवताक नैवय चडाकान लल अछि अ ओ प्रमदरूपम एहो कथन जाइत अछि

अनय दुध प्रक वर्णन अछि एहेन अपक चर न हाथ बाय खडिका न चाहल हाथ अछि मुचणक लल पावनमे विषय नैत श्रीगैत भलत अछि

हाथकायक अनय दुधपान नाथक काएत । चूडमेत । खाणह हाथ कइओल अछाओल धनिकाक दनघवन कएल भेल हाथ कइओल तइ गुण नयनक सयकाले मोहल दव सयक सयक का पाव इत नाचक पाव लल । मुचणक अछयल ।

एहि ताई कवसयाराय मिथिलाक प्रधान शोकप्रिय भोजन चूडा इही कान पाएत य लोडक अत्यन्त चिच विडित कालमे भय

एकर दुनू कालक भोजन रंजला सन्ती मय प्रड जाइत जे ई भोजन राज हा हाइ उ मय चयनक हा हाइत तथा हा मय हाइत त दिनुक भोजन काल इहल सन मुचणक पावन वृद्ध हा हाइत एतक नै अछि त ज मयागम कालिक मकक भोजनक विधान एतक बडिषा नहि होइत छल हायत ।

मुचयन इ अन्तर हा पद विचयन मुचणक मिथिलाक पावनक मय श्रवकालमे कहल अछि नैम पंण भोजनपित देग या पावन खडिका आ मुचण इहल कइल मिथिलक मय विन्यामक अपल ज्ञा बनल जल अछि

मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे वर्णित भोजन विन्यास

सम्यक्प्रज्ञापेन वैश्वानरे साधुत्वमे वर्णितं श्रेयसं निश्वास/१३

कौत्सि गच्छेत् तत्र जलधाम ॥ १ ॥ अथ चन्द्रोदयकाले भोजनं कर्तव्यं ॥ २ ॥
 आं ध्यात्वा तत्र भोजनं कर्तव्यं ॥ ३ ॥ अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ ४ ॥ अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ ५ ॥
 अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ ६ ॥ अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ ७ ॥ अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ ८ ॥
 अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ ९ ॥ अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ १० ॥

विज्ञानं दातुं चन्द्रोदयकाले भोजनं कर्तव्यं ॥ ११ ॥ अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ १२ ॥

दूधे घटाङ्गुली सौख्यं नैव ॥
 सद्यः न तेन कदाचित् नैव ॥
 दिवसक भोजनं कर्तव्यं न अत्र ॥
 पठ्यते कदापि पात्रं नैव चोः ॥
 पीव त्वया पात्रं नैव चोः ॥
 भोजने भुज्यते नैव चोः ॥
 पीव त्वया पात्रं नैव चोः ॥
 भोजने भुज्यते नैव चोः ॥

हिनः एकगोत्रं प्रपात कालीनं गोत्रं नैव कर्तव्यं ॥ १ ॥ अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ २ ॥

मुखं केन चान्नं भोजनं नैव कर्तव्यं ॥ १ ॥

दिनक विधानं पदमं च ॥ १ ॥ अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ २ ॥

कनकं कनकं कनकं ॥ १ ॥

पुत्रं पुत्रं पुत्रं पुत्रं ॥ १ ॥ अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ २ ॥

किन्तु केन चान्नं भोजनं नैव कर्तव्यं ॥ १ ॥

दधि दुधं चोः नैव कर्तव्यं ॥ १ ॥

अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ १ ॥ अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ २ ॥ अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ ३ ॥

अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ १ ॥ अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ २ ॥ अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ ३ ॥

चौरं कपूरं चान्नं भोजनं नैव कर्तव्यं ॥ १ ॥
 सगरं चान्नं भोजनं नैव कर्तव्यं ॥ २ ॥

अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ १ ॥ अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ २ ॥ अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ ३ ॥

अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ १ ॥

अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ २ ॥

अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ १ ॥ अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ २ ॥ अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ ३ ॥

अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ १ ॥

अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ २ ॥

अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ ३ ॥

अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ ४ ॥

अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ ५ ॥

अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ ६ ॥

अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ १ ॥ अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ २ ॥ अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ ३ ॥

अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ १ ॥

अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ २ ॥

अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ ३ ॥

अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ ४ ॥

अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ ५ ॥

अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ ६ ॥

अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ १ ॥ अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ २ ॥ अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ ३ ॥

अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ १ ॥

अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ २ ॥

अथ भोजनं कर्तव्यं ॥ ३ ॥

कतंक जग विवि कनेर बेसाइन, निरधन छडलत तबडे ।
 बेर कतन्तरी दु कसल जग, राहरे अकसेर ककडे H
 काल मइल तिरहुने चरी, रें ई कडि केर हाथ ।
 घर-घर फल कर न करै फकि ककडे कर सोक H
 धारिक और महजन तबके, घर-घर बेरी अन्य ।
 लोक कुलाअन ओहो लके इकि, मूह नीकक मन H
 समय देखि बनिजा रूप सनकल, हों सबओलक टट्टे ।
 सुन दोकन स्वरवे पडि गेल, सुन बेर समय चट्टी H

एहि प्रकारी कविताक पाठ्यपत्रमें कवि फतुल्लान रोटे दल दुधिकक अंतर्गत
 पार्थिक विव उपस्थित कथननि और उपजाक अमयम सुकन ते सामान्य लकके
 नपनक नतिव हनेक कठनापर प्रकति उपस्थित च गम कनेक मर रह अवस्थापे
 शासक ओ भाग्यनवर अपन घरमे मन्क चखार गहन छन जनसाधारतक चुभुलक एते
 ओकरा कौनो दोग नहि छलैक ।

एहि कविताक नाथमे कवि मिथिलापे उपजवत विभिन्न प्रकारक अन्य
 जेना छान गहरी धदरि मकड मइस मर आदिक मुवा इके उपस्थित रूपन छथि
 जाहिमें मिथिलाक स्यादयानक सन्धमे जनकपी परैत अछि

एहि तरहें प्रधकापीन काव्य पाठ्यपत्रमें भागन विचारमें बहुत एक नथन
 होइत रहि पड़ेछ पताकवि विद्यापति ओ विद्यापते ककडेक अरु कवि उपलब्ध करै
 अपन काव्यम पाठनके स्थान हनेनि अछि अतएव एकराओमे सन्धमे ककडेक
 सुखक अछि मेल जाइ ओ फतुल्लान अकाला कविता ककडेक ककडे विव
 सारंग विधिलक विधिन गुदगदनेक मुके ओ अनामक के एक अनामिक वन
 कथननि अछि

छन्दसि निदेश -

1. कोल्लिक-विद्यापति स. कानून सवसेना.
 कपरी प्रधाली कष. कानून 1929.
 पृ. 5
 तब 3
2. तब 3-26
3. तब 3-30
4. तब 3-40
5. तब 3- टिप्पि कसल
6. तब 3- टिप्पि फलक
7. तब 3- टिप्पि फलक
8. तब 3- टिप्पि फलक
9. तब 3- टिप्पि फलक
10. तब 3-68
- विद्यापति नोवले ग. कानून विधिते
 अकाली फल, 1981 पृ. 311
12. तब 3-177
13. तब 3-307
14. तब 3-386
15. तब 3-1
16. तब 3-291
17. तब 3-
18. तब 3-141

19. तब 3-622

20. तब 3-43

21. तब 3-

22. इरगौरी विद्यापति नाटक कानूनविधिते
 स. कानून विधिते विधिते विधिते
 स. कानून विधिते 1982 पृ. 54

23. तब 3-470 पृ. 68

24. तब 3-470 पृ. 68, स. कानून विधिते
 विधिते कानून फल, 1981 पृ. 70-17

25. इरगौरी विद्यापति नाटक, पृ. 48

26. योकिन्द गौतमवि. स. कानून विधिते, विधिते
 विधिते, कानून पृ. 336

27. कानून विधिते, स. कानून विधिते, विधिते
 विधिते कानून 1970, पृ. 4

28. तब 3-10

29. तब 3-1

30. तब 3-14

31. तब 3-6

32. तब 3-1

33. तब 3-1

34. विधिते कानून विधिते, स. कानून विधिते, पृ. 25-26

सीता हेतु मधुर संदेश । इति चूड़ामे चाफस वेस ॥
धरी-धारी धर सौंठि विचित्रल । निरु पठावहि कौमल देस ॥

एहि ॥३३६॥ काव्यरत्नानाम् पौष्पिण्यं पाठ्यं विश्वनाथः प्रसिद्धं नृप ॥

जेना- महुअक, उचिती, विखुझी धर आदिक वर्णन कयलनि अछि ।

कविज- सोनारामजीके अखचरित महकाव्यप भाषिण भवनज राख्य चिन्तामय
तयान भुल अछि ॥ प्रथम संग मरद प्रसकाक हनु विधिपन विचित्रल नखन उ जय
खदयक चर्चा करैत कविधर कहने छथि-

नहि पुनि ठंर मरिसी जगहु सपक न्याधि ।
हमरा समदिक मीतिनीं दूरी भूत नहि छाधि ॥
नहि अगहनमे पात नब, नहि अगहनमे आस ।
नहि चेतहु नब जब बज नहि पाटवमे आस ॥

मरदद्वारा अपन शत्रुहुक हेतु पावन जन्मानक अर्पितान करबाक उपाय करैत
कवि कहने छथि-

जायबमे चौपादियार हो न कनेको देरि ।
ई बुझि सोस करत तबि मानस करहि सनेरि ॥
दिनमे सोझक हेतु पित राखहि कब ओरिआर ।
सोझहि पातक हेतु पुनि हमरा लख बान्धन ॥

विधिन्याक अंतर्निधिराख्यताक चर्चा करैत कांकेर गहि प्रथम विधि न खदुप
वस्तुक विवर्णन देसनि अछि-

धर-धर अतिथिक हेतु पूबक गछल गेल अमर ।
बाबर चूड़ा दूरी कलि सरकारी बसन ॥

विधिन्याक देख्य रहनक उपाय करैत कविज कांकेर गहि न नखनक बुद्धि न

छथि-

सरस सेव महनुति नखयाली सफासा ।
अनानास अङ्गूर पुनखी दीब भङ्गाना ॥
किसीपस देस अन्तर राखिनि विविध सुपारी ।
पिसा ओ अखरोट मनका कुष्ठक धारी ॥
धर खान अजीर अजीर मरिज लखइलक ।
तल लखल खजूर आदि तल रंग विरंगल ॥

त्रापुन आय सतास सरीफ कोर कटहर ।
लौधी खोरी खेल सतास दुम्बरि करहर ॥
अपनी अपन कब करीन कपयस नेकी ।
फलित देखि लखवाहि सदा इन्द्रावक देवी ॥

एहिना विधिन लता ओ तरकारी समक सेहो वर्णन कयने छथि-

भट्ट-भट्टकर कुटुम्ब कटोपा सबमनि लतरल
करी-करी विविध सग सोअ अछि कतरल ॥
आलु अल कम्पुह कल अरिचोथक धारी ।
कांवी भांटा मू आद आदिक तरकारी ॥

अन्त्यतक सम्मान्य गज जनक द्वारा परम्परित पांज्य पदाधिक इतिहासक वर्णन
एहि प्रकारक अछि-

नब वसन विविध बसयन हेतु । पंथ मिसरी जायधान हेतु ॥
माखन दधि ओटल दूध गाढ़ । नर तरुल छल इलुआह ठाढ़ ॥
भूतमे टटख पूरी कनैत । छल सत विविध खानन बनेत ॥

मोलाक विभागनक अवसरपर मँठल दिन भातक वर्णन एहि प्रकारक अछि-

छोछ छोछ चूरी ओ भकल इली छल आसुवर ॥
केस चुस चूड़ा धरि धरि लखल लख कतर ॥
पूरी ओ पकयन विरुचिक महु अनेक प्रकार ।
भरल बहेरा मेख बिसरी जान विविध आधार ॥

कविजक ले अन्त्यतक राधाविग्रह महाकाव्यप भाषिण चिन्तामय वर्णनके विशेष
ध्यान नैह सौं बहनेक जेठ । तधापि अनेक स्थलपर प्रसङ्गः कोज्य प्रसाधक चित्रण
मन अछि उद्य- प्रसङ्गः गद्यनाक रूपम विवर्णन करैत माहक भाँडिआनक रूपम
चित्रण करैत कतासाक खसल यैत अछि-

दुपरी राखल कल संहारक फेकल बाल बुपाय ।
कहिजे राखल बल-बल पुनि कहियो सँह बड़ाय ॥
भबई बीस पादमे संख होइतहि खोनि दोकान ।
नखत कलाब नील काये सखा राखि अमलान ॥

गायकान्तिक बहुलायक अखण्ड दूध दही घी तथा ओकर समनक गाट
वर्णन भेल अछि-

कवि विभिन्न प्रकारक मातृका मेंहां उत्पन्न भइले छथि-

देहरा पीठी सड़इ माक डी हुँवक हुँव चलैत ।

गहूँ अँकारी अँधि-अँधि छै चलैत तुरत कर्मत ॥

घाँसक पुवरा गोल इनअँगे छै चपचप चपकैत ।

कपल नवन इत प्रगट कलागम अछि सभ दुख देखैत ॥

जहि छै रीतिन पदोकर ॥ १० ॥ अतएव जन-प्राप्तकालक चरण गहन

रहल अछि

(ii) मुक्तक काव्यमे वर्णित भोजन विन्यास

पौराणिक ग्राम्यनिक मुक्तक काव्यमे तथा मात्रन विन्यासक मुक्तक चित्रण देखल जाइत युग प्रवर्तक चन्द्रशेखर प्रसादजीन पौजन विन्यासक चित्रण घन अछि जिनक पहचानाणी ओ नवजात पौराणिक पद्य धरि सिद्ध अछि। एतए अछि-
साधन्य अपावति भई हुनका एहि पद्यक न्यासक अग्रज कयल कहत छी

पाँचक जसम लागू हे गिब ।

रहू सजल सासुर सल्ल सासु समुक्त समू ॥

शानिकक बंते गंगे सासुरमे जा कऽ जाना वचनी तका चित्त मल्ल-चिन्तक
हाथम स्वभाविक खान कऽ समुक्तम् कटौक दनु तब किछक नै चित्त-चिन्तक
करैत छथि जाहिसे दनु पाँच पाँचमे सोझ निपत रहि हाँ रोक निकत छैक क
पाँसलि गौरक सासुरबाम धलापर चित्तगो शिचक मग हुनक पुत्रदनु मग जा अन्त
विनित छथि नै कान क गौग कदमपर जीवन धाम क चकरो

झौ फल काँग बजुर धिजापन खाएक नहि कम जन ।

नुपतिक घेति धिजापन घर बसि कोन छिनि खुनुनि कम ॥

उदात्तिक चिन्तन ममतासे छति कल्पित कृत छुटैत नवन अँधि

भाजक हुनु समय कर्म कुकर्मन आहुत होइ पड़े छैक जनक अन्तक छै
विवहायक संकेत करैत कवोशवर कहनि अछि-

कुकर भाव नुठदास मूह राति दिवस रसवारी ।

अपन प्रयोजन जन संयोजन को कर ककर पुझारी ॥

एहि पापक अन्धियार करैत अन्ध पर अछि-

उदर चरण कारण जन हिंस्र कोओ हाकिम कोओ दास ॥

॥ ११ ॥ अतएव जन-प्राप्तकालक चरण गहन पद अछि

मिलित भोजन विविध प्रयोजन नारी जसम विलास ॥

समोरक जनक महाभंताक ब्राम्हण तथम ओ समुक्तिक कहनि अछि

धन अन्न हो छति पाति सँ दहस करि अन्न ओझ मृदव सँ मृदाप

आप दान-दानक विहाई लागै जाँच घमंदाई अनन कष्ट धन हाथ ॥

पराव सँ बहाव अन्न धर्मक फेर अन्नक अन्नपादम टिकाव भाव गै ॥

भातेमान पाँचमे अन्धियार जन कइक पाँच बात को अन्धियार अन्ये ॥

न-जानार अन्तक धन मग वंशधरक अन्नक रचनाम भेटैत अछि एतए

अन्त पाँच भाव सँ कइ सँ हो अन्त ।

भमस्त लोके अन्त कर्म नित छोट ॥

मरीच भाव अन्न कट से जनेर मोट ।

उपायन लोकक सखाव नेत मोट ॥

दुख ओ लो लो कइक भाव अन्न ।

अन्त सभ लोकक देखि गप राव ॥

अन्त जनेक उपाय लाम-लाम ।

धर्म त्याग सँ भवस कष्ट अन्तधाम ॥

दुख ओ लो लो लोकक सखाव ।

अन्न ओ मग सँ जनेर कोनि मोट ॥

नौव कर्ममे रहि कर्मक बहाव ।

को अन्त कर्म से सँ सँ सँ सँ सँ ॥

परइ दहावल भाव दहाव ।

गति किमान कि कान्त अपाव ॥

कोन दिन कटत विद्वान कि काम ।

बालकन मिलि कए हाव हाव ॥

इदव जनु फाट ॥

अन्तक हेतु मानक वैदिक मतक पाकायक चित्र उपस्थित कोन कवोशवरक पद अछि-

पूहारही आपन सोरहि कट कट रे ।

बिनाही नेत नैस जाकि निरुद्ध रे ॥

घरि घरि खँझा रहूँ खँगडी
पाङ्गुन सिंगी बाबी जोआर
हाटक पत्रिचम दिशि चोदि आबि
अति फौन मौन अछि बेचि रहल
कहुँ धान मन्दाइ महुआ खोला
आखी दोपी कहुँ अछि ताल
कहुँ झिगुनी ओल फाँड़ अछि ।

मिथिलाक खाद्य पष्य काजगमक मञ्जानक महत्वक विस्मयित होत
कषिक पाँती छनि-

बहि गेलहुँ न गुनि अपमान मान
कहुँ दू फोका कहुँ एक
कतउ नहि सेहो
तेहुन पक्षिक दिधान
किछु हाँ
आबुक निशिये कहना
निशय थिक काइ मञ्जान पान ।

'होरो' अवक कथाकव्यम मिथिलाक परम्परा भोजक इति लाकक आन्तरिक
वर्णन भेल अछि-

पदि अतापी बहिलो बेन
बयो पेट हुँभोबधि कऽ बेचर
बयो नमक-सुलेधानी फेकैछ
बनि अस्तव्यस्त चितइय पड़ल
माइस की बहगननि छकार
आसस एहेन नहि भोज खैल
काहि कथा चुमबि निपबो अँजल
विजय देखिक अनुकम्पार्स
आन्ही पोतोचरक लहर
ओ बारह खटी लकरीझी
की कहियो बरबा कौन फा
कजियो देखल नहि रहन भोज

बीरह बाण दूरा जाम्नी
बेनुअँक छी, ही कषिक ओज?
नगद खर्च खान्हा इजोर
घरा लूटि मेलक
किछु हाटक ककर मण्णि धिक
मेलकहि ई मवहक तक काटि
ई तँ कुनार भोजक बहान
देखिहक कन्नुक गेटिक पसा
इलुआइ आठटा एत छेक
'घरि गेलै मधुरसँ खब घराइ
को खैत कते बहनीक समथ
किनि लेलकी मकौटझिरी लव
देनकनि बहकीक सुकनष भाइ
छाइन की-? ख नहि सकस राइ'

कविचूडामणिक कथ गोट गोनय भरदुलिया पाबिक अवसरप भायक भोजक
हेतु बौद्धिक आरिअनक वर्णन भेल अछि -

मटर मिलबो कबो तँ लभिये
रही मोदि मोटा दूध किछ ओमिओनिह
दिअइ उमइन हँसि-हँस कऽ फदिया
बेल का मधुष प्रसन हे-

'जैत नई' जेना काव्यम बौद्धन साधन 'अन्तरिम' विविध पक्षक चित्रण होइत
रहल अछि ।

लखनऊक भुमरीना अधकाव्यम भातभे अत्यन्त मनोजक वर्णन भेल
अछि ।

परिइत कहुन उखन ज इंगलै जल्दी किछु खोआबह अछि
घुछे पेट मटल पोजरमे बजितहुँ होइत अछि बड़ प्लानि
झट-धर एक बने खण्डा लएकी खण्डि लगहिँ पुनि झिझल पानि,
अबक जँ काबल जोधतअ बोज इम गखल पुनि अनि
मुसरोझाकी काहि बैसाआल आगँ बइल पुरैनिक बात,
आँजु बने अनि जूझा परयल बडलन बर बस प्रीतिहि सात ।
अन्तरिक दूष भान छल साहिवा छान्हा छल ओगुनन घोट

एकरी बोरि मे दूति बैसाओल नहि पोडल जन एकरी बोट ।
 छाए-पोचि बेकरीत राखल लल घुडक लल सति बैसल्य जाए,
 गरुड़-झाण पुनि देखि घुडपन कहना बरही कइ मझाए ।
 मुछल राखत कहू, पण्डितजी कहन एसनुक भोजन भेल ?
 भाल पेठ की कर्ष सति भिच खुदही छाए भुज दुनि खेल ।
 भए गदगद पुसरी पुनि कहलन्हि, अन्नक मोहर होअओ अन्नपत्र
 एतकीसँ जे मुखले रहता बिकसि दरिद्रा ओ फलएत ।
 निरुचय खाए जनीक सपन हम, कहइत राखत छिअहू ई जन
 एहन पधुर दूध जिनगीमे पहल अइ बरि सन नहि पल ।
 एहन मोट ओ एहन बिलखन छाखी तँ सुनल नहि शोक,
 इन्द्रा यदि बैसाए मोअभिनधि नहि किछु दिलावे एहिमे नेक
 सुनि-सुनि पुसरीझाक कक ई नौरवसँ राखत भेल कसि,
 राखि चिलय पलचापर बैसल किहुँमि कहय लागल पुनि इगल
 पण्डित, हमर पचानक दूधक पाओल आई न असली खरद
 छओइ सध अछि बड़ अपगोजक शोकनहुँ होइत अछि पयात ।
 पसक बाए दूध जे दुहनक सपटा जुनिअहि देलक चराए
 एखन बरि तँ जानही पहिचए, तइबिअहुँ कहल मोटाए ।
 एखन अहाँ जे खाएल पण्डित, ते तँ दोसर जानही कोक
 तेहने दूध बिलखन होइत तँ ई लागल एहन नीक ।"

काकतीश्वरजी अरण्यक कवितामे गेहूँ यैथिय धानक विवरण कानि हय
 अछि मिथिलाक मागि पथि तस कान आ जन जांचमे पछि दिअ कहिक
 माया अनेक छे मिथिलाक पचन पचनक यैथियक चरा दौनु गेहूँ
 पिछिलाक प्रति कवितामे अछि तँ कानक मकडक चोक ओर, एतए कहिक
 केन मूलक कच कयने छथि-

अपती करहर बेंद बिछोइ । कंचु कहनी कदम केसरी म
 घेवहुँसे बरि हने खाधक । कनय-कनय तेहरे भुल नाक्य ।"

मिथिलाक वसन्त शीर्षक कवितामे काँच पट भएने रसक सँ करसव
 आदिक उल्लेख कयने छथि ।"

'हेमन्त मोर' शीर्षक कवितामे मिथिलाक विभिन्न प्रकारक धानक वर्णन भेल
 अछि-

कामाठ कृष्ण अछि एक कान दोधन दिअ सलग गुण गान
 गान भेपुना जन उरि धनि छवि छाहि एतः घिलनक इमंति
 इ भगत धनरिया हाने रहन जनु सगभनी अखइछ उमडल
 'एक चित्र' शीर्षक कवितामे एत एतए शब्दावलीक अध्ययन विचारक
 मोरक उल्लेख कयल गेल अछि-

काँच नीधन बोरि कथा क नवका पडुआ गडुने गडुनी ,
 सँसँ गंदी ललका टिकरी लने रकसी भाइ न ठकनी ।"

'मूसर बाबू' शीर्षक कवितामे अरदासक साइण-भोजनमे विभिन्न खाद
 नामक विवरण विधि कान छथि -

काकतीश्वरजी अरण्यक दानक पचनक भेल एहिचरनक भोगि नून
 खाएत भनक चरा अछि कहल गेल अछि-

आ पनपियाइय
 अंकुरे कना पकयलक मइ
 रहइत छनि अभनर?"

आचार्य मदनमोहन 'कवितामे आह्वान शीर्षक कवितामे माग माग लव छथि
 सेनमे कविता कथनामोहन कहि मानक समय में प्रतिक्रियाक भोजनमे केन्द्र
 कहे एतए छथि 'मोहि कोऊक' कथक अ. अथि केनक एहिचरनक अन्न ललक
 एतए कोऊक क. मानव जीवनमे अन्नक महत्ताक प्रतिपादित कयल गेल अछि

कवि पांडुरंगक कवितामे अन्नक प्रति भौतिकतावादी भुक्त भवमांपलबिक
 रूप विचार कयल गेल अछि हुनक वाक्य अछि-

मकड़ महुआ सय करअने आसु गमही जान
 मकड़ महु फल पूल पान भक्षण
 एहिमे ओ बाढ़ि होइत सत्य ।"

मदनमोहन विचारक सिक दुनू शीर्षक कवितामे भुक्त भेल अछि

घीर चरक पिछिछि कोऊनराक पचन

जनकयम ओ मिहनाहाक फल

देखइत अर कचन

कलपछोइ कनकजोर अरिया कायोइ

धनपौलि लक्ष्मणयोग

बिभरत कोन गमकत मोहो जान"

दूरेन ग्राम्य लंक कणनक रूपम कथं परिश्रमक कर्तुं कोटय सुदृष्टं ॥ १८ ॥
उल्लोख कथननि अस्ति-

जमाइनसै लोक कऽ छीकअए
खैहऽ खुब घटअए सन
सगिरी देल मायक होए
काँजे जयोरी गति ॥

पावनक सम्प्रदाय रीतिरूप प्रसृत कौन कहलनि अस्ति १ भविष्यद सौं ओ
साधारण लोक सपने रूपमे रहित भएत छलए ॥

नव चत्वारसीमे कवि सर्वसाधारणक पावनक जमायक विचार कोट कइलनि अस्ति-

वेदक भवन कऽ रहल होट नेक बुटका
हुबल आइगुने कलस सब नीकस झिदुका
मकड़ाक बालसै बेइस भइ चुम्बक मूँह
भारी गिलास सब बेइस बिकिन कऽ छी गेलइ
कैजा बकता से काय घात ॥

साधनस्य प्रो. राममहाराज अपन एक विधायक रूपमे वैदिक धर्मक चरित्र
रूपक वर्णन कयलनि अस्ति- भवनभूत जमायक मंचन लयबद्ध होइ विनय
बालादा शैविक कथाकाव्यमे वर्णित भेल अस्ति-

गतिमे सँघार लागल बालादाक आगामि ।
आटी अठागठय हुनका अगई लगभोल गेल ।
कह-बड़ी घटबड कदोम लिम्कोर और पायइ
हिलोरी ओ दनीरी अटोरी घाँटा, एक बट्टा
छिहिरा छी, एक बट्टा सोआ पाइ चीनो
पर्याप्त, घातभोग कोरा ककल खुब,
देइ से मेही घात, जाति कऽ छनैइ परम
पुतसै खैल बिबकन तथा कटोमे गहड़िक दल
अभिल गेल, कम खुब घुब कऽ कह कोठ ॥

जमाइक हसलाप मान-मनीअति आ इचिती-मिननीक प्रसंग तथा धाँजनीपरन
पृष्ठगुह पवन के धाँक साम्प्रतिक साम्प्रतिक उल्लेख कोट कइलनि अस्ति-
दृष्टय अस्ति-

दू वंश मनीअति तथा इचिती-मिननी रूप मनुन होइक, बैसला पुन. दामादा

आसनप मए सए सए मए छान्नी सकनीही छीआ सघटा चाँटि पोंछि निघटैलदि
धोन्क बसु मय, बैस एसन, धान इन्कमे ऐलैइ परि क ॥

उक्त कवि बालादा शैविक कथाकाव्यमे साधारण जमायक धार्मिक
पवन के चरित्र रूपमे जमाइ पुन. रटुनक सत्तालय लगभोल मंचनक अत्यन्त
निक बालादा रूपमे लोक के विपरीत आ साधुनक मेधनक दैत टा पाटी मन
हुनि कोट विनयक रूपमे जमाइ केवकाव्यमे स्थान उनांग ओट ही पाटीम
पावन-विनयक कथन कोट कइल गेल अस्ति

अबल उमो मपीए, प्लेट एक राखि गेल ।
एकटा मिहागा और एक फक्का दालमोट
एक मसगुस्ता और बुनिया एक मोठी मात्र
दोला परि सेधइ और समतोला दुइ फाँक
एक बूटकी किताबि तब सोहल एक कोटा टा ॥

धार्मिक पावन प्रणालीक शैव विपरीत एते तरहक पाटीमे पावनपृथ वैद्य
देकक सम्प्रदायक रूप कऽ सकैत अस्ति

लक्षणा अनुमान कैल ई सभ वैद्यक विक
काहि कऽ फाँक जमानक हेतु कैल गेल
ई कम विचार ओकरा टाँटि देल दहिन पाग
सायने बनाओल शान मुक्त जोखनीक
हेतु, कबल देई छी जे सत्तालय नियमित देव
अपने वैद्यक धर्मक धीन छवि सगा रहल
इम लपेट कसई, कम अकल, हाथ जोए
किनु कमक दानद्वि, स्पर्शक त सोन कथा ॥

उक्त कवि जमाइ जमाइ जमाइ पावन उमर आ तथाकथित आधुनिकताक
निक मान रूपमे केवलपाव भोजन आ धार्मिकताक अतृप्तिक रूपमे कोट
रिमोडिफिक वर्णन दइल अस्ति-

दुए एक फक्का घट, साँक घेल लालमोट
मेक तब बुनिया और किताबि किमीन घेल
एक मसगुस्तामे बिलम्ब की लगीत कह १
समतोलाक बाद शेष रहल एक कोटाटा ।
एक धिनट लागल होत, ताहीमे साँक घेल
विनिवाक प्लेट इम विराजए मए गेल ।

किन्तु अगर योगदानण कुछ जलकैत रहलक
 यण्डा धीन लगल, किन्तु चेद नहि जायन घेल
 किसमिसकेन कोटि कनेक मुँह ल रहै छनि कषो
 एक दालपोद तोड़ि खोँड ल भरैत छनि ।
 आभास रसगुलण ल कऽ जवना छई छनि कोओ
 रसगुलणक स्याम घड कोओ नहि करैत छनि ।
 हाव हाव ! मुँह इह छनि गेलहुँ लष्य बीच
 लष्य कोओ कसिय कऽ जवः इमे लकैत अछि ।

एहि कथाका अभि अइ काल्पुक पुष्टि अइ चाहि जेवन स्वाभाविक
अर्थानक सभ्यताक एहन पार्थीक विकृत स्वरूप आ भिन्न-भिन्न उद्घाटन कर
वणन अछि-

प्रायःक आचरणार्थे कक्षाधीन दृष्टि धेन
 प्रोक्षक काल बाद उच्चर तत्त्व दिग्ग ध्यान धेन
 एकमात्र कद्व जर्जर जाह धरि सत्य कल
 और और सन्तु कल केवल उपाधि धर ।
 शिशुर्धे कक्षीक दृष्टक कौटी धेन दोषल तेन
 कनया धरि दृष्ट एक सीसी कक्षधे
 एक कौर दूर्ध्व सन सानल जाय तने
 धीनी क्षामपदही एक कद्व नमिदाहीने ॥

भाजपायंगत व्याख्याओं पर मुकुन्ददेव का गहन गौरव व्यक्त करते हुए
लिखित करते कहते हैं गेल अजि:

के देश खगिकर 7 और कोहन होइत मुखशुद्धि
सज्जक सिम्हर ओ सत्पन्न तज्ज अर्गा ओ ।

५। गानक प्रति निर्माण के आधुनिक चरित्रों की विशेषता का प्रमाणित करने के लिए

उत्तर दक्षिण-पूर, पाटीक से नाम लिखते
सोने का नाम लिखते यहाँ का नाम लिखते
लिखते अथवा नाम लिखते नाम लिखते
और ई काई लो लिखते नाम लिखते

हाय अग्रगण्य महान कवि चन्दनार्यमिश्र अग्रज तुम गाने अतिना काय

[illegible]

पहिले दक्षिणाह्वार लगळ घास, दिन प्रतिदिन कालक इया ह्यास ।
मेरुमह नोन कल पात्र आण, किंहु भिमा कण्ड कल सर्वगाम ।
मणि न्हडल कल सव आम कहर, पतिराखन अन्हुअ आम हमार ।
चडका व्हडक जो मुंपुर आनि, मोमिआय दैत सल ह्याप दाणि ।
घाटि रालि अटारक शील जाणि, संव जाव पुरी परिवारा लाणि ।
शोचह कल मोयल जाव इमार, पतिराखन अन्हुअ आम हमार ।

संस्कृत एतान् ग्रन्थान् धर्मशास्त्रं तथैव न्यायक वर्गात् अस्ति सामान्य समयम्
 ५ इत्येव चोक्तं न्यायक इति अस्ति एवम् अत्र तत्र च अपि नहि जातं तैत्तिरीय ब्रह्म
 सूत्रम् च। एवम् इत्यादि सूत्रम् समाप्तं प्रायः भवति तैत्तिरीय-

मन-धरमं सर्वार्थकं धाम सत्तल, बह्विधं सुदुष्कं लग्नं यमं घटल ।
 प्रथे कृष्णकं भक्तवत् अस्तु ईं सुखं हृदयं संसल घटल
 ईश्वरं धरं ह्यनं विष्णुं धाम, पतिराजं अलुखं नाम ईमा ।

३१. आर्य समाज के अर्थ एवं अन्तर्गत विभागों का नाम बताइए।
 ३२. आर्य समाज के अर्थ एवं अन्तर्गत विभागों का नाम बताइए।
 ३३. आर्य समाज के अर्थ एवं अन्तर्गत विभागों का नाम बताइए।

काष्ठी, ईसा अष्टमाद्य तैल
मिलनी दुधक मद्योय देल
तैलाम्यक तें अकि छद्व घेल
मनपस्त हपर बस झुपि गेल
बढ़क क हमर दानक छ ।
पल्लवान अम्होअ नाम हपर ।

महक: ३०५ अंशतः अतिशक्तिशाली स्वादयः वानल बाहुणक्ष* यात्रा करपक्षक
अत्यन्त विनम्र नृ बाहुणक्षः विप्र नृपतिवत् कृत्य मन्त्र चाले पक्षि मीनल बाहुणक्ष
यैः यक्षसक विप्र दृष्टव्यः

पद्म श्री विवाह
श्री स्वामीजी फाटी दृष्टि डाक
दण्डन नौसे रुद्र

टंकिते टंकिते
 हिससे टंकिते
 हिमसे छानि सब दिन बाबाके
 नोटक दिनमे देत छबिने अ
 नेहमे बेस लबुन्ना ठांय
 छबिनेय भे
 तछन बैलगाड़ी पामा केर
 इन्जर दप् दप् बेस बिपुण्ड
 मोल छाम भव कनि भुमण्ड^{११}

११ चतु ख्यापु व्यावतक प्रवृत्तिक उद्गमन केर कहल गन अछि-

ऐनमे बरि छनि
 सेविहारो छनि
 ऐन सतस बानु अछि बरि
 बाबा कहिये केन मे व्यर्थ
 मोच भातमे बहते छै
 सहजहि बाबा कनि जनक
 घाल जवानीमे
 सठमैत कसबह पसेली बरि बरि कू
 पन्ड छेइ रोहुक पुइ
 छाम सौंसे पनपिआइमे
 एही विलखन बर, दू छै
 मात सेर बरि छल मौइ ११

भोजनक सौटक अत्यन्त सहल निज एहि रुपी उरहल गेल अछि-

छनि गधुदिवा पिइही राखल
 मोचि भूनि स्नेहा बरि कनि
 बो के पर
 बेसि पिइहीपर
 बाबा एकदम देसबिनि तनि^{१२}

पन्ध्रवात बाबाक भोजनक आतिशयता शोकसेर आरिज विकृति छह इत्येक संपुष्टि ओ सेत प्रणय अर्थमे केवल गेल अछि-

छनिखल निलकोइ छैनि
 केइ कूइ केइ प्रमाण छै
 ऐन पान पर घट छै
 रनभेन पाणि देखन दू छै
 बड़ी कत इच्छुक रा खलनि
 छल अछि बेरिखल छै
 मोचि बेरि बरि ऐननि छल
 छैछे केवल राखनि छै
 कइ छल त
 दू पुइ बरि बरि ऐननि पाणि
 बाबा केक कत इच्छलनि
 बाबा छैछे छेछलनि छै
 ताकत अछि नेलनि अरिछै
 केर अछिमे बरि बरि ऐननि
 कइ लमलबिन बात सफारि
 अछि केर अछि मोन पहल अछि
 कइ दिनुक छिछलहा कत
 कइ तोहर छिछल छल
 कइ गइ बरि बरि
 हुन्छ हाठक राखल-कटल
 मन बाहिर छैछल नकल काद
 पुइलबुन बरि तोहर बाबो
 छैछ गल दसल जस
 अछिछल छैछ ११

१२ बाबाक चरणमे कनि भिद्यल गेल छिछल छै का शोचमे बरिछल
 १३ बाबाक वरण केवल नकल सफा छैछि गइ भावमे बाधबानन पसल विच्छल ख्यापनक
 सहा वर्णन एहि मध्यमे केल अछि-

तथन छिछल छै छै के कया कोर अपन गरमोजक ।
 सपन छै छै पुच्छि तोहर तनिका पुनि प्रमदोजक ॥
 मोच केकमे दोहि पाइ के छैनक महुम छेसाही ।
 केत राइदिने तँ अरिपहु तो केनह पैसाही ॥^{१४}

१४ अछिछलबन-विच्छलबन कौंस जखनमे विच्छलक शोचमे मरित दुर्भिक्ष

ताद्विपरम् तेनो चहो ।

मेष तारमे आकार नुँद नुका गेसु छी । ॥१॥

(iii) कथा-उपन्यासमें वर्णित भोजन-प्रियास

सैद्धांतिक प्रारम्भिक कथा समय संस्कृत आत्मज्ञान उपस्थान शैलीक रूप
प्रभाव दर्शनाचार हंडेल एहन कथा म मात्र निवेदनक सनकाल खण्ड संक्षिप्त रहेत ।
धर्मात्मा निवेदनक हनु अलक्ष्य काम सैम प्राप्त आपणीक कर्तव्य दैसु नईस । एतदन्तर
निवेदन एकर माँस रचित इक्ष्वाकु राजा शोषक कथा चरित्रक आधार अंगत अछि ।
एतदन्तर अपन धार्मिकताक एकमात्र भेनान अन्वेषक प्राचीन हनु निवेदनक कथा जारीत

[illegible]

दिगर्षे प्रहिताम कम्बु करौत छी । अर्थात् सुपरडर सातव डपर त्वाग सातवर्षे छथि । २५
 भाग छपपटल कौन किन्तु आद किन्तु बाध कहे रेलवे कहेनिक ३ घन्टा ऊपर
 त २५ काग हैत २ शक्ति अर्थात् लाजनि ३ किन्तु २ विषयम गुरुक मज्ज गहि कहे
 लंब तावत शीतल कौन । देखब एक्को लो मकाच रहि काब ३ ३ खरबक इन्जा
 ना सं मनीषाक कहबेन । दहो दध हुन खाएब पुन यथात क टबब करबेन । त
 कांश वस्तुक त्रुटि रहतनि न इन बिना जांगना केन गहि कहेन । को हो इन्जा
 ना बहुत अनेक छपुन कहि गल छै । दिनका आउ दस अवरत घन लैके को
 जो बाबु एते कम न साक नछया नहु मरेत हैके । कतक दू छैक । पाकेश्वर बाबू
 न आब धारि सजमे पहने रहिग औताह । बेचन अतुनइमे अजल मपताल खा क बार
 गेलह । फन्तु हपत नाकनिक कान अगुलह अहि । शीतल बाबू एक चवौ कैया
 बाजी अपन पर अहि । अतुन हैत लखन लाक । को हो चबेनू भयत साकन
 दिग्दर्शनाथक छतु छनुका छानि दिवौन ।

एवं प्रकार भूमिबस्के तेन पट्टी पट्टीबस्के ३ मीन प्रो गमामा कनालन
 होमव समल ।

‘अपन अपन कार्य होइत छैक । हम न पम्ब खाइक, अपन कायपर गेलहुँ और
 ई समय बदल कइओमें भयभाष्य कहीरो और भकाएल इलुअन हाथ फेरय लगलह ।
 भोजन करैत हिन्का लौकनिक दू बाजि गेलैह ।’

धनजयाव शीतल कथामें धनजययक दुर्गनिक धर्मनिक समय अनेक प्रकारक
 भोज्य पदार्थक वर्णन अछि-

‘आहि दिनमें ई इतिहास घन बें मीन अन्तक लक्ष्य हो । यन्तु एक दिवस
 उपगत एहि प्रबन्धम संशोधन करब आवश्यक भऽ गेल । कारण नै बबुआनोको अंकुश
 चाकरक घात मुचि कऽ छांड़ि दलबिन्ह और पौड़ी खानाको डालि बें छेकिन्ह न एन
 फुल्लि गलनिह । अत मीनो पुन प्रेमपूर्वक जणधर्क । इच्छा क कहल्येनह रहि रहत
 को ई कान ज्ञान मोदका घात परस दलबिन्ह । ओकर फलहुम्पाकला दह छैक
 अकन भकल घन्तु तिनका पनलैह किएक तऽ ई घमकदरक इन छांड़ि पुन आ त
 पाचपधनोको बेटो रहि । अकरा हनु फलका छानि दन करधुन और हमर उ
 श्वभारिक दानि न्वाजा दलौह न यानिमें हुदहुद पड़गुह क नम अहि । ई कानिक अन्तर
 छैथ जागरो देसविषा खा क परो अताह । पुन हमरा समयक त सातभागो अन्त गहेत
 अछि ।’

ताहि दिवस कन्हाइ आर्क दू पाक करय पनेक । अतन मध मध बकान
 और सदी हबल्लोक तनु वासपता । राते क दू गड गो हनु पुरी तन्हारी बना क द

अबब एतेक दूध दहो घृत छीनी बबुआनोको काम कार्यमें रहैह । लाहप घचा
 अन्तक वैक रहि । मुख्यमि बात वातमें मीन आइक । हुनक चुगली लगा होन
 कोन । एक दिन मीनोको कहलकैत । १ मलकोचौजी २ मलकोचौजी ३ दमाद साहब
 ईड । तौ कम न खाइ छिय । रहिहा नै मीनो अपन बाधे चारग नाहि दबय लगलबिन्ह
 एन दिन कबचातेजाके चहा । मलकोचौ के पैहयान मध गत होन चार पुरी अण्णा याने
 चण क, घा गछे सांय । तदयाने बबुआनोको घानम अंतक लोहया गन कऽ और पुन
 अघि पदमव लालभिक ।

एकदिन राहु भास बिकाय एतेक । बबुआनोको अपन हाथमें खण्ड काटि पनि
 क, लो रानांधक । इमर खातिर एतेक सरल रहत । एतेक भोज्यओल जायत और
 सीराक मुइसत बनत । मुम्हाइका धानेन सम बाह लऽ कऽ बारोम घाबय गेलाह । जा
 खबानेन इनारमें राति लाब, एतेक लावत एक बिम्हारि ओझाजीक हाथ रावैत मीन
 ऊपर कऽ लऽ लैह । घब और अफमासक राग ओझाजी दिन धरि कुम्भारक खतम
 मुख्यन खलाह ।

श्रीतजी शीतल गन्धम संतो कथा क्रममें अनेक प्रकारक धांजन सामग्रीक
 उल्लेख देखि पहेँछ अन्त । एते प्रकारक पदुर । अमेनी बालुमादी लबललता
 मुम्हाइकापुन और मेहदनाक लदहु अन्तक पाँच पाँच । तकरा गेच तौन गेट
 सोइरा । तामे अम् । मीन और अन्तक अन्त । एक बासगमे दही धक वापरमे
 जोनी ।

उद्यम कोनिक वन्तु अतीमे उनीमे मिलीरी प्राप घृत । गन्धमा पेटिक
 मध्य स्थान दौलक । दुर्गम कोनिक उद्यम । मका वाति नान मेल आलु भाँटा,
 चहोगमे रहल ।

श्रीतजीक कथामें होइत न जोक ओछि चैतिया गनेन । क वडका पालम
 नै किन्तु नैह । ए ओ मीनो मीन लौह बाक । अतन मधम करैत ।

३. अतः कलाकट लेक । आ फियको जागोको बफो । ३ तियका
 शीतल भिजाइ । अतनका पलाइक पालपुआ । ३ नै सने धरन दनेन छिजक मे
 म्पसाधुनी कहेते लेक । ३ कहेत ऐनिकजी मकट म्पसाधुनी हाथम अतीलनि
 कबडाक जागरी लखत । ओके मीनोम राति गलेनिह । बजलाह गड दिवौक । कहि
 भियाय की छैक ?

श्रीतल नै अपन इच्छा कहल्येन । ३ विष्णुजीक तनु आपन छल

एक कल वाताम अखण्ड गेला किममि ओ अपबोध । दोसरा दिनि
 यानपती लेक, अतः, नापी ओ अंगु ।

परिहृत जोक शीघ्र यह मरि सकनै न बजलन झणि विरौक

वैदिकगी घोरका देखवै कहनहि कि एहि अर्थक चहु अर्थ बनै अर्थ
इ अजनाहक मरका धिकेक और इ धिक कुमिषावक परका समुत्त गुनो
रमगुस्तन बको मरि बाएह । एको रती सिद्धी नहि बहएह ।

परिहृतजी उपरका पनरु ईयैर कइनाह बाद अरुवैर कपने अछि ।

वैदिकगी और अधिक अन्तहित पः देखावै मरानिधन दखन देअ । एहि
पारिक बरकाय मरि सखि भवैक आदि बरकामे किमिषिषक इलुआ एहि बरकाय
पिलवक मोहन भोग । आदि बरकामे कंसरिषा सबको ।¹¹⁰

आब परिहृतजोक तर्कशस्त्र मरान पधिवक अथ मरि ओ फल बडलक
अथ मरि ओ घोरका एक कोहाक अथ गोक गुंग एक कोहाक अथ कसरिषा
शबडी तीनु भौटाक मरि बरकामे नहि अटलैक तैं कोहम मरि दलकेक मंडरौ
हासियार अछि आब वैदिकगी बुझयु बड़ गवैत छनाह । अने दुनूक त लोन कइ इमर
आबि गेल ।¹¹¹

इमियामे कोग घडवम कुपड़ । एक कोहाम इहो एक कोहामे जीवो ।¹¹²

एहि तराह कहल जा सकैक अ प्रणम्यवतामे पिबिलक भावन विवामक
वतिरिजत ओ सप्पुष्ट वर्णन अछि ।

इमियामे झाक छट्टर ककाक तारे विधिनि विषयका नरक कोहक
मनारवक गप्प गिक । एहिम मनारवत चूड़ा दही चीनी घाणकवक तब भूमि मरक
महत बाहण घावन बहामरु झावक कवन धपक नरक पिबिलक मरुति
दर्शनाशक इहम छट्टरककाक टटका गप्प इहमि शिवेक मरुतिम मोहन विवामक
ओवना सरस सहज ओ प्रमत्तावक वर्णन भेल अछि ।

इहो चूड़ा चीनी शपक गप्पमे पिबिलक एहि मरुतिम नरक इमियामे
आख्या कवल गेल अछि-

छट्टर कका देनालपर बेचन मरि घाटैत जनाह इमर जवैन दखि बकनरु
हो हो...आम्बर परचाइ रोपल छैक घुमि कऽ अरु ।

हम कहलियैक छट्टर कका प्राइ जवजतो पांच छैक सैड सुचित करव
आयल छी ।

छट्टरकका पुनरिजत होइत बजनाह वरि चार । तखन मरि कनि जगह ।
दु एकटी धरि कालैक तऽ को जेतेक ? हें धांरुप जेतेक को मर ।

हम-दही चूड़ा चीनी ।

छट्टर कका बरु बरु बरु दृष्टिमे भवत अन्कए पदार्थ देह धीक । मोरम
दरि एविलक वस्तु दही अन्कए बरु बूडाजि चूड़ा मधुमे मधक मूल चीनी एहि
मरुतिम पंचा बरुह तैं चवणी मंगन बाक इमर नै पिबिलक आन्य एहिम श्रुति पदंत
अछि । चूड़ा पुनरक । दही भुवलोक, चीनी स्वर्गलोक ।¹¹³

इहम विवामे अछि जे कपिल भुनि दही चूड़ा चीनीक अदृष्टपर तीन गुणक
वर्णन क गेल छैक इहो मरुतिम चूड़ा नमोगुण चीनी रजोगुण

इम कानतइ छट्टर कका अरुकि न समय कथा अदमृत होइत अछि इ
हम कानु नहि सुने कानु ।

छट्टर कका बजल इमर कोन बात एहन होइ अछि अ तैं आन राम भुनि
बकनह ।

हम छट्टर कका विगुणक अथ इहो चूड़ा चीनी म कान बहाव कनिवैक ।

छट्टरकका देखत असल तब दहिमे मरुति छैक तैं एकल नाम नरक चीनी
मरि मरुति तैं रज चूड़ा नरकम होइत तैं तब देखै कइ नहि अपना दंगमे एखन धरि
मरुतिम शिव प्रचारित अछि ।

हम अजयमे एहि दिस हमर छान नहि गेल छैन छट्टर कका व्याख्या करैत
बजलत देखत नरक अथ छैक अन्कए तैं छुछ चूड़ा घातपर रहन अरुकि आगो
अन्कए मरि बड़ छैक तखन नरक दही आरुग मरि जइत छैक तखन प्रकाशक अथ
मरि छैक तैं पंचाशक प्रकाशक कहल गेलैक अछि 'मरुति तब प्रकाशकविष्टम'
तैं एहो तपुमरुति तब मरुति इहम विचार होइत अछि चूड़ा कोहक बरिह दैत
छैक तैं नरक अदृष्टक कहल गेल छैक और विना रजोगुण त विधक प्रवर्तन हो
नार । तैं कोनक वाग वरक आला चूड़ा दही नहि घांउ सकैत छैक आब बुझावक

हम कहलियैक मरुति छट्टरकका अरु जे नै सिद्ध कऽ दी ।

छट्टरकका बजनाह देखत मरुतिम कानु प्रथम विचार होइ छैक मरुति क
भुनि दही चूड़ा चीनी छैना तब पेटमे कानु कय मरुति छैक तैं मरुति अवस्था
विचैक एहि अवस्था मरुति खूब मरुति छैक तैं मरुति कहु थो भुनि बल एका धीक
मरुति एकरा एनु मरुतिगुणक अरुकिम हामक चारो अंगोत दही बरुि हामक चारो ।¹¹⁴

चूड़ा दही चीनीक मरुतिम मरुतिम जतिक विधिनिनाप दिय करैत कहल गेल
अछि-

कर्मिक जाग आ काहिभक्त पणम कोकलोक नील जो अँकोक मीनो हानक धार
आ पाफाक आठपम सोमन हि जाय हँछे उहोकर नाँ प्रल कइ जलवा
दाम इतिपुडौ बेत सिधानति एणो महादक सप मगाँइ केनेत केँ अल पँडेलन
पावगँही भीमस्य सँहसिच टुसपम रोस्ट औ कँडेलगम कहलंत घनोह

एहिमे मैथिल भोजन विधानक अन्तर्गत सहज वान एहि छह दल अछि-

बाह्यिक गंधर्म सोपल सँवत्र ठामप आसन लग आंत कुन मरुग नोकनि
हाथ पैर छी बेसलहुँ काको मारु घान में एलहुँ मरिसो अधिन हने परी बडी
होययल मारु किपलोप तरल कइ हार्य भणारी कर्पूम नुवनिह दहो नो
कलपी अमक अभीट ।^{१३}

दर्शन शम्भक रहस्य शोषक गल्पम पुर्वकक पश्चिममे इतिवर्तिलय जंग्य
कौल अलुअ ओ हलुअक दुष्टक रूपम उस्तु कौल कहल गल अछि

ओ नोक कर्म केने छल तँ हलुआ खा महन जंछ हय अलुआ कर्म केने
छलहुँ तँ अलुआ खा रहल छी आनो गेक जम जाय त इममे हलुआ मति जलत

बुद्धर ककाक टटका मय शोषक गल्पमे अधूनक श्रमणिक श्रमण उन्म
चलाधोषक स्थिति तथा वासकय सम्यताक उपायमे दुशतन घोष पदार्थक क्रमशः नाप
होइत स्थितिक वर्णन भेटैत अछि ।^{१४}

भोजन विन्यासक हिनक अन्त्यमे महादेवि मैथिल भोजन पदमेरा अधूनकालक
प्रभाव अंकन भेल अछि अन्त इकाएत नवगण लघुक अलंक महादेवक विन्यास केने
कहमनि अछि-

कहुन भेल अन्हो पो बाक कहव भेल अन्हो ।

घात भेल दुर्धभ चारुमे, सपन बाकक होर ॥

मरुहु मखानक धाव विकलछ कोक धाव जने ॥

सबसँ बुद्धिक अल खोयसी, सहो रूपमे सेर ।

टाका भेल टकारी, कस्तुक हनु मखल अछि रेहु

धर्मवाना घक्का लाइत छाम पापीक हल बटेर ।^{१५}

एहि तरहें इतिवर्तन बाइक बुद्धर ककाक तरंगमे विन्यास भोजन विन्यासक
सहज, सरस औ मनोरंजक तथा विमल वर्णन भेल अछि ।

हिनक कथा रोह शैलानाममे गंधत अँकारक पानिना आ आदर्श भोजनमे
खाम कऽ पाज्य सागरीक मध्यमे कथाभूत जाहल गेल जंछ अँकारक पानिलो

अँकारक एह उपां अँकार टसरे धगत नामक अउस कह आन गल अछि। अँकार ते बाबू
अँकार छैक गुदग मालदह जामक एहन एहन हरिध पांक छैत त को कह
अँकार छैत कहन तँ मखलन उको छपछप तेनम इबल छैक ममाका तेन चादुका
त छैत छौ छानि न खइ एहन अँकार हम भँह गेल छलहुँ ।^{१६}

मरिह गान अँकारक अँकार अँकार जन्म कलह तथोपि उकार लपचलक अपा
केनक मवनन आन दभोडक एते कयनक मध्यमे अभिर्जात भेस जाइ

दमड बाइल को करै छी बाबू तेन का कऽ छौह दमडि हम्म कहलनि
त रहै कोक बंस पटोक तहमे केँ आ सोम सबबोबग छामि एन्हहुँ कहहु नहि
भेटत । अब मसलपुर दिस जाइको ॥

को जने छी बाबू जतहुँसँ एक भटिल अँकार आवि गेल छैक बस भेकार
चन कर इतिवर्तन त आन दनु सोइ अँकार संग छानब औ बाबू अँकार बाबूयो छैक
छेबा बर त उपय अलाव नै छैक नाँह । आब हम्म हरोन करैत छौध कहू ते बाबू ।

अहसं भोजन शीघ्रक कथामे नचुगपैधोकर सन्दर्भमे आधुनिक पंजनक तुलना
कयल भेल अछि । कथाकारक हृदये-

अमु निवत भेष पर मित्र मंगदव हमरा घोर मऽ गलाह रईम त रम्भे
जगैत मुनो कयलजो गलीचा बल आसन चालीक चमकील भारी चाटो-मोटा
गिलास दोख क तन इयन मऽ गेल दूट आसन लागल गय एक हुनका हेनु,
क रम्भ हनु मित्र मंगदव आदरपूर्वक अपना मंग बैसौलनि ।^{१७}

गुरुधर्मक अधून विन्यास प्रकारक शाकाहारमे भोजन सागरी भक्षक वर्णन
एहि स्वरूप अछि-

जंजन क एक एकीक कागजो नेहो दूत धागेम राखि दंतक तंदुत एक एक
अँकार पलीको मागक पँहो कतग नमनज कतगल पतौ । एक मुहो अँकारम मुह
अधिन बिबिध बादाम ६ चांगरा शबर आ चुकन्दर चणि चौंछा लाल लाल
टमाटर अन्नन चोकरक एक एकटा मोटया रांटी । भोजनक वैज्ञानिक व्यग्रता करैत
संगुलित भोजनक सूची एहिमे देल अछि :-

रहु गेलम मय इकाक पेटैमिन मरल छैक टमाटरम पिटेमिन ए अँकारमे
विटैमिन हो नेहोमे विटैमिन मो यवक चीकमम स्टार्च और प्रांतिन दनु भनि जायत
चुकन्दर १० दल ३ बिबिधकादाममे सेर चबो पलीकोमे आयरन लोहा
गुडमर चोकरक दंतक अण मलाहम फेसफास कलकक अधिप्राय ६ अ
शोषक दनु १०५ गमक स्वरान होइत छैक म मधुत रोह भोजनमे भेल अछि

गे भलउ नजि तारा १) यानि छन-छन जगल आइए। यानि याने तेल धकलन एकवैरु काल तेलक चप लेने बेसी तेल जेत छैक ।¹⁰⁰

समाजक विधान लौकिक सेवाक भावनक पूर्ण स्वरूपक नया स्थापनाद्वयक विचार शून्यताकें वर्णित करैत कहल गेल अछि।

पुत्राजौं एहि गुइहो पूर्वो ज गुइही खीर बढा के दलकैक छ दवर दवर खा गेल मुदा ओकर मोन लगल छलैक उबरा तमचउ पर। धरिए धां ओइने आइने गेलह । गुइके खीर से गायम बौन्दुलब आ यौगे पमारे लए बनल छलैक। मुखाक विभागमें कहिया कतउक खीरक स्वाद गिरे कि पान डैर छलैक । एक बटो खीर कमल एक कौ मुँहम चगा कऽ बटौने राखि दमकैह आ कथक मय भोगी मुखाक आगौन धुयका इलापिन खाइ लए एह बे आशाप कल । जगत बर नै कमनक मुँहम पमिअरहा भेल छलैक ते कमलक मायकें कगो ई उटल दमक देन रहनि ।¹⁰¹

गंगा गृहनक पिता-पुत्र संवादमें वर्णित वैधर्म्यकें भौत्य पदार्थक आगमन चित्रित कयल गेल अछि । दृष्टव्य अछि विपन्न वपक रसायनज्ञ तथा समान्य वर्णक संश्लेष भौत्य पदार्थक विश्लेष -

तावत बापस मऽ गेल रहनि । ओ आंलहिमें सख कल्लायिन ते बाप बंठ दुनु सोदय उठि कऽ खायल गेलह । कग बजतकि जेना राकमें कांता योष वैसि गेलैक गमनाय बुझलकैक आगौं कन्दौलक छतरक पन्थ ताहेत बात होक । भटफ भुंझाईक दालि कांनहुना भात सनि कऽ ओ दु भौन कथोर रोडैत छट पर धरि पोबैने ओ केका रहल । राकमें गयम भातक बचकैत भाप लगेत छैक । छुछ आ खोराईक धनिबोह दालि । ओ बीचम हाँडैत उठल आ हज्ज घोड़ा सवारन । पाद कतवा कइमोयेन स्याद अ नहि बैसल । ओकर मंग फेरि देन छैक ।'¹⁰²

कथ पंथ पहिनुका एकटा बल यन गइल छलैक गमनायकें । क दिन उ रमेशक आँगन मल शेष ते पन्थ खाइत छैक । आँगन गमकौअ चाकरक भात आ होकामहा दालि आ तीधन तरकारीक मुगचि जेना आकरा गौय दहप देखि गन छैक परि आँगनमें मुगचि पसरल छैक । एह अण स ओकरा नाक आ मानमें देखि गन छैक ओकर ओरवध भेल छैक जे एहन सुन्दर खानाकें अपने पन्थ कऽ का उठि गन छैक जे नै नोक लगैत । गेट काम दुधक भरण बटो आकरा पमारे खाति क । दलने गेल छैक । मुदा एखे छौ अपसंच नहि ।¹⁰³

कथाकाम शकरदल्लाक दोषकथा चार्त्तिक संपीठम् पात्रक विधान उ भोजन क्रिया तथा उपकरण आर्थिक गैवक चित्रण पल भोट देखल जा सकैत । केथक किछु अंश-

मक गत्यकें मुख लगने छलनि । सीरौमें पाज्य पदार्थ टीख बेना समयक बहलनि शक्ति बर लौउ मऽ उठलनि । चन्दा आ रेखामिअ हुनक सहायतालन रहलथिन । कगक बोट पक हरिया हरियर घात ओछ ओहिपर मचाय लगाओल अथ लागल । किछु क्षणक पावच कर्वाइ तसै तरकारी धुजिय, भोजन मधु दाी बीनी खादि बस्तुक पधर लागि गेल।

उपलब्ध काने मेकाय नहि भलनि । ते हाथ आ ग्रेह दुनु मुखा कऽ खकदिट गेल छलनि ।

एन आ यकंठ विमनाटवोक हाथम उजलनि । ओ अकर फोनि बाकूट भि क । चक हुरियर कचार दछिनो लागि योफि अ टुक कयल मुपारे दलथिन ।¹⁰⁴

प्रकृत आधुनिक वैधिली कथासाहित्य भोजनविन्यासक वर्णनमें संपुष्ट अछि आ एहि वर्णनकें एकटा व्यापक आयाम हरियाहस्ताबूक कथासमये संसैक अछि।

उपन्यास-

वैधिली उपन्यासहमे कथा तथैक अछि । वर्णन वैराद्यक अछि । भोजन विन्यासक यत्र यत्र उल्लेख भेल अछि ।

वैधिलीक प्रारंभिक उपन्यास सभ जाहिमे मिथिलाक नरी समस्त अथव वैराद्यक सम्प्रदाय बहुविध चित्रण पाइत रहल वैराद्यक कार्यकाण्डमें सम्बद्ध भौत्य लक्षण भोजन विन्यास आदिक बहु उल्लेख भेल अछि । रामकृष्ण झाक कथावाच उपन्यासमें मुड आक पठन उन्मादक लक्षण उल्लेख भेल अछि । सामाजिक दृष्ट उपन्यासकमे पाक क्रिया ओ भोजनमें सम्बद्ध निर्मलित्वित वर्णन अछि।

कृष्ण सिचडंग संतत अछि धरि अलए न अलकि । एहि आँठमसँ आनु बोजक सन ईलाय । जगन बलगाह मय आब अखैत जेन भोजनभोग कल । एह लेखक जेना जेना पुरानक पत्र पेट होइ ते तल पन्ताक लुटल अछि । एह लेखक कृष्ण नवल उगलनि । किन्तु बलगाह का जेन गेथ दलैत लाहौर खलाय कऽ उठि गेलह ।¹⁰⁵

एही उपन्यासमे अन्यत्र उपन्यासक भोजन विन्यासक संक्षेप विधि अछि।

पन्थक गेहूँ स्यादा । त म दूध अछाँकिय नवयवक नाम । नामने कथीय दैसल छल । वाकन मल्ल गमनायक उबल गेल अछि । आँठम चाक बात लाल लालक कुवदामें गमनायक विन्यास भेल रूप मज्जाल गेथल अछि । बीचमें नैदय वगैरामें गानो । कान दमरक पावहर हाँक वृण । मस्टईकिक मल्लक भरण । ओ फोडन स्याद दूध पेट बकल नीम गछल अछि ।

धातुबन्ध का मत हीटनक स्वरूपका जति क विभक्ति रूपा गण्डक सत्यत करे
 ठाह पः गंत अहिम एकगती अहीन नित्यिह द्य कप प्राय रं पयतर न पतत
 वेरिदेवल कते रसदय नकारे द्य ता चीप औ वीर ए मयं रमणम् । पौं
 धिनटक भीत आधायस अधिक रूढि चेत्य पाला और शक्तिसी धि एत । अन्य
 धुपनाना हूँ अशक्ति नयाम् क्त नन आहत और दबलप र्णो रमक । हूँ गत
 निम्नलक्षित गणयण करैत हूँ कौत और अयन = धोहत कते गतपुष्टक हनु
 प्रस्तुत चऽ गेलाह ॥१॥

हिनेक द्विगमन उपक्रममें आनोप गतेलाक जेतनप दैतनक पावन विन्यासक
 प्रति मयद्वतक वर्णन करैत कहत गत अहि- हला मयके त गक उह दैतन स्तुका
 चेत्य व्यापत पः जाइ अहि- आरन-कते सुत्राएन अहि को गते । अन तोपनक
 आरिअजान अहि को गते १ पटक धंय मं जे करो ओ ५ आषा गंत क ज्ञाएन गे
 छी । भौतिक चाय छोटए सै दालि हंहुबर्म तिनकर विषय सै चुनि फुकय सै जे
 ज्यै होए रखन ने हमहुँ मैदानक हव खाइ न ॥१॥

एहि उपन्यासमें बा-विरिशीतक विषय हयौषिकक धौवनार तथा लक्षकम्योके
 उक्ति सशम द्विगमनक हेतु प्रयत्न विविध प्रकारक वापन तथा धौयक शक्तिक विवरण
 आवल अहि- रंग-

भोला- तखन कतिन-खसन चाही ।

भा- बारी चाटी मोटा भिक्षम बटुक कड़ाही करब, तयबैल-अविवा

भोला- तखन येका मजाम्ब सौकर नइ छैक ।

भा- सुपारी लीग अहीनी दालचनेो सांतल चोने खफर जविही

भोला- तखन बरक किधि होमक चाही ।

भा- चुपाजानक आरिआजान हाजक घाते धौन-रक मयार हंनक चही
 दही, अहीन, पान, पधुर

भा- तखन कतिवातकेँ सौजन्य करकऽ पड़ैत छैक ?

भा- त संचारक हेतु पूरा बनाइ पड़ैत छैक बड़ बड़ी अदीम दनेतो
 तिलारी, पाप, वाप रै बाप

भोला- ताही ताल त दू पास पक्षिनि दिन मन-आंस आइ छैक

भा- त दही भाइक धार अरैत छैक कन्याक हेतु कर्तव्यक नूना अरैत छैक
 से पहिरि क बने कने छैक दंतन तल वकरन लगे छैक अहिन अहिनसै खाक
 गने छैक द्विगमन को कनिया पुतरक खन छैक जे चर महरा पट विवाह ॥१॥

रहिमं अतिधिकी भोजन विन्यासक रीधिल पयन ॥ तथा अधुनिकताक धौवन
 पद्धतिक वर्णन येल अहि-

यम पावन कच ज्ञापत अहि ड कुंछतिरि गम स्त्रोण तपश डेडक हनु
 उरुं ड पल्लो- चुपनुन काको पैर कअबक हेतु एक पान पानि लउकऽ तहि धोनीह
 केतु यम धौडि- हूँ पतक रीडिनि अयनर वीन पल्लो एहि पर पालि टहाका
 डल ॥

होके- हवक कारण रम हूँ मरि कऽ रहि कैमि सकलोह हूँ पैर पयानि
 कऽ आसनर बैसय पड़लैह । एहिपर होस टहाका पड़ल

हूँ कोटक नयम चर मरके धान हातिक कोर पहि बगबम एमैह
 आइ सै डेडम रीडि अरि पडक खर खरि नडैक अगल्य अं एक एकय मत मुँहम
 दनय लगनोह । एहिपर तसर टहाका पड़ल

यम अरि- य उड़ादक बड़के अभिले जको लौटि गाय लगरीह

त चुपनुन काको जाला धप चड का पहुँचि गलधिह मंसस अग्रह करैत
 कलधिन- बहिनद और किनु धारिह ?

नक तूया डबलक पनीपर लागल रीक कहतधिह कुछ चीज मंडाईय

हुनपुन कोन चीज लंतोह ?

यम मरिक्लर एहि गलोह कहतधिह चाब चाव रही सौ एचई एस
 ड जंड यम चरण के हंड पड़लैह जे धं अहोरीय पाणि एहि रहल उधि
 एहिपर पौयम टहाका पड़ल ॥१॥

ये उज्ज- पौषकक धौयक सह अयन स्वाधायिक गिर लोहल गन
 अहि । धौयक पौषक वर्णन करैत कहल गेल अहि-

पड जालक जेतनम हो मारटा तिरा लोहल गल छैह एहि पर बटका
 नोहड यम चहन मर- जेतनम चाहर जाला दालि खरकि रहल अहि पाकमल्ल
 लोहने कोए पडने अयन अपन मचापर डटल छधि कंआ टोकराम बाँपक कीछी
 नक क छौह जल रहल हंडे काले खजनहराई ज्ञांयसै धन छानि रहल छधि कंआ
 बटका टोलिहो जेतन छधि गंधक दह घाम- रसोन नरबतर मल लेक किनु होध
 अरैत लर लोहल जेतन क गज जलक मपादेक अरैत छिन्नु नराग्रपर अरि मनीक
 खरक जाला जेतनक जेतन अरैत एक जेतु अरिह अरिलक हनु निहुइतक वि
 अं योको डप दऽ खगैह सानिमे विनीच चऽ गेलैह

परिचय दैत कहल गेल अछि-

अहाँ त इस दिसेँ काँचक हाथे चाहँ जलखइ जनक आ पावन को कस
बैसब अनिचार कय दन छपहुँ चाबक कतक वा न जगसकँ नदफन हुनि कंच
आ कानजम पढैत काल प्रभुनिक नाटन नमम करनइ दमनिकँ जन्मजगजँ
मरि तरई खाइत दमैत छथिन्ह मासुम उधम पणन नकदइकँ कहैत छथिन्ह अपन
हँ खाइम : आ ई मय एहना परमाथ पढ़न गयम जल पित्त पुत्र एक आयनपर केनि
पावन रहि कोन छथि बिना एकदइहो कवन तश दंग अपैत अछु नइ जमन बइच
आ मय केजो अंग छान कर माथक बाइक गाँव त खाइत होय धौवन कोन काल
एक दोसरकँ छुनि मय गेल सँ अछि जइत छथि ।¹¹⁸

योगानन्दसक भक्तमानुस उपन्यासम विविध स्थानपर धर्म पदार्थक एत धावन
प्रणालीक वर्णन भेल अछि । मध्याह्निक कर्णक क्रममे उपन्यासकस ईश्वरक पराजय
भावतत्वावुपताक निरूपण करैत विविध प्रकारक भोजनपदार्थक वर्णन कइलनि अछि ।
जेन- पहरामे विद्यार्थीलाकनि अपन अजनिदश दोषवत्क विज्ञापन दिनुक परीसँ नै तइत
शरिना गोटी लाल घेलपर उपरवाओकनि अपन घरेक नथ मत्रमपदार्थकँ इन्कवाइक
दाकनपर लउ जाय तुल कउ दैत छथि । गरीब ब्राह्मणनैतिक विद्वान्कँ पुरी-माकामे
रसगुल्लाक सुन्दर भोजन तथा काहणसँ तुल दोषवत्क सूत्रनँ सेवाक सकस्यत पढैत
छथि । फाइक फुटहा बहुआक रोटी आम्बुआ तथा खेमरोक शनिमँ खीकस तौल
घनिक मधुमिक तथा अलु मुद्द मुद्दमलक अनुकम्यमँ मधुमसँ तथा इन्हनिक
जाय परमपद प्राप्त करैत । ई रोक निकुन मयलसँ हिनका ज्ञानव शक्ति तथा आयन
होइत छन्हि । जेना दुपिषक परत बंगालकँ गँव पड़ैक बेर फाकर भोजन फलक
होइत छलैक ।¹¹⁹ तथापि लभ्याखीमे कमसँ कम ५ लोच गहोत नच छैक । हफ
लार्थ कमसँ कम दस पदइ गँव फकर खर्चा खाय गइलैक अछि । समय इतपर दूत
तरकारो गुलाबजामुन सातोंचरक लइबु आय-कइहो तथा छौं दहीकँ जल न मुकैत
अछि ।¹²⁰

एहिना विधिलाम त्रयइक प्रति भापरक एक एक भोजनकँ प्रदुति तथा
जमाइक हेतु भोजन विन्यासक पाण्डितिक आ भान्कनिक अर्थकँ इन्कवाइक गयक
अवरोधक शसुवासक क्रममे आकर दिनब्योकि रूपमे प्रस्तुत कोन कहलनि अछि । मान
सात मनुष रात आ जगदोश करौड मास दिन घनि छलैक नूनि उतायँ कि दूध पिओ
तैयार रहन्हि । मान कार्थि की पुरी तरकारी । बमलकँ किहु कालक शरमँ भोजनक
हेतु आग्रहपर आग्रह होमए लगन्हि । खाने भूखटा लगबाक दसै इति । अँधुआ भूख
रहनि तैओ कोखन सामुक लागइमँ कोखन चिमिक सामुक रहओमँ तँ कोखन
ललितक बलभोरसँ किहु नै किहु खाइये रहन्हि ।¹²¹

उपलब्धक रूपमे बनाइक हेतु शास्त्रे गरी छहओइ दाव किसिममे धिया
दानेचोरी दहिनी अण्डो इत्यादि दाव फलक उल्लख भेल अछि ।¹²²

इन्कवाइक प्रमाणक अवसरमे पंचनक कर नभमँ गहने कनेचकँ भूइ
शुंइ शरमँ मन ड पय दैत नै दसुर कलक । तरब पावे पिओओ गल नँ मान शीतल
इत्यादि । जे जेन दार । पाण्डितिक मोक्षल भाववैयक्तिक विज्ञापन अशकँ भिन्न
कयल गेल अछि ।¹²³

उपन्यासक तथा गौतम इमाइक सुशिक्षित व्यवस्थापक इहो वैयक्त परिवारक
चित्र दइकाल जेन कहलनि अछि । दन पांय चार पांच नै कलक तइक ठम्पु
जन्महुमँ जनबोइ । प्रायक दोषी माछ आ तरा दिमए छाग भय सुधीवरँ हास । तरा
किंजल किंजल क मधुर आबए आ दू दहीक कोन । तरा । यद्यपि चमला अमकताहि
रहोइ नैक । उल्लखइ हेतु इन्कवा सेव इत्यादि जनबोइ आनस्य रति हांय रहि ।¹²⁴

चन्द्रमधुमि भक्तक किशोरी उपन्यासमे विविध प्रसंगमे जनकनक भोजन सम्बन्धी
क लक्षणाए वर्णन भेल अछि । जल मदे गहो आब तौदैन रह किनकोइ । जइ
तरुआ नँ मुड़इ । न नदपदही ज भइते काँटए रीठ बटिहमे दही सकरीइ, भेन
अनुबन्धव छतोक, कोन बाटोमे हाथ दिअ कोन बाटोमे रहि ।¹²⁵

एते मध्य चरममे गतिहार तथा हृष्यरो जीवनिक भोजनक वर्णन भेल अछि
आ अजिब शरक । आयइ जेन विज्ञापन स्वरूपक अछि । रहने तँ बाँयाली पैविहार
लोक इहोत । जइ भइ दही सकरीइ । अफरि अफरि खाइत गेलाह । मबलोक
मक सक ।

उतामे हृष्यरो कटिहार काँ गीत पहुँचैत भेलथिन । हुन्का लोकनिक
विनयान हुन्का हुन्का । रति उणम्य दवता पढ़न हँइ तँ सोपेन्द्र गजेंद्रक कलाना
क । जेअ किन दालिपोजँ जाम वुटौत छलाह । रंग विरंगक एक प्रकारक आभ
हुँ तस कका रहि । जे सकरीने । कटी खोलु, बमल । मलदह गुलाबधाम,
नखीखर भोग गोपाल धाग । अब त कलसँ उठम दस ठाम उपलब्ध होइत छैक
‘जन्म सग्री आय मे विरंगक वुटौत छलाह । जे । कर्मिभाकरी, बसताक कोरी
मुसुकीनी किलरीकाल, धिपिप पलार, विजुमोय ।

जइ मेर जल जगमे कउ भोजन करैत गेलाह । फफटा भोजी होइ
छाँचोचोच रजँ जत न । एक गदकँ एकठ आय न । दलकनि मुजमेयँ कने पैष
जइक नइह । जे हल्ल छेनि । नय भइ अपुवं छैक । मुजानसँ तँ ई मानत गैत
रहै । एकठ आय बक कोन । कयस घा । किओक धी । घा । आपाँह एमल रहैत । किनु
उ । इ मान पुर । जेतामे तनिक दुदइत भेल छनि । चिकार जनत लोक तँ ई जाम बड

[illegible]

हट हट गट-गट गटक गिई कबि राख रही भँव घूझ ।
 दुनु एक बेरि घनि दै बलि घनि कात फसेलनि गूझ ।
 धिरेक विहलनि पुनि भगुनैल सइ सइ कइल मूझ ।¹³²

एहि मंदरकन विदुषकक भावनक अनुभावक क अन्तर्गत ह-कानक उदाहरण
 भेल अछि-

मथका हँ 'गिरि' कवन अ मथ असेन 'गिरि' कवन 'गिरि' कवन
 विदुषक हँ नर राम कहैत पै छी त नरदू 'नर' कवन अछि तही रह
 कऽ मधुर स्वरै 'हम' कोना भाउ ?

सूत्रधार आब तोड़हि अधिक लहइ देनइ ।¹³³

कैतक सामवनी पुनजैस नारकन अनेक मथ घाँव नोकर' मरिहँ 'नर' कवन
 प्रसंगवात् भेल अछि

कलिधुगक प्रवेश गीतमे लहसुनक अलख भेल अछि ।¹³⁴

दखनक वर्णनमे फलादिक हुन आकर आतिथ्यक अलख भेल अछि ।¹³⁵

विदुषक घसनकक भोजनप्रियक अलख आकर इति वं लहइ मथ खु
 क कहै छी' हुन उदाहरित कवन मथ अछि ।¹³⁶ नर नारकन विदुषक अलख
 मिथिलाक परिवादक अनुरूप धिरेकानक दहि पौरवक अलख एक मथ मरगवाएक
 भेल अछि ।¹³⁷

चपलाक एक उक्तिमे पेटक इति अलखक घन अछि एत अछि-
 चपला-(आबि कऽ) कतय गेल ? एकर कहियो पै पेट परै छैक ।

खन-खन फाँकब झुझ-झझ । दौत निकालल महण तइ ।¹³⁸

मथ उक्तिमे महजकक विषम खोए लहसुनक वचनक प्रयोग अछि ।¹³⁹

जोखनाभद्राक वीरवन्द नारकमे विदुषक घाँव विदुषक अलख पुन वि
 अरहल गेल अछि ।¹⁴⁰

एही नारकमे एकठाम मथ खयमा उतर घनकक अलखक इति उक्तिमे
 माध्यममे अभिव्यक्त कयल गेल अछि ।¹⁴¹ एहि नारकमे उक्ति मथ बटक मथ उनेक
 विष कचगकट भेल ।¹⁴² नर नर गिरि' उ अलख मकक क' इति ।¹⁴³ क कहनाम मथ
 हमरा मराक दइ देनक' एह खुब बनहै ।¹⁴⁴

पुरा वैदिक साहित्यमे अछि नरकक भोजन घाँव घनकक अलखक उदाहरण ।¹⁴⁵

अनेक मथि उक्तिमे लहइ ।¹⁴⁶ इतिमात्र प्रणीत एहि नारकक मथ विचारमे घनक
 मथि उक्ति 'नर' मथ अछि ।¹⁴⁷ एकरा 'समूह' मथ कयलक इति भिन्न दुनो पार्श्वक
 चरित्रक अलख नर मथि उक्तिमे प्रयोग कयल तथा एहि क्रममे अलख पत्रक मथि उक्ति
 कयल अछि ।¹⁴⁸

नारकक कथापकथनमे विभिन्न प्रकारक विदुषक नामावली तथा घनक
 लहइ कथापक प्रक्रियाक वर्णन भेल अछि ।¹⁴⁹

वैदिक साहित्यक अनुरूप एहिमे घनकक अलख भोजन मथि उक्तिमे
 कथापकथनमे इतिमात्र अछि ।¹⁵⁰

अनेक मथि उक्तिमे घनक आरिआन तथा भोजन घनक मथि उक्तिमे
 एत अलख मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे कथापक विविध प्रयोग अछि ।¹⁵¹

एतअन एहि नारकमे चरित्रक अलखक मथि उक्तिमे विष विषित नारक
 लहइ नर' मथ अछि ।¹⁵² एकर उदाहरण विदुषक विदुषकमे एहि अलखक मथि
 उक्ति ।¹⁵³

मथि उक्तिमे नारकक अलखक मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे
 विविध प्रकारक मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे
 मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे
 मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे

एत मथि उक्तिमे नारकक मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे
 मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे
 मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे

एत मथि उक्तिमे नारकक मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे

मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे
 मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे
 मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे

मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे

मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे

मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे

मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे मथि उक्तिमे

गहुआ कटावू मई ।

मंडी गहुआ कबी लय ?

चिकस पितावई लय ।

येहो चिकस कबी लय ?

पुडिया म्कावई लय..... इत्यादि ।¹⁴²

आहमाया पैथिनी सांकरांतक अन्धान येक गुण्ट केक एकटा बारहमासा लरेक कवि मिथिलाय गेवन येक मोचर वन मायकक हेतु उपनयन भोजन म्काया खसाराक भाग छिम्पि खसाराक दालि निकुल अरक अट्टे पकुअ नवहाक गेल अर घाटक वर्णन कयलनि अछि ।¹⁴³

पठिन एकटा बारहमासाय पिल धिन मासाय उपनयन हाउ-बन माछ सभहिक वर्णन भेल अछि । ई सिद्ध कएल अछि नै की मातृक देव मिथिलाक भोजन विन्यासय माछ बारह मास अन्विषा खरदय अर्था उपकुल मानल गेल रहल अछि-

मास हे सखि सभस अगहन भूअल बूझाक संगे खे ।
तरल चेचरा माछ धुसुल सभस भेल परि येन खे ।
पूस हे सखि अन्न नवका संगे माझुर होर खे ।
कच्छ कुरमु दौल दबाइ काम जन जन सोर खे ।
माघ करी जाइ घर-घर कोपय जन बह कोर खे ।
सुख कोअरी छंड सखि कय मनविनोर मिषोर खे ।
बइल स्वादक माछ टेंगइल रानल सारल भान खे ।
चैत हे सखि रोग सपदिन रूप नगा देखि खे ।
तरल मुन्य सखि सखल खरद बड सुख सखि खे ।
मास हे सखि अन्न पहुंचल मरम बह कससाख खे ।
मेल मन रुचि मल मंगर छंड सभ दिन साख खे ।
जेठ हे सखि जेठ काखा गुण्ड माझुर फल खे ।
पहुनु बिसरतु अन्न ससरतु करु नवका मल खे ।
मेघ सखि बरसय अणवक बर ससाक दारि खे ।
तोड़ि काँचे आम अमिल देल सौरा पाल खे ।
भास हे सखि अत्रोल साभेन परल मण्ड मेट खे ।
तरल बइही माछ मला खाधि धरि धरि घेर खे ।
माघव इधर भेटल कहुन खाव मालहु काँठि खे ।

मास आधिन देव पूजा हाँख भंय नाद खे ।
एनि रहूअ माछ बइसब पूर्ण भेल परसाद खे ।
मास कालिक नहि महुआ बइइ तरल अपूर्व खे ।
मुरल बारहमास हरिनाथ गाओल सगर्ब खे ।¹⁴⁴

एकटा दोसर बारहमासाय मंडी एही प्रकारक वर्णन भेल अछि-

मास हे सखि सरस अगहन, भूअल बूझाक संगे खे ।
ठंडल चेचरा मल रानल होरई बहल लेल खे ।
पूस हे सखि अन्न नवका, रानल माझुर माछ खे ।
गुड़ मिलि हम पलै रानल, अन्न ने बौचल प्राण खे ।
माघ हे सखि जाइ भरी, रानल माझुर माछ खे ।
गुड़ मिलि हम पलै रानल, अन्न ने बौचल प्राण खे ।
फागुन हे सखि अन्न पहुंचल, आयल पलमाक ओर खे ।
संदैत मला अन्न सगल अन्न नहि बौचल कोल खे ।
चैत हे सखि रोग बहु बिसरै रूप नगा बरस खे ।
हरी भूटनी होइ रानल, बंद करणि दवाख खे ।
मास हे सखि अन्न पहुंचल, आयल मास बैसाख खे ।
मेल रुचि ओ प्रेम माछसँ अन्न नहि किछु चाही खे ।
जेठ हे सखि अन्न पहुंचल रानल माझुर माछ खे ।
गुड़ मिलि हम पलै रानल अन्न नहि बौचल प्राण खे ।
माघ हे सखि अन्न पहुंचल आयल नवल अखाइ खे ।
अन्न दव दव होर रानल होर भेल बह गाइ खे ।
अन्न हे सखि सखि मुहावन रानल देखा माछ खे ।
गुड़ मिलि हम पलै रानल अन्न ने बौचल प्राण खे ।
माघ हे सखि अन्न रानल संगे कोतरी माछ खे ।
अन्न हे सखि भू रानल भम लेल प्रसाद खे ।
कालिक हे सखि अन्न पहुंचल खे बैचा सख खे ।
मेल रुचि ओ प्रेम माछ सँ अन्न नहि किछु चाही खे ।¹⁴⁵

एकटा सांकरांतक माछसँ धार्मिकताक सग अन्वेषणक जाँड पारजक वर्णन भेल अछि आ एते अर्थमे विभिन्न माछ खरद विभिन्न तौरपरक कथन अछि-

महुआ घीन के सने हो कहि गेल खस कबीर ।
 सब संतन मिलि खाउ, निर्मल होइ शरीर ॥
 दरही रस काया अति फलक पोषिय प्राणाधार ॥
 नीनी नाम नारायण के सखी सने ठरार ॥
 नली बज्जा बनकपुर तीरथ, कही कबहुँ कारो ॥
 झिग जल बवाग महातप सिंही मधुरा खासो ॥
 कुरा से सुखेष्ट छानिअ, खुरा खर ममन ॥
 रहु, रेखा, टैररा बुआरी, गैली पढ़ै कुरान ॥
 भाबुर त्रिकुर भवसागर तहरे बेलगुन चढ़ै धियान ॥
 सब तीरथमे मछी दान एकदा मिलै गेल असलान ॥
 जगफल जगदम्बा करै ब्रह्म सब मिलि खाउ संसार ॥
 रहु पूझामे नै पढ़ै तेल स्पृह बोल्य इन्दकीं टेलि ॥
 ताहुमे नै अगिअ पढ़ै की कसो से भरे तहै ॥

एकटा कोकर गौतम सामान्य जीवनक बौद्ध ग्रंथक क्रममे ता द्वारा केनेजाके
 भोजन निकसबाक आग्रह आ कनिश्वी द्वारा तका अस्वीकृतिक वर्णन अछि-

भर पशुआरामे नख पोकसिक ताहिमे रहुअ कोआरि हे ।

तहि पोखनि न्हाय गमा दुनह, से फलवा दुसरी पाणि लेन रहुआ कोआरि मे
 काही गला किए भली मुहमे से करिआ मुहमे भोजि निरुअ रहुआ कोआरि र
 मारगहुँ से मारगहुँ प्रपु बह बेल कयलहुँ हेलावे न्हि हएअ बनेदल ह ॥

साहर लोकगीतक ओ दुधमे धिक बरिमे प्रुअ इत्येक उपनिषद् गंध अतिरिक्त
 समयक धर्मांग आ पुत्र अतिरिक्त सुखजनक वर्णन गेल । सब कल्याणक धर्मिक
 अवधिमे सामान्य आदर्श अछि जे ताअ लगेत हेअ एहि ओ अत्यन्तक वर्णन अछि
 सोहरमे भेरेछ

प्रथम महीना मोरा फालिक छह मे ननदी
 कुटल जावक चार मोहि ने सोहछ छह मे ननदी ।
 दोसर महीना मोरा अमहन छह मे ननदी
 राहिक दालि मोहि ने सोहछ छह मे ननदी ।
 तँसर महीना मोरा एउ छह मे ननदी
 लाल लकारी मोहि ने सोहछ छह मे ननदी ।
 चारिम महीना मोरा भास छह मे ननदी ।
 अठ्ठल दूध मोहि ने सोहछ छह मे ननदी ।

पंचिम महीना मोरा फागुन छह मे ननदी
 सामुन्दी के बानिवा मोहि ने सोहछ छह मे ननदी ।
 छठम महीना मोरा जैत्र छह मे ननदी
 फलल बीरा घन मोहि ने सोहछ छह मे ननदी
 सातम महीना मोरा बैसाख छह मे ननदी
 भूजल धुबिका मोहि ने सोहछ छह मे ननदी ।
 आठम महीना मोरा जेठ छह मे ननदी
 पिया के पानिका मोहि ने सोहछ छह मे ननदी ।
 नवम महीना मोरा अषाढ़ छह मे ननदी
 राहुन सधोनिवा मोहि ने सोहछ छह मे ननदी ॥

एहिना एकटा अन्य ग्रंथमे अधिपति चरदगर दम्पति इति रुचिक वर्णन संगे
 अत्यन्त सख बेल अछि :-

रुप नखन रुप मास व रुप दिन मोहि गेल हे ।
 हलन रुकामि छह गरम सरे धने मन खिलखलि हे
 ललन होलि-होसि पूरणि श्रीकृष्ण सुनहु एही रुकामि हे ।
 रागी कजोने-कजोने फल पावय कहिअ बुझाबिअ हे ।
 लला इत्येकिय मनमे पावय न्हायिअ देखि हलि अकम हे ।
 उवा जेठ मे बडनास क दिबलेलवा चटनिना मन पावय हे
 एवा लख कडोग मन ने पावय न्हायिअ देखि हलि आबय
 जेठ मे बडनास क इत्येकिय चटनिना मन पावय हे ॥

सुखीक नकलीक ओ इत्येक धिअ जाहिमे पुत्रक अत्यन्त वर्णन अछि
 समयक लख लख हए कए लख न्हायिअ हे अत्यन्त भला बख न्हायिअ आनजक
 लख लख हए इत्येक न्हायिअ वर्णन गेल । एतए एकटा भाष्य अधिपति प्रमुख
 आदर्श चूडा-बही-बोनाक वर्णन अछि-

फट्टे-फट्टे चूडा हम कुटवा एनिमे धरने रखवा एनिमे हे ।
 अत्यन्त गत गेल बलक क मोस कि भुटिने मुनिमे जौके गले
 तीने-तीने सही हम पौरव एनिमे धरने रखवा एनिमे हे ।
 ललन हे एउए एही बलक मोसा कि छीए-छीए खाति गेल हे ।
 फट्टे-फट्टे बौनी हम बोखवा एनिमे धरने रखवा एनिमे हे ।
 ललन हे, एउए एही बोआ की भयो कि लने लने चोराव ललन हे ॥

इहकन सांकेतिक अ रूपद शिक्षा गौतम समाधि करियारो पुर्णित्त कर्णक
 भोजन करबा काल समय गरि दुःख भोगजन कयल जहल समधिक अति अति इहकनय
 भोजनका खान्य सँवार भल-दालि तरकारीक कर्ण आयल अति-

मुनु समयो वो संकर इम लो वरीक अथः
 अहाँ भातो करबइ सोचि बिचारि कऽ ।
 ये छथि भल लेने तह ओ छथि पैपाके पत्तार
 अहाँ भातो छयबै सोचि बिचारि कऽ ॥
 ये छथि कलि लेने तह ओ छथि बहिनके पत्तार
 अहाँ दालियो खेबइ सोचि बिचारि कऽ ॥
 ये छथि तरकारी लेने तह ओ छथि केटीके पत्तार
 अहाँ तरकारियो लेबै सोचि बिचारि कऽ ॥^{११}

एहि प्रकारक एकटा अन्य इहकन अति-

बिछि-बिछि कऽ फलनि सारे समधिक

एक कऽ खल समयि दुःख कऽ खल तेमर मे छिन्नि सारे समधिक
 तैतिक फल पर सँवार लगायल अल-पराइ तरकारी समधिक ॥

पंडितक हेतु ई इहकन इच्छा-

अकलल बभना बकलल बभनी ॥
 छोदा मे जानइ बहलेल बभनी ॥
 चाकर दलियनि दालि दलियनि गेला अकल ॥
 एक रती मृग लभ करै छथि खखना ॥
 बूढ़ा दलियनि इही दलियनि गेला अकल
 एक रती चिनी लभ करै छथि खखना ॥^{१२}

विवाहक बाद चारि पाँच दिन धौ करक समिकि और भोजन देनाक व्यवस्था
 हाइत छैक एहि विधिक महामा कहल जाइत छैक । एहि अवसर पर वे तत्कालीन
 गाउँपाल बाइक सहित मौधान भोजन विन्यासक अनुसार छोटक विन्यास भेटैत छल

रघुवर किआ कसल ली अहाँ समुगरीमे खीर फलल धागेमे रा ।
 रवि-रवि ज्यज्जन इम कनपली रघुवर अहाँकेँ जेमपली
 अहाँ खवा न पयली मुनयना क तरकारीमे खीर चलेल धागेमे रा ।
 निमकी छटमिट्ठी सँवार खयलहुँ अवधरक कुफर

अहाँ एक देर लागी कनियो खीरा नहि खेनी
 अन्तरा करौली बनकपुर समुगरीमे खीर चलेल धागे मे रा ॥^{१३}

बनक कुटवाकल गयल बायद एकटा अन्य गौतम विन्यासमे पंडीपर सः
 अहाँ अहाँ केँ खेनय मेम-... अहाँ अहाँ केँ खेनय मेम-... भोजन करबाक वर्णन प
 अति । बौद्धोपग्रन्त मुख्यशुद्धिक सेहो एहि गीतमे चर्चा भेल अति ॥^{१४}

बरक खोजनसे सम्पद एकटा गेतमे विविध प्रकारक व्यञ्जनक वर्णन अति
 प्रिय सहुर लचसँ जेमि लिय

भोल टोलि लम मजब बनल अति चटनी अति चटकदार ।
 लचसँ जेमि लिय ।

तिलीरो हरीरी, अदीरी बनल अति कुफरीरी अति मनदार
 लच सँ जेमि लिय ।

खेल-खोइ बड़ो बड़ चटकर चलेली भजन अँधार
 लचसँ जेमि लिय ॥^{१५}

एकटा अन्य गौतमे सेहो विविध भोजन पदार्थक उल्लेख भेल अति-

खान्द सुग्ग उपत बिलेकी तपर सरस सोहारी बी
 खँच भइ भिलि केमय बैलना परुपति अवध विहारी बी ।
 हँसि-हँसि भरतसे पूछनि केओ मरसन लिय तरकारी बी
 पौठि-पौठि क बनल अँचारा नाना बिचि तरकारी बी ।
 निम उति दूध चनसन अठेटि पिबहु कुष्ण कन्दाई बी
 फकल फल कपकोल उतिम तरल खण्ड सुपारी बी ।
 लम बिधिकते अँचर छैपलनि समा करक सब दोखी बी ॥^{१६}

एकटा अँचरी गीतक एकटा अँस एहि रूपक अति-

विधिक कटुआक और इम बी दिम है लालन
 बसल अनोन-तलेन समय बुझब अपन
 हिय बिच किनु नहि राखब है लालन ॥^{१७}

अँचरी के पाँच आठगौतक अं प्रपद शिक्षा व समिकि तथा जमायक भोजनक
 व्यवस्था भोजन अतिउ जेतप भोजन विन्यासक सरस वर्णन गैह

पही घात बतन भनसिख सँठि कपल परि वाली जी ।
 राहरीक दाहि बटु परि अतिम दाहि देल कूट कसी जी ।
 ओल-परोड़ बड़ी-बड़ भटकर तरह तरह सखरी जी ।
 छविगर दाँही झाँझ परी अन्तर बंधु कनक जी ।
 धकल पान सबंग लगावोन छसहोनि अति व्यवहारो जी ॥¹²²

एहि सभक अतिरेक मैथिली नामक साहित्यक हँसि बिधा सभसँ पौड़न जिनदास तथा मान्य सामग्रीक प्रचुर उल्लेख दँछि पढ़ैत ताहिमे एकटा पहिचान अ लाकाँकन प्रमुख अछि । यथा-

फकड़ा

1. सासुर आनि गनहुँ सतकारा, बेसक देलनि केइदक आँभार
2. धानस करैत छल एक जनी मुँह मलैत छल भिक्षु जोगिनी ।
3. धुतिएक हस्तिमे धुतिएक पानि, गेला कपलसँ सासुर जानि
4. अइ बनसिख केँ करत मन, केँत यस्त कई पेल सखक लज ॥
5. भात दाही, सपट्ट दाही, अमृआत दाही, पकूमर दाही ।
 खेत दाही, खरिहान दाही, चूड़ा दाही सुकक-सुखक ॥
6. बे कर कौलनि भलीए विवाह, तिनकर दँछिअनु सोच
 गुड़ बीर दऽ पकूमक भेलनि, दाही पर अचिती बोग,
 चारि दिनपर भेल चतुर्थी, कर दऽ-दऽ कचरि नको
 पेट सटकै कऽ गेलनि पीठमे, आब की रहलनि बाँकी ।
 करक पात पात देल अरबा, काही कम्बल अमन
 दँछितहि बड़ बफारि कटै छल, अजितहि भेल अरगमन ।
 तीसरीक लेल देल तरकारी इरमदन कोर भाव ।
 जिनक विवाह भेल महीरा तिनकर नाम विधाता ॥¹²³

विहानी

एकटा बेटक कम देल, माथ तकर फलक गेल ॥ खेराक गछ
 एक बिदेस अट्ट, ठकर पौख दुनु पट्ट,
 ठकर छलछ ओपार, ठकर मासु मचखर । केग
 एक बिदेस ऐसनी खुट्टा पर बैसनी

जामे-जामे जागर फाँकल से चिहँय केसनी । खोल
 एक छी के दुसरी, फटक देल मुहरी
 टूटे नै खटे, जवख दै दुसरी । सुपारी
 कल गणमे छिन गेन गन अहिमे माउथ मुहिया राने यूही
 कनोएक छँदीक कसल कसल कोह भकड़क जालि
 मधपर छेछ मांदोमे बखल । -मखलक जालि
 काही एव कलखी, चारि दिने मलखी ।
 काँचि नव लिहै, बखीस फूल बखरी ॥ भात
 कनोए छँदी के लाल बखरी ।
 खरि छिई चारि रंग मुँहमे देने एक रंग । -धान
 चरि सँछि चारि रंग सख बंदर ।
 चकक विवाह भेल चाफ एक रंग धान सुपारी कब धून
 लाल गब छड़ खन, सनि पौख गरी बाप । आनि
 ल दुसरी तपर डँय, ठकर पल बलीसे खण्ड । ओल
 पल लहु-लहु, फर महु-मेहु ।
 बे ने दुसरी से हमर भिज अनि कऽ रहिय ॥ केग
 फल चितरि बितरि फल सखा ।
 बे ने बुझए से मुगीक छम्मा ॥ -मुनिगा
 मरुछ खमलहुँ मास दिन, झोर खमलहुँ बरिस दिन
 दईडो गुइडो एखल अछि खमसी पल बानल अछि -आन गब
 फनिमे अट्टक गेल बाह ठहरि गेल
 बैसल ठगबुमे, हटपर समरि गेल । बाछ
 जामे बखरी लटकल छड़ खन बहार नै दुबई छड़ । -कटह
 जामे कछल लटकल छड़ । -अधुन
 जामे हेसुअ छदल छड़ छण्ड-छण्डने बोटल छड़ । -तेठरि

श्लोकोक्ति

- अहिमामुखं कटहर कटले हयस लेख पड़ा मस्त ।
- अपने मोसाफिर झुतधि धिलंग, अनकर खास कउ लखि मरंग ।
- अभयल बककों खोली लीत ।
- अनकर खड बाल अपन होअए भल ।
- अटर-घटर के पूरव पचल ।
अगब सङ्ग के लगे फूटए को मजबुत मरव ॥
- अपन लकीकों नये लट्टा कहे छै ?
- आदरे कितन फाटए, बूझा ली के खाय ।
- आम खयल सँ काज, की अँठे मनबारी काज ।
- आलू दाम, मसूरर काम, धौजी सबधि जमाजम ।
- आलू खास कउ बालू, मेवाज खास कउ लेखी ।
- आलू कोली के तरकारी, कनौ दिव ए बंचारी ।
हमरो एत पुछारी, हमई बेज ए बंचारी ।
- ई नुह अपने कान छेदवाने ।
- ई बुनि नुहो सँवा होत, जेहने करल छेहने वीन ।
- इमली देन घट्टा कषयक पड़ाअल बट्टा बड़ नानो हट्टा
- ईदक मुँहम जीरफ कोहन ।
- उलुक बारी फुलुक बात,
बड़ खसम मनसियाक हाथ ।
- 16(क). कगड चान को लपकड पूरी ।
- एक अनकक मुगो, नै जानक मसल
- एक हाथक कँकड़ि, नै हाकक बीस ।
- एक पोषण नै गोट ।
- एक आमक दू कलसो नै ।
- एक दिन ससुराँ एतक सिनेह भेल, जहि जालने दूहे
एक दिन ससुराँ एतक बिरह भेल, मज्जा जाल जनि लुन्हे ।
- एकटा बहु लव नूअ ने भल, दोसर बहु लव छल फल ।

- एत बड़ ली, नै जगडकों देबनि ली ।
- एक बुनि अस्तवि बानुक बाप, जनिवासो दैत नूअ-भात ।
- एक लवाम धिक्कल, सबको लागल हिस्सक ।
- एक मुँह भिराबिसो भैल, जे सस मुँह खाकोसो नहि भैल ।
- एक कुदन (पात), एक छरवन (छाग)
एक खेम-खेलौटा (जोर-मोचक मसाला)
उखन नवए हमार धोजनौटा ।
- एक रँ करल अपने तीठ, दोसर कटल नीरफ पोत
- कपाय छल प्रभा तनिका पाँच लात मंड घड कउ बैसला तनिका मॉङ-पात
- कहिरो घुत बन्ध, कहिरो मुटुओ बलब कहिरो ओहो भन ।
- कनिरो अए दू गो बनिरो दिवऽ
ललमिछाउ के फोदन दिवऽ
अपन मरर के नाम कहि दिवऽ ।
- कठबो मो-सेल दऽ तल, जैयो मागक-समये ।
- कलबो करलबये सेल बंज तैयो तीतक तीते
कलबो सँवा लऽखऽ पात तैयो हितक जिनै ।
- कुटि भिमि खो धनि बहु हमार हो नूअ फटी रँ नहिरो ओ ।
- कनो पर दसि-धत ईसरी पर ब्यास ।
- कोनूअक बड़कों नूअक खेकोसो कोन प्रबोजन ।
- किदन बड़का खतर नूअ, दैयाक नहिरो बटै दूध
- कनक कुन्नु लोड़े तिरपित ।
- ककरो मुँहो ककरो झोर, ककरो ओखिसो खसलनि नोर ।
- काज न पग तोन मोटी बन्या
- 40(क). कपाने ने छटनी सनहको लै पौराने ।
- कानये न सटनी, खाइने नहि इटनी ।
- कौ ली के सड नहि, पाले लव तैपारी ।
- ककरो मोड़मे बल, ककरो भातमे नहि बल ।
- कऽखऽ ऐलो हीरा, मोड़ पसीलनि जीरा ।

45. कुमिशर कपूर जे काल बच्छ जीत पड़त तेन केतन शारत एव जे ११२
46. कुकुरक पेटमे कतहु भी पचत ?
47. कुट्ट बसत के नहि जान, भर सगरी खाति आन ।
48. खालोपर खपल, किछु तुझको ते कबल ।
49. खुदही छा कऽ भूख नष्ट ।
50. खाइक मोन मोन अपना, तेँ मोसैयाँ दलक सफा ।
51. खाया पिखा बोझ हाथ, तेरा हमरा-कान सभ ।
52. खा कऽ पसरी, पारि कऽ ससरी ।
53. खाइ लय सुखरती अब डेहदे लय सूर ।
54. खावक पौड़ा अब मृतक सेज, नहि रख देव ।
55. खाइ सागधान, सुती न्हावक साध ।
56. खालझीक खान किछु कहना न जाय अलहम चदा खालझी खान खान, देव
57. खाव पसी की माय पसी ?
58. खाइ तेँ चुपचु, पड़ी तेँ वैखम् ।
59. खोन-पूड़ीतेँ पर भरल कऽ पूछे मधियन बरत अब ।
60. खसोकेँ जान जाव, खसोपाकेँ सबाद बद्ध ।
61. गरी गंगा कही कारी खाव तेँ वैकुण्ठमी ।
माय मास तेँ मैची खाइ, सभरि कसरी वैकुण्ठे कऽ ।
62. गाछमे कटहर आठमे तेरा ।
63. गुड़क पारि धोकाइ जानव
64. गुड़क नफा चुटिछ खाव
65. गुड़ गेल कहुनही लुलुआ चरिते छी ।
66. गंधारेक कहने गहक की गंधारेक कहने कहिनिह छी ।
67. गुरू गुड़ चला घिनी
68. गोअरक सगइल पाक अब मलाइक सगइल दही दू एके रंग ।
69. घर दही तेँ बाछे दही
70. घर चुकी बरत नहि, बीबो फौकधि चूड़ा ।
71. घरमे अपाक नहि पदुन के लसन नहि ।

72. घर सेते तेँ अब बलाही चेत ।
73. घर बेमल बे कलधि खात, ललित देह ने बख ने पेटमे पात ।
74. घर बिगाइव दूही, पेट बिगाइव दूही ।
75. घरमे पकव पकवने, घोनमे करव अनुपमे ।
76. की कवऽ हंसकल, ठऽ राइइक दामिने ।
77. की बलिदुख छबहि छल कब दास मलुकक कीबे छल
78. की पचव नै अब, पूड़ी सेल पारि ।
79. जेसुआ पंखे कल देआ, रोहुक छि बिसाव
80. जौद लेटी दून तरकारी, गिरल हमर जय ।
81. चिद्गंम लिखनहुँ आबुआ-बेल प्रिय अयन एका ने मन ।
82. छकमे मक्क, धिंगलो झोर ।
83. जो मटमनि, मई जो दूगो खुदही ।
84. जकि ने छटल, मसुरीक दामिने इमलीक लट्टा ।
85. छउमे भानि जल रजो मन अबदा तीन मोन दामि सेसारीक
ई लव लऽ कऽ मोहन कलक, पेटी ने भरल ओहि मारीक,
एक नरी दप एहन देखल ।
86. चुक मिमनि, तीमल उड़ाणि ।
87. और सन रजो जेयइन सन सेली, समुद्र मेने गिरधाइन सन मेली ।
88. कखेक धई धून पिसाव ।
89. कऽ पहनया लय जाव ने करव तत पदुनय खाव-खाव करव ।
90. बकर खयबै तकर गयबै जेहन खयबै नहन गयबै । जतक खयबै ततक गयबै
91. जब जगद्वेक कब जगदोरा, जे दंत चूड़ा-दही दकरे बिस
92. जेधरे दखल कीर, तेधरे बैसल फोरि ।
93. जिबिठे दुक, मुझे दुनू रोटी चउरोक ।
94. जाहि पांवमे नेउतेत नहि छहिमे पाइ मारीक ।
95. जकर बेठकाँ घुलाहि, तकर जठकी धाँजे लगल खाइ
96. जखे काटऽ मेल तेँ सतुआनि कवन अखला ।
97. जकरे माय मारव तकरे पातपर पात नहि ।

98. जब बल छोड़ि पाहू भैं खाल, तब बल छोड़ि गाँव विमिश्राल
99. कजर मे जेँ अमिल खाल, तेँ घेल घेट मिलही ।
100. जेँ गूढ़क हो गंजन, तेँ बिहारी नम कणन ।
01. जेँ खाय फण्ड से खदे बापर
02. जीवामे गूहापला मुइलामे गूहाभला ।
03. तमन खाय पेटे जग तग कय झका खाय तेँ पलक पडल
04. तल खाय से गलल जाय, सुबह खाय मुमुण्डो होअय ।
105. होय केँ पुछी ने बलोइ ?
106. तरे-तरे सीरा जाय कोहिया कुता कुच्छे खाय ।
107. तीन तिरहुतिया तेरह पलक, आधरोटी अठख भात ।
108. दफरल खोसारीक दफरल मोट ।
109. पुनू हाय लहद ।
110. दिल्लोक लहद, जेँ पयलक मंठा पयनपल न नहि मुखलक मंठा पयनपल
111. कालि-बाअ ककरो बिहारी करय महरौ ।
112. कालि-बाअ कुम्हार केँ नम अविमान के ।
113. देखी छी लहद बिहड़, खइ छी रोटी भइ ।
114. भनि-भनि रहूअ बोआर को सरिसोक नम, पैर बोआय इमार, ओदर होअय सोमर ।
115. निकोइय गेल्ल इट, कोकड़ि देखि होक फट ।
116. जोने तेले दल, देन लेने बल ।
117. ने परसल बड़ी ओ ने चिखल झोर ।
118. नीक मंड बैनी लाइ गुआ पन अथलाहा नइ बैनी कटाका नाक कार ।
119. नैहरमे पांच बेल, बीभे हुलास बेल, कुर्चीक-दालि देल, पलापरही बाहि गेल
120. नहि खाएय नहि झाएय, खायक भैं-पारो नहि सुएय नहि सुलक, सुलक मोड़धारी ।
121. नकटे पछिरो, भुखले खइ, जहाँ मन हो तहाँ नकल खइ ।
122. परसल धारी भोग नहि ।

13. जनि भीमो छनि भंड बात बाजी जनि काऽ ।
14. जलोमे बहरी नी नी कुटिया बहरा
15. फतर मोगे तिलक सोछ, हडिया उचोइल मनुसाक सोछ ।
16. घेट करय कुम्भकूल, कुवा करय पत्रमड ?
17. पति पखन अलुअ नम तिलारो ।
18. घेरबे की सोटबे
19. घेरे नहि तेँ जयल अहोकेँ घेरे को ।
20. घेतक तीमन तीन, कोरा, कबकब पीन ।
21. एचिम जिकेँ मोड-मोहन ।
22. जर्क कल छंडो दिनक फल चोहन ।
23. बहुर खाय भे पेट बहाबय, विपत्तिकलमे भ्रम गमावय ।
24. बाप जनम ने खाएल फल, दौत निकोसने / निपोइने गेल परम ।
25. बड़-बड़ बनकेँ घोटक लागल, [किदमकेँ] मिश्र
26. बाबी तेँ बाहन इसि जाय, नहि बाबी तेँ पिवा भरि जाय, नुसुक होअय से कुच्छे खाय ।
27. बन कोर जताये ओर, बायल हाथे खाय खीन ।
28. नौटि कुटि जुटि खाइ राज घर जाइ एकमो खाइ ककर एक घर बाइ
29. कफो रोटी यफो दमिल, कय करकका उड़ि ठड़ि जाय
30. नच दऽ काऽ जे कोनीय बाक ताहि घर लगमी खल खल माव ।
31. बड़बाक, [किदमकेँ] कहुआक गेल तीमो किकाइए खक केँ भे
32. चाहीक पायगिक दहरी काकी भल ताल एक दिस गुज गुर एक दिस जल
33. बाचाजोक खेल, हाथे-हाथे गेल ।
34. झोर कलव बड़ दुख राय, मोन लय पलमोल लेल लऽ आय ।
35. बेदिवायें बुद्धि मेले, टटका किलेमे कहियो ने देखली ।
36. बुद्धिबक लर केँ कुर्ची अलल ।
37. बनर मुँह को शोषण बाप ?
38. बनर को बनय अलक स्पार ?
39. बाबोक भटुअ तौत ।

50. बड़ धुलले नह दुह को लह ।
151. बाली बचन ने कुता लाय ।
152. बीजों के बगलुआ अन्न खवर्नी की जलदुआ ।
53. बालर मुखाइ आंठि जांझी धाली घर पके अंठि कुर्बान गंठी
54. बिनु बीजों के पाइ नहि बिनु बलखाइ के मोट ।
बिनु सरिसो के पाइ नहि, बिना बोधि के सेठ ।
155. बल बाल के बल बीजन नही बल फूल के बल बंदू कही ।
156. भुखले मोन मइय कोबरक खीर ।
157. भुखले कुलदि पीठ ।
58. भलमानुसक बिदइ बूझ-दही ।
159. भोज ने भल हइ-हइ गीत ।
160. भादवक ओल की खाय राख की खाय जोर ।
61. भोरा खाय से भोड़ा खाय ।
162. भुल्लव माइ रुख के झंर, तै लव भुल्लव कपटी तोर ।
163. भुल्लरी सेलई नहु बंधैं तै, कइलक बन्धकी भन्ने जाइ ।
164. भेल भानसयें अंठल कज्जर ।
65. भल-दानिक कजर धिर्दंड ।
66. भोक्कालक कुम्हार रोषल ।
167. भुखले छी तै सुतले छी, भुति कउ उठल तै हूँ कउ चनल
168. बीजक बटबड़ लोपठि तेल, खानु अयेक तेल्हन तेल ।
169. बड़आक रोटी पर दुपल खीर ।
70. मुझुका मोन भोज मइ कही कांठोक भल दूध सइ मही
171. माइ सई दुध बिचड़ी खान पुज्जा नहुक पैहर जल ।
बल बलैठ ने गजन गैठ, ई तीन भिक पण पजाँत ॥
172. मारी पाइ ने वपछी खरा / पानि
173. पाछ आ पहुना, तीन दिन भदुन ।
74. माध मास नै पाहुर खाइ, ससरि फसरि बैकुण्ठे जाइ ।
75. मनबोदकरी कलहु भूख भैरव ?

176. माय करल कुटान-भिसन, पूछक नाय दुगाइत
177. मुठमे माय रैत लाक ।
78. मान मान भूइ चाउर खाथन भूमि हरीइ दिहहि लांछ ताकन ।
179. मय रक्खी भइन बिखाइ, कठब नेलई ए नहु बिठइ
पाय पहन तै लोहि-लोहि लह ।
80. मइआक रोटी तंभारक दानि दूटि गले रोटी छिनकि ननै दानि,
दियऽ गिरइती सोन-बिरचाइ
81. माय ने माय माय मतमाय धारीस भल दलक संग भुलकथ
बोटम दानि दलक संग छिलकाय पाने बहार भल आठ चमकाय
82. मांन होइअय मइपूआ खैली तेल नैत मइ पैंचो जितौ
18. मज्जरौ नैनन कान दुन मांन बनिषी लग बैसन छटीक परि नांन ।
184. रोटी व खोटी पसरी, बोइ व मोटी पनी ।
185. गति जलदुआ दिन जलदुआ, लहिने कुर्बानि झोर
अंछिन खरी अंठि भोर ठम किछु नही को रंठ लगा कऽ मारे छी
186. सडकें भल तऽ जलाम के नै पात पलाम के पात तै शइक नै पात
187. रोइक मइ कुनक पेट, सईक उपर गुनक गेट ॥
188. लटका चूरा खटका दही ।
189. लूटि लखल दूटि खाइ ।
190. ललल भाल बंललल, विशवनाथ भेरा कपूत
एकल ललल कल कमलल खोचिअ भेलनि बहुत
191. सौं बरबनि हो, बसल भिदुटी खे ।
192. सइलने चुन तै रोइक चुन ।
193. सुपक सई ।
194. सई गलि बर जल, भोतियाक खानल जकारल जल ।
195. सुखरीक कनीन पमुपतिद दर्शन ।
196. सुर-सुर भू-भू सवनहि हो ।
197. खंग खल बीध, पुखी खल गुलाब ।
198. खैक भूख भय दुख, अपन भूख खूँचि फूक ।

199. सत खन खेनो सचरो नय, एक खन खेनी फकनो नय ।
200. सत रोटी सत बेर, लिखरो पदकांन,
पुकिवतु मऽ बहुरियाकोकें अप हेली कांक ?
एनोएँ अखन नखन पदकाँई मकाचम सब नहि तें लोच कान
201. सिनुर-सिनुर लय कि करवे मूह खेतय त चेत्यहु ।
202. सुदरी पिल्लो रमसनुअक पाय ठाकरे लोचन नथ पमकन जाय
203. सत बेर सतुअनि सँधि आम् दतपनि ।
204. सर्वसे खीरा खऽ कऽ पपी तोव ।
205. सब दिन खड्डऽ, सबनो ललेहऽ ।
206. हम खाया ने तुम खाया करे जन गणया ।
207. हरदिक दह-दह मूल बिहुन, फुलीक रानल ईत कंडन ।
208. ठकटी हाथक खाइ ओ ठकटी हाथक नहि खाइ ।
209. हर रहय से संध खाय, कफरी सार अँजार ।
210. हँडिया + कचफूह बगल दिन घिपय 'राहुन' नें जबयाह अखु दिन दिक्कठ
+ खीला + धिमराह कउन माम 'देवे' मय 'पाहुन' महुइत बगल दिन दिक्के मय
212. हारक सावर बाटक घनि ।
213. हमर बीजा बह बुधियार चोरे ठलि कऽ सार बुधियार ।
214. हक्का-भक्का (चलनफारी) पीछे खाय,
पोले भरन को (ठहगरसँ निरिखन सँ) बीजा खाए ॥
215. हजामकेँ मूदा ठही मधखकेँ मूख ।
216. मरि कऽ एकधरी महुइत रोटी फरण ।
217. कोलीमे जाय सहस ने अय, सेजपर बहू रहन ने नय ।
218. चैतक गूह बैसखक लेल, बेठक बाँटा, अखाइक बेत ।
साजोनक सार भादवक हड़ी + अमितक आम, कलिकक छरी ।
एहि सभसँ बचले खी ।
- मोथिलाक किछु गायक गायक मंगे अहो बादय नगाधेक मय हँडिया मऽ गेल अँछे । एहिने विषयक खाजा मँगिसक लईई पोअरियाक दही दलेलीक पार यवडाक बेस इमडाक गहूम आने दलेली बेल लई 'राहुन' खाइ केँ महुइत ने कऽ इमडा आदि एहन गुणवत्ताक कारण विविध वृत्तन जइत अँछे

एहि नई पद्यन जइत अँछि जे प्राकर्मियली भाषा को साहित्य आं आधिकारिक लेखना सम्बन्धम प्रसंगत भाजन सम्बन्धी प्रचलित शब्दावलीक नाल्लख यत्र तत्र देखत जइत अँछि धूतें बेमामक गीत आं उणें रत्नाकरमं फोन्त सम्बन्धक बिलु विभूत शब्दावली मरेत अँछि 'येह स्थित मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे देखत जइत अँछि आधुनिक मैथिली साहित्यमे जइत अँछि पद्यात्मक, विविध विधाक आविर्भाव आं विस्तार भन जाइत भाजनों सम्बन्धो शब्दावलीक प्रयोगक क्षेत्रक विस्तार भन अँछि मैथिली लोकसाहित्य आं न्यायकृतय आइत भाजन सम्बन्धो शब्दावली सम स्थान पावि सकन अँछि जे शिष्ट साहित्यमे अनुपलब्ध रहल ।

संदर्भ निर्देश -

मोथिला भाषा सम्बन्धक शब्दावली मैथिली ?	तथैव पृ.
अध्यायी पदम, 1977, पृ.-15	22. तथैव, पृ.-95
2. तथैव, पृ.-25	21. तथैव, पृ.-95
3. तथैव, पृ.-28	24. तथैव, पृ.-96
4. तथैव, पृ.-59	25. तथैव, पृ.-97-98
5. तथैव, पृ.-71	26. तथैव, पृ. 98
6. तथैव, पृ. 103	27. तथैव, पृ. 99
तथैव, पृ. 4	28. तथैव, पृ. 106
8. तथैव, पृ. 101	29. अप्पन्नचित (पूर्व भाग) संतारापड़ा अध्याय संताड़ी ताल एषड मन्थ कचौड़ी गली, काण्णामी पृ. 1
9. तथैव, पृ. 107-143	30. तथैव, पृ. 4
10. तथैव, पृ. 140	1. तथैव, पृ. 4
तथैव, पृ. 108	2. तथैव, पृ. 9
तथैव, पृ. 108	3. तथैव, पृ. 101
तथैव, पृ. 108	34. तथैव, पृ. 150
14. तथैव, पृ. 47	35. तथैव, पृ. 168
15. तथैव, पृ.-43	36. राधा विराह- कारागीरामाभिषममुद्रा अभिनवलिखे स्वरक विधि, एम्बेपुर धरणी 1969 पृ.-83
16. तथैव, पृ.-50	17. तथैव, पृ. 86
17. तथैव, पृ. 52	38. तथैव, पृ. 462
8. तथैव, पृ. 56	39. तथैव, पृ. 294
18. तथैव, पृ.-65	40. तथैव, पृ. 213
20. तथैव, पृ.-106	

[illegible][illegible]

पाक व्यवहारक पात्र :

[illegible][illegible][illegible]

कर्मणि नित् क् चान्त् इत्यत्र विधिवः संज्ञिते पाठेन दत्तत्वा दृक्त्वा
कृत्वा वाच्ये एका अपठनीय संज्ञितो भिन्न इत्यत एवैक का नित् स्वतन्त्र इत्यत एवैक

लातें तकी विनिर्गक डोन वल्लें + ह जगें जंजु मुरा ३ तूतून डोडल वल्लें
साधु मंच्यासौ गिनगिक कम वसण्डक मथ डोडल वल्लें जगें डल्लन डोडल वल्लें
वकग वसण्डक/कमण्डक कडल वल्लें लूक ।

भांडव्य यथा कः तद्व्याक हनु नाह मय कश्चिद् मुमुक्षु आकरो बभूवुः सम्यक्
वयवा जहल गच्छत तत्र अगच्छा विदुषाश्च अ आन्य गौरा मय्य हने
वामचर्के वयवी कहल गच्छत

मांजनक कुक्षिः अद्यापि नोत्तमं जा न्या विमं गैः उद्वल्य इत्यत्र वाचनक
उपशान्तिः इत्यत्रापि वाचनक रूपः इति एकं चित्तमर्थं विविधैः चित्तमर्थैः वाचन
कृतं जायते ।

जान रखवाक हतु धानुक चौकू 'इच्चक' पनबट्टो कहल जाइत छैत ।
पनबट्टो कहल जाइत छैत धानुक चौकू 'इच्चक' पनबट्टो कहल जाइत छैत ।
चौकू पनबट्टो कहल जाइत छैत धानुक चौकू 'इच्चक' पनबट्टो कहल जाइत छैत ।
कहल जाइत छैत धानुक चौकू 'इच्चक' पनबट्टो कहल जाइत छैत ।
मूलधानुक चौकू पनबट्टो कहल जाइत छैत धानुक चौकू 'इच्चक' पनबट्टो कहल जाइत छैत ।
किपायक कहल जाइत छैत धानुक चौकू 'इच्चक' पनबट्टो कहल जाइत छैत ।

चावर आदि नरनाक हनु नामक कलशो धियेन अपनाके नामो करन जाइके
दे नामो काण्डनापिते सह हाइके धियेन आदिक बनामान एअ धियेन हनुज नरनाके
ऐली कहल जाइके ।

स्रोतक सप्तमी

मन्त्रालय द्वारा प्रयुक्त कितने निर्माण कार्य श्री राजगुरु मठ परिसर

पीजन निपाय व्यापार्य श्रीरक्त उल्लस्य वनन नन्दक अलङ्कित रितं ॥
 पैघ वनन अकर श्रुतिका पण सुल्लस्य होइ पं कड़ाह कवन बड्डु ॥ श्रीरक्त उल्लस्य
 वस्तुकी छातल जाइछ ॥ श्रीरक्त सागम यकार का बर्य होइ ॥ नन्दक उल्लस्य अछि ।
 छोरि कडातक कड़ाही कहने अछि ॥ बुद्धा बुद्धा लारक कड़ाह अलङ्कित करत ॥
 जाइछ ॥ कड़ाह लङ्कित परिकर ॥ श्रीरक्त होइ ॥ नन्दक अलङ्कित अछि ॥ यकार नन्दक
 गोल वनयक ॥ बलिवा आ अलङ्कितकार ॥ श्रीरक्त ॥ कान कड़ा कड़ा कड़ा कवन
 जाइछ ॥ जिनकी जनबाक होइ ॥ यमदन भणाय ना कड़ा वरी अछि ॥ नन्दक उल्लस्य
 बाडाहोकर रक्षण होइ ॥ करा नाइ ॥ श्रीरक्त कवन अछि ॥ श्रीरक्त होइ ॥
 कगीर एक अंत व्यासक ॥ श्रीरक्त ना ॥ श्रीरक्त उल्लस्य ॥ नन्दक कवन अछि ॥

कठालमं दंष्ट्रं पशुकं नल अश्वः श्वः १००० मन्त्रः १००० मन्त्रः १००० मन्त्रः

[illegible][illegible][illegible][illegible]

— २८ —

[illegible]

राज्य सरकार द्वारा प्रदत्त आदेशों के अन्तर्गत प्रत्येक शिक्षक को अपने विषय में अपने विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

विभिन्न प्रकारक मसल्ला अधिका "नानक विभिन्न मन्त्र" एतक पद्यक "श्रुति" मन्त्र एकरा संयुक्त पात्रक उपयोग होइत छैक । एहिमे नानक जी अथवा अधिक प्रख्यात छार छोट चतकुरी सभ प्रयोग बाइन रहैत छैक । ई पात्रकें मन्त्रक रूपमे अर्पणकाम इष्टि होइत छैक । एहिमे नानक जी एकरा अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक ।

एहिमे नानक जी अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक ।

धर्मशास्त्रमे एहि सभक प्रकारक पालिक बासना प्रयोग होइत छैक । सन्तान आधारावला गोल बासन बकर कोरपर करैत एक डोच छोट करैत बसल रहैत छैक । धर्म करमाक व्यवहारमे अवैत छैक । एकरा धर्म/धर्मिणी छेपा कहल जाइत छैक । छोट धर्म/धर्मिणी/कसरी होइत छैक । शायद विजयपुर कान्ठ बसल छैक । धर्मशास्त्रमे व्यवहार होइत छैक । एकरा मेफलिवा/मिफलिवा कहल जाइत छैक । छोट न नम्र सिफलिवाकें कोमलिवा कहल जाइत छैक । एहिमे कामलिवाकें सनहक सनहक सनहक कहल जाइत छैक । छोट सनहककें फिरो कहल जाइत छैक । फिरोक अत्यन्त छोट प्रभु कुर्या होइत छैक । एहिमे कामलिवाकें सनहक सनहक सनहक कहल जाइत छैक । एकरा मेफलिवा/मिफलिवा कहल जाइत छैक । छोट न नम्र सिफलिवाकें कोमलिवा कहल जाइत छैक । एहिमे कामलिवाकें सनहक सनहक सनहक कहल जाइत छैक ।

पंच गणकमे एहिमे नानक जी अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक ।

गणक एकटा अन्य प्रभुमे शरण लेबल अत्यन्त प्रभु होइत छैक । ई कान्ठ एक साथ छोट रहैत छैक । गणकमे नानक जी अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक ।

सन्तान गेव धर्मकें गेव कहल जाइत छैक । एहिमे नानक जी अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक ।

एहिमे नानक जी अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक ।

एहिमे नानक जी अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक ।

एहिमे नानक जी अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक ।

एहिमे नानक जी अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक ।

एहिमे नानक जी अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक ।

एहिमे नानक जी अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक । एकरा अर्पण करैत छैक ।

आप भगवान् आर्द्रि के लिये भक्तों को आकाश का कण्टक बनाने के लिये कहते हैं।
आप कहेंगे आकाश को एक सधु प्रपञ्चों के कण्टक कहना पड़ता है।

आप मन में अपने अंतर्धान दुकों के लिए छिद्रों को देखें और उन्हें
एक एक करके अपने छिद्रों से निकाल दें।

होती कागजला टिप्पणी के पक्षिया दृष्टि करन सके छल सभे के
सबनो पक्षीनो हतरो सभल जइत छैज एत छल ए पक्षीनो पक्षिया सभल
करल जइत छैज एत सभल सभल छल एत सभल सभल सभल सभल सभल
छल पक्षिया कटपक्षिका करल जइत छल ।

कच गन्ध घटित कराने के लिये इसमें कड़वा और तीखा तेल, गुण्डा, टोपा, दोकन, टांगर, टाड़, लेक, लॉन्ग फिल्टर आदि का उपयोग होना चाहिए। अथवा आकाश पौधों में दमरु में अध्यायों, सस्य-की एकलकी, बिनतुं, दुधनी, आदि कटल जाइत लेक।

फर्नांडिस् एक स्थानीय दाक चोरान् स्थापनाजन करवान् इतु चयन्त ५००
 ओ स्थान वा.प्रामै ब्रह्म दत्तक भुक्त संकल्पे अन्तरा एत एते एक खाँचो खाँडा
 गोर्बो खीचो खाँडाई इच्छा करन अइत तैव. एफा ओ फर्न खाँच खाँडा मँच नैइत
 कहल जाइत अछि आ खोर प्रभेद खाँच/खोचोई हाँडा अछि

वर्षा, विकटकला सिन्धुवाकं शाला वाम्पा रुद्रा मन्त्र देव शक्रा रुद्र
आहूतिव सम शाला/शालि/शाली/शालिष्ठ होतुत सति ।

[illegible]

[illegible]

“उत्कृष्ट भोजनार्थ साधन बांरा घोडाई घोडाई कहल जाइत नष्ट आकृतिक पा
रखलक साधन बनल कहल जाइत ।

सत्यमेव जयते :-

- हरेन पृ. 35
3. वरेन पृ. 137
4. लरेन पृ. 38
5. वरेन पृ. 26
6. जे रकने पीछाये फुलने वैकीक रेल
दे जेने भिल्ल वेने अँकरसे भनि मि
केने संपीइते दूध नदीन तेल चिनद ।
विश्व- 102
17. विदित पीपेट लकन, पृ. 26
18. वरेन, पृ. 26
19. विदित भाव कोन पृ. 172
20. प्रसिद्ध कहानी- विदितसे भुँटि जेने भेल ।
हाल नदुख विदित मोहन ।
21. प्रसिद्ध कहानी- मन चला हऽ कलेनेम रंग
22. प्रसिद्ध कहानी :-
(क) छल सापके छल मकीनहुँ, जेन लकने हई ।
तेँ कुलसेन जेने खेतें हल कुलसेने एके ॥
तेँ कुलसेन जेने खेतें हल जेन भिल्ल ।
हल कुलसेन भुँटि जेने जेने दूध मिदल ॥
(ख) विदितसे, विदित भुँटिसे, क. संक. 911
मोनि मोनि लकन पल हँ जेने दूध भिल्ल ।
एके जेने भेल ईसेन मोनिसे ॥
(ग) सपना विदित कलसे कहल जेने-
एके जेने भेलसेन हँ हँ हँ, दू जेने भेलसेन जेँ एक जेने ।
23. विदितसे, विदित भुँटिसे, क. सं. 196 । के जेँ विदित कल कुल भनि ।
किं पौनक जेँ देन विदित भनि
24. प्रसिद्ध लकन- दूध भेल जेने टकल भेल ।
25. प्रसिद्ध कहानी- लक-विदित जेने सुखाने जेने लल दूध ।
26. प्रसिद्ध कहानी- (क) जलने दूधनेन कुलसेँ भिल्ल लकन पेल ले ।
(ख) जेने दूधनेन पेलसेँ लल, जलने लल दूधनेन लल ।
77. कुनि कोन
78. वरेन, भाग-2, पृ. 233

अष्टम अध्याय

भोजनक आधार सामग्री सम्बन्धी शब्दावली

भोजनक आधार सामग्रिसँ तात्पर्य अछि जससँ सामग्रिसँ अछि जे भोजन खापरमे प्रकृतिक संसाधन वा मानवीय प्रयत्न द्वारा उपलब्ध होइत अछि एवं जकरा मूल रूपमे सेँ ऊपर-परिवर्तन कऽ भोजनक रूपमे बनाओल जाइत

भोजनक एहि जससँ आधार सामग्रीसँ भुविधाक हेतु तीन वर्गमे बाँटल जा सकैछ

क) मूल आधार सामग्री

ख) आनुवंशिक आधार सामग्री

ग) विविध आधार सामग्री ।

मूल आधार सामग्रिसँ एतऽ तात्पर्य अछि सामान्य जन्ममे प्रचलित भोज्य पदार्थक मुख्य आधार सामग्री एहि वर्गमे विभिन्न प्रकारक जलक गणन जा सकैछ ।

विभिन्न प्रकारक जल मूल आ जल यद्यपि विशेष अवसरक उपयोग आधार सामग्री अछि तथापि अन्तुआ, मुचनी, कमीर, मसूर, कड़ुहर, बिछोड़, डूँही इत्यादि इत्यादि विविध प्रकारक जल भोजनक अतिरिक्त संपूर्णक कारणेँ मुख्य आधार सामग्री पदार्थ विचल अछि ।

आनुवंशिक आधार सामग्रिसँ तात्पर्य एतऽ भोज्य सामग्रिसँ अछि जे मुख्य भोजनमे सहसंगिक रूपमे व्यवहृत होइत । यथा विविध प्रकारक धान, जल पाँच, मशाला इत्यादि ।

विविध अवसरपर रुचि परिवर्तनक हेतु प्रयुक्त एहन आधार सामग्री जे बनानमान्यक रूपमे अतिरिक्त आधार अछि विविध आधार सामग्री मध्य वर्गित अछि जना फल, दूध, दूध, मिश्रण, पान, नश्वरुक्त पद इत्यादि

अन

कृषि कर्ममें उत्पन्न तुणादि वर्गक फलक अन कहल जाइत मिथिला अनऊ उपजाक फसल कहल जाइत जे नल बीआक ईह गन्धन जाइत फलक बीहल/बीया जालि कदल जाइत तथा जे अन छुट्काक कायम जेवत तक बीहल कहल जाइत बीहल प्रकृतिक आधारपर दुइ प्रकारक होइत जेन कारिक अन सुअन कहल जाइत । अधिकांश कारिक अन कदल कहल जाइत पायसमें अन इन्कबक किंवाष्ट नमघ अगहन बैसाख आ भादव जल अछि तदनुसार अन्क तीन गोट काट होइत अगहनमें तैयार अने अगहनो बैसाखमें तैयार अने बैसाख/राखी राखल अने तथा भादवमें होअचला अन्कें धड़/धड़या अन कहल जाइत ।

अगहनो

अगहनमें रामउबला पुरुष अन अछि बान धाकें संस्कृत धान्य शक्ति कहल ऐल अछि । मुदा एहो समयमें राहड़ि कुशी ओ इहोद आदि सहर तैयार होइत अछि तथैपि अगहनो सहर धानक हुतु फल अछि धान भिथलाक अनुसु सुअय धिक मिथिलाक प्रधान धानक धात एहो अन्कें तैयार होइत अछि धानक सहरा प्रपट होइत धानक आकृति आओगक समय आ तैयार होइतक समय जाडाक गे-गोप आओगक आधारपर बिपन्न धानकें चोहल जाइत अछि एक्के धानकें होइ धिगेषमें एक नाम तथा दोसर क्षत्र्य दोसर नाम जालल जाइत अछि धानक दूध वर्ग अछि । मुख्य रीति मोट आकृतिधला धानकें मोटधना कहल जाइत धुनिधुनी या सुनिधुनी किन्तु पतल आकृतिधला धानकें इन्कधना कहल जाइत धुनिधुनी धानकें सफाईका कहल जाइत मिथिलामे प्राप्त प्रांथनाक किछु विशिष्ट प्रपट मर जसि- अन्क कटवा कजराधर कलमदान क्षेमसखाइ कमीन कुसुमयारी गेहूँ ओ गहुँ गतपला छन्नीसनम्बर जगन्नाथिया जगरा जमा दुद्धो दुधगात्र वसन्तदा देववरी देइया दोलही दलसंज्ञ देवसारी धुधाराधर धुधरी पायडा पिन्वाइ बैतगो बल्लभरही भोभासिह धेड़कीवर मुटली पुड़ा, मुटली गणगाट पंगडिया रादिन गमदुलार ललदेइया सतकनभा, सगहन, निलहट सीतासारी मेन्हा याताइहो मौघो आदि

चजामे सापान्यत प्रांथनिक उपजा होइत धान धान सक्के चरहा फल कहल जाइत ।

हल्लुक धानमे निम्नलिखित प्रपेट परिगणित अछि-

अधनुओ कनकचूर कवकजीर कनिहारी कयाइ कयाइ कचिच कायोद कायधू कलमकारी कालाचानिया गोधुमराह गणानधोग गोपिषा चन्दनचू अरुवा जुही बंगाल जनडांग, ठाकुरधोग तुलसीफूल दीनाफूल दुधसंज्ञम धनियां

राशि नकिचो कामसती जनासफेनी जयाभूमो जहानी बासकुल धातफूल घर्वा, जनमगे धनमगे प्रदुगे महाजागिन धानदेहो फलधोग रघुनो राजभोग रामअधवाइन नमघीर गवकीर रघनी नलधर लालकीर लीगचूर मतरिया सुपारोपणो जयापवीर हंसराज इनिहोर इनिहोर जादि ई सभ अपहनो प्रपेट धिक एहो अन्कन अपनुओ राज जालल अछि किछु धान भादव जालल सहर तैयार होइत जाल सफाई होइत होइत अछि ओइस अन्क प्रपट पपुल अछि गधारी एह प्रपेट सक् होइत ओना कृष अन्कनधन धिचि द्वारा एपुनो अन्क नव प्रपेटक धान सक्क राजाक जवन्त होइत होइत अछि जाहिमे किछु विशिष्ट धानक नाम जेन प्रकारे अछि अगआट आह अपर अछट बाघा दिनमुनी सरस मीना आदि

अखिल समय तैयार होअचला धान अखिल तथा कारिकमें अगल करि जलपला धानक प्रपेटकें कनिहारी कहल जाइत ।

राखी

फागुन जेत वैशाख मानमें विभिन्न प्रकारक अन उपजैत अछि जकरा राखी राखल अन कहल जाइत चंच एहि मस समय उपजअला मुख्य बीहल रोटाक अन धिक एकर एक पुरुष प्रपेट गहुँ स गोधुम/गेहूँ गोहूम/गेहूँ गोहूम कहल जाइत नोक प्रपेट गहुँकें धुनी गहुँ कहल जाइत स्थानीय बीयामें उत्पन्न गहुँ टको टेमना टेमना कहल जाइत ई नक्षक आकृतिह होइत तथा एकर पारसक मध्यम जेहो जेत केक सानान्यत ई अल्प पोताम आ अल्प रक्ताम होइत अछि एहो उपजाक उबरा/इजरी नया ललका ललकी गहुँ कदल जाइत । गहुँक अन्य विशिष्ट प्रपेट खेना/सुनरी होइत ।

गहुँक आकृतिह प्रकार अन जओ जी सयल कहल जाइत जओ अन्य प्रपेट सयल होइत अछि इन्कें गहुँ कहल गलाय गोख कहल जाइत ई काल विशिष्ट अन जी करीया जकीय तथा बुरक जेया सग जैइत जमुहरा तह जमुइ गोपलाय जीखगरीय कहल जाइत जहना मान प्रकारक अन्क पिश्रम सनझा सनझा कहल जाइत अन्क प्रकारक अन फलन कजक कायम धिचि अन बजरा चजरा कहल जाइत एक अन दोसरो पंग गणपि पिश्रम कहल जाइत अन अन्य अन्क अन केहा एकछाहा कहल जाइत गहुँ ओ जओक एक विशिष्ट प्रपेटकें गड़ल कहल जाइत ।

राखी फसिल एलिजक सहर प्रधान अछि अन्क आखणिक मोत दूध फलक कदल होइत जकरा दासि कहल जाइत । एकरा नल धनधन दू धिजा क जे नाम धरम बनेत नकर जाल कहल जाइत धानक जे अन सेह इन्कन कहल

प्रकृति अन्तुआक आकार रक्षे स्वात्मक आध्यात्म अन्तुआक अन्तु आत्म परैव सति
अत्यन्त नीर स्वादेशक सन्तुआक एकदा प्रसन्न असाधन करान गइछ अत्यन्त गान
नक्षत्रमै युक्त गान एवं पैष आकाशिक अन्तुआक विरिधेय प्रसन्न होइछ करान गइछ
किंदात्मक आकाशिक युक्त प्रसन्न भिक्षुनिर्वा करान गइछ अत्यन्तक आकाशिक
अन्तुआक अत्यन्तक धनका करान गइछ अन्तुआक प्रसन्न सति तन अन्तु आत्म
माण गइछ लेक गइछ अन्तुआक भिक्षु सगइ करान गइछ लेक गइछ अन्तुआक
परै पाण्डु प्रधानता हैत होक भ गुरदावना प्रसन्न सति वक रेत होक अन्तु
सुतिआयस सोइमै सौर अन्तुआ करान गइछ अन्तु आध्यात्म अन्तुआक चत्तका जी
ठज गइछ होइछ अन्तुआक असयपर सुतम सति अन्तुआक कारण अन्तु आध्यात्म
कौट दिबाइ स्वर्णि गइछ होइछ दिबाइ लागल अन्तुआ दिबाइ दिबाइगु करान
गइछ ।

अन्तुआ काँबां खायल जइस पुन विशेषत इमनि ओ एका कः खुदल जाइत । आगिमे धुमिआस सिद्ध कएल अन्तुआ पैकाओल अन्तुआ कारन जइस तथा पानिमे सिद्ध कएल तमिनस अन्तुआ केन जाइस अमिनबक कतम गनि कस रहलापन बासनक एगस अन्तुआ पैकाहे नैछ रहल अन्तुआ पैकलगू कतल जइस तथा बासनमे तमस अन्तुआक लतां दऽ की अन्तुआ इन कस गनि दऽ क इपरस की लतां दऽ दए जाइस जा हाकनस बासनके इमि क गदिमस गनि दल जाइस । अन्तुआ अन्तु दए अन्तुआ विप्रःओल जाइस एनि प्रकयामे सिद्धओल अन्तुआ इप्या कहल जाइस तहिना काँब दधम गम घाल दऽ कऽ किछु घमक दनु जाइस दल जाइस । अन्तुआ इप्या दध घाल कहल जाइस ।

लतायाम सपत्न हाऊ. वला भव्य म्याह हाउस सुधनी भिनगेकन्द मका
मुठिंशिक हा उज्ज भातकुजोन तावुव नश ओहिया सता मय मा मयन येन हेक
म्यान मयनका म्यावताम मय्य काली काली बुम्का मय्य मयन हेक मय कयक मय
मयन तथा मयमय मय्यक मय्य हाउस ई कय मयमय कय मयमय मय

पञ्चशत सड़ण केखा योग्य बलीय रत्नान राजकुल अन्दर जाकहुय हय
महुर मिलाक एक गार केन राजकुल केखी मण्डकेखी किमो एक श्रोत्रिय सय यय
मयीस रण्ड होय । एकर मुदा दूय सन ऊपर होय अकि ।

निर्माण करने के लिए विभिन्न कठोर एवं नरम कणों का उपयोग होता है।
 एनिम कोरी गैस प्रचणाम से प्राप्त होकर आकारक एक गैर फलित पदार्थ है।
 यह स्वच्छ जड़ित तथा गहरा स्वर्ण भूरा रंग का होता है।
 वास्तविक रंग आकारक अन्य कठोर पदार्थों के साथ मिलाने पर
 एक भीतरक रंग निर्माण होता है।

252/पैशित्तीयक मनेजन सम्बन्धी प्रश्नोत्तर

चरम ध्यान मध्ये स्वप्न गच्छेत् जगत्सु उत्पत्तिं दृष्ट्वा अत्यन्तं भक्तुः
 प्रकृतिकं च न चिन्तयेत् चिन्तायां कथं न भवेत् । इत्येवमाचार्यः विद्येयं वपुः द्वारा
 शुद्धं हृदयं यत् जगत्सु उत्पत्तिं दृष्ट्वा अत्यन्तं भक्तुः प्रकृतिकं च न चिन्तयेत्
 चिन्तायां कथं न भवेत् । इत्येवमाचार्यः विद्येयं वपुः द्वारा
 शुद्धं हृदयं यत् जगत्सु उत्पत्तिं दृष्ट्वा अत्यन्तं भक्तुः प्रकृतिकं च न चिन्तयेत्
 चिन्तायां कथं न भवेत् । इत्येवमाचार्यः विद्येयं वपुः द्वारा

धुएक जेठ आकृतिक लल रोक एकल कद अति गजल/वेकल एकल
स्वयं मिललसि जेठल ।

व्यञ्जन

[illegible]

सहित शक्ति-संका कड स्थायित्व (ग्रहण) कसले बळक

रुडि सभके वरपन इत्येबाक आधारपर तीनगोट वर्ग कयल जा सकैत

(1) कन्द-मूल वार्षिक (2) फल वार्षिक (3) पत्र-पुष्प वार्षिक

कन्द, मूल आतिथ्य :

[illegible]

आल' विधित्तमे प्रचलिते विरिष्ट कन्द धिक ई ठन्जर तथा लाल वर्णक
 नइत चाङ्गु प्रकर रणका भाषण करेजोन अन्तत पातर जावण रहैत हैक एकर
 अङ्कणे अङ्कणकाक हइत हैक का प्रते ऐन पे ई अङ्कना अङ्कना पम्परिधोस
 काविल नइत हैक आन्कक च्छेपर विकलल शुलाकार भागक' होदी दादी कहल

मेहनत

छात्र पदार्थ: एक रूपांक चित्रक दृष्टि में आदि प्रश्न में तब करने
जहाँ 3 दृष्टि लक्ष्य किन्तु अनन्त दृष्टि में प्रश्न कल्पन आदि प्रश्न में तब करने
नेलन कहल आदि

तेलहन प्रथम गीत उषाक अन्तर्गत नव अन्तर्गत अन्तर्गत गीत सारिमां
 नं भाव्य) कहन अहं प्रयोगिक प्रतिक कथा एक नवहन गीत रचना यो यो
 मर्ती प्रथमक करी गीत नवहन राहु रीती कत- उषा अन्तर्गत अन्तर्गत
 मर्ती कहन नवहन

हाइड्रोजन एकल उपेक्षित अत्यन्त सूक्ष्म अकारितक वस्तु है अतः इसका पदार्थ
हाइड्रोजन एकल सीमा अत्यन्त आसानी से अलग अलग चिकना बलम हाइड्रोजन हाइड्रोजन
सामग्र्यो से सामान्यतः, यह चारिषीर हाइड्रोजन उपेक्षित हाइड्रोजन ।

तेलहनकें शीत वरु सहाय कयल दवकें तेल चिकनइ चिकनै करन अइछ
सर्पिसाक तेलकें कहलल कहलआसेल कहल कहल अइछ । अत तेल सभ तेलहनक
नामसँ ज्ञापित अइछ अइछ अइछ अइछ अइछ अइछ अइछ अइछ अइछ अइछ
मोल द्वारा पंडित शूद्र तेलकें खांदी तेल कहल अइछ ।

तेल पेंडुला रत्ना नैलहानक योग्य अवस्थाके छवि सदा सुदो सुदो जाल्ले कहल जइक नैलक मैलके क्षति काइत जइमो पादि कहल जाइत।

प्रादुर्भावः अनेक प्रकारक व्यवस्था वनक पद ज्ञापित होइछ । उदाहरण
 ज्ञानका कहल गइछ । ई व्यवस्था वनक एक एक तह भएक दुसरक आधारक रूप
 व्यवस्था तैलक हेतु प्रचलित सब भइ गेल अछि ।

कन्द

पशुपालक काममें व्यवहृत एक गान विशेष कर अधिक सुनिहूँ । इन्हीं मामान्यतः पोषक गुणधर्म युक्त बहुत अधिकतर एक ही प्रकार के पशुओं वस्तुओं में अनेकानेक गुण कल्पित जाते हैं । व्यञ्जन टाल पशु अनेकानेक मानते जाते हैं । परम्परा में बराबर शुभ मानते जाते हैं । खादियों में धान बाजरा वृद्धि आदि अनेकानेक रसैय । कहीं पौष्टिक कार्य में उक्त व्यवहार कल्पित जाते हैं । अनेकानेक रसैय । गेंडी/हुरदिक गेंडी कहल जवळ ।

अति पैस आकारक पून रेशोके मुडी हादि जखन राइस, जखन खान
कारने कोनो कोना हाइदक गे कथो प, जइ अ अथिद ८ काफरे जखन खान
हाइदके रकसी हादि कथो हाइस गही जालेक कय रेश आइ अथो

अन्यत्र सहाय्य । सुविधायक आदर्श प्रौढि/प्रौढर/मूढि कहल गइल छैक । एकर प्रभाव
कहु अंगर छैक जेकर रंग पिक्काळ रहैल ।

अष्टादश वर्ष आकृतिक मशाला पंडित बडनो. अनिया ३ मूलन गोक तांवर
 १९६७ तसे १९७० पर्यंत १९६८ पर्यंत दुनू पासवं नाकादार हांडर घनंज पाणकी रंश
 आदक हेतु आचन मळ आवहार कियत आहूत ।

[illegible]

अन्य योजना

[illegible]

नैतिक तथे चेतनाजन तः अकांक्षन दारा धर्षण कर्तुं गच्छे इति
फाइनल कार्य अर्धे अर्धे कारो नैक तनु आर्क्षक नपान परमल्ल प्रहरील/मंगरील
करता गच्छे ।

विडितं पञ्चदश ब्रह्मक पातकं तेजपात/तेजपाता/तजपात/तज्ज कर्मा ग्राह्य

आमक वृक्षक शिथिलीक आधारपर एका दुइ पाट पांटे होइत अछि बिम्बु सगरी ओ कलसी आमक पांटेमे बनल गड्ढा आओर आमक बिम्बु भन्ही केनए बाइछ ते रस ओ बनरी युक्त होइ । आमक ओ स्वादम यद्यपि मलमधुरी भित्त। कुन्त ओठि गधमि जिह्वेत घन प्रकृतिक होइछ किछु पाछमे ओठवला भागकेँ भूम वृक्षक शाखापर जहि ज स्थान कयल गछैक कलसी कहल गइछ । एकरा दुइटाक आधारकय होइछ । एकरा फटावला आमक प्रकृति मूल वृक्षमे मूलाक सिने ओछ कलसी आमक आकार । ओ ओ प्रकृति परदेस होछ । कलसी आमक किछु पपल लगे एतए रंग अछि । मालदह कलकालेका बिम्बु फलनी नजिरा करबा भुलिनालक करबा कुष्माण्ड, अर्पुग्या नबुआ मुकुल सिमिषा राही राही भदैया आदि ।

रंग, आकार गंध स्वाद आदिक आधारपर आमक विभिन्न रूप भेटैत अछि । पहिम भवाधिक लंकप्रिय अछि । मालदह किछु जनक राम चरित किछु जनक आधारपर भेटैत अछि । रंग कुष्माण्ड आमक रूप कछु पुनर उद्भूत नामपर पहल । एकरा एक इतिहास भेटैछ जे एकरा पठिन कछु चरितक कुष्माण्डक नामपर चढ़ाओल गेल छै । ओकर नाम कुष्माण्ड भऽ गेल ।

किछु आमक नाम स्थानक नामक अनुसार भेटैत अछि जेन- कलकालेका चरबा, चरबा । मालदह जिनका आधारपर मालदह आमक नाम पहल । मालदह एक विशिष्ट वृक्षकेँ लहड़ा मालदह कहल जाइछ तथा रंग साफ हावकाक कारणेँ एकर एकटा प्रपटक दूधियापालदह मधुरा मालदह कहल जाइछ । रंग मिश्रितदह आमक नाम शहरक आधारपर गइल ।

किन्तु आमक नाम ओकरा आकारक नामपर चल गेल । रंग कोरछ मद्रक आकारक कोरबा । एकरा कोर आकारक नाम ओर कोरबा कहल जाइछ । एकरा चरबा आकारक कोरबा । एकरा कोर आकारक नाम ओर कोरबा कहल जाइछ । एकरा चरबा आकारक कोरबा । एकरा कोर आकारक नाम ओर कोरबा कहल जाइछ ।

जाल आमम नाम मद्रक आमक नाम होइछ ओ नकुली नाम अर्पुग्या होइछ । एकरा कोर आकारक नाम ओर कोरबा कहल जाइछ । एकरा चरबा आकारक नाम ओर कोरबा कहल जाइछ । एकरा कोर आकारक नाम ओर कोरबा कहल जाइछ । एकरा चरबा आकारक नाम ओर कोरबा कहल जाइछ ।

रंगक आधारपर निम्नलिखित आम आमक रूप भेटैत अछि-
सिन्दूरक रंगमे भूत सिन्दूरिया सिन्दूरिया कहल जाइछ । एकरा जालक एकटा रूप होइछ । एकरा पहाड़पुरी सिन्दूरिया कहल जाइछ ।

किछु आमक नाम ओकरा प्रपट होइत आमक नामक आधारपर होइछ । एकरा कोर आकारक नाम ओर कोरबा कहल जाइछ । एकरा चरबा आकारक नाम ओर कोरबा कहल जाइछ ।

किछु आमक नाम ओकरा प्रपट होइत आमक नामक आधारपर होइछ । एकरा कोर आकारक नाम ओर कोरबा कहल जाइछ । एकरा चरबा आकारक नाम ओर कोरबा कहल जाइछ । एकरा कोर आकारक नाम ओर कोरबा कहल जाइछ । एकरा चरबा आकारक नाम ओर कोरबा कहल जाइछ ।

एकरा अर्पुग्या नामक अर्पुग्या नामक अनुसार भेटैत अछि जे स्थान मद्र ओ गुण मद्रक आधारपर प्रचलित होइछ । एकरा अर्पुग्या नामक अनुसार भेटैत अछि । एकरा अर्पुग्या नामक अनुसार भेटैत अछि । एकरा अर्पुग्या नामक अनुसार भेटैत अछि ।

अर्पुग्या नामक अर्पुग्या नामक अनुसार भेटैत अछि । एकरा अर्पुग्या नामक अनुसार भेटैत अछि । एकरा अर्पुग्या नामक अनुसार भेटैत अछि । एकरा अर्पुग्या नामक अनुसार भेटैत अछि ।

एकरा चरबा नामक अर्पुग्या नामक अनुसार भेटैत अछि । एकरा चरबा नामक अनुसार भेटैत अछि । एकरा चरबा नामक अनुसार भेटैत अछि । एकरा चरबा नामक अनुसार भेटैत अछि ।

गड़स पश्चात् भूतल धरी पातलक का छोटि डेन गड़स चउने पद मल्लो आसिसे रगिरी भोजन ध्यापनमे अन्न गड़स जे खरिधित्वा आमक कटकेट्ठी गुड़म्ब कहल जाइत ।

पाकल आमसे बनल सामग्री :

अकल आमके छोटिसे डेन का अकार म नय गुदरके हाथसे चरि नन गड़स अछि गहन गहन न ओषक गग गग कहल जाइत एते गगके कय डेन व काठानमेन वस्तुन गगने डल जाइत एतेगक रीत केकाके बार देब कहल जाइत बागके मर्याप ननल जाइत अछि एते गुडके नालय मुखा मुखा क नालय सामग्री अमीर अमओर अमोट कयन कहल एते मर्यापके छोट छोटमे विपक कउ कउ राखल जाइत एतेन काटल अमोट धरिक्क कहल जाइत ।

सदबिहार भूधरमे प्राप्त समेय फलमे विशेषत अछि लिच्छी लीची मूल्का ई मई पोलाकर जाइत तथा केतक डल डल नाम अ एक डल नाक जाइत एकर मध्य भागमे नाम आकृतिक लाल गेक मम जे कतर बीज नैन छेक इका जेन का मन्जर गेक केवैध अथा पेयमोटर पर चलाय गुदरक आकलन होत ई गुदरा फल त्वचाक मधुर आवरणसे अन्तर गत जकर अफका भाग उत्तलतम अ छुल्ल कहल छैक परिपक्व लोचोक त्वचाक गे गात्र ननल जाइत एकर एककक मय्य बैसाख जेठ अछि ।

अत्यन्त पैठ ओ स्वर्दिन पांशोक प्रमेद शाही लिच्छी कहल जाइत गुदराकल लिच्छीक पपेरके मूलाकी लिच्छी कहल जाइत एते गुड मल्लो तल प्रमेद जाइत लिच्छी कल जाइत लोचोक एक चोराय उतर गेक लोचोकल सन्पन कम गुदरा अ जेन पैठ चोरायला ओके गुड ओठवालिछी करन जाइत मियलामे लोचोक डेन गुडफरगु आ वेगानी जेन मय्य परलकल जाइत अछि

सदबिहार भूधरमे प्राप्त फल पछ कटहर कटहर कण्टकफल मय्येज दोषकाय केस थक एकरा मय्येज घनय कहल गन जाइत एते मय्येज कटहर का कटहरा जाइत तथा एकरा चोराय भाग्य कायल गुदराकल जेन गुदरा मर होत अछि को कोओ कटहरक का कलन जाइत काआक चोराय परल कटहरक अछि होत छैक आँताक ऊपरमे पाय जिल्लक आबगाक पैठही कहल जाइत । कोआक मय्येज एक दासगसे मय नाम गग हा पधकल छैक एते अंगके कयही कयरी कहल जाइत कटहरक मुखभाग गधने सज्ज रहत अंग भाग्य धोने अरा कमज पर दण्डाकृति भइ जाइत वक्र चक्र का कयरी जे काआ आकल होत एते पधकल दण्डाकर भागक केहा/वेहा/मुसा कहल जाइत पैठ ओ कटहर कायन कटहरक

गुडर लिच्छीके खरब कहल जाइत लिच्छी नखमं पाकलना कटहर रोगनिजा तथा पालन गेक जेन गुदरक कयकरके भइछा भइया कटहर कहल जाइत

जामुन पछल गधने मय्येज गुदरा प्रम हास जल अन्त फल थक एकर कयने मय मय कय एकर मय डेन धरि नाम हास अछि ई गुदरा फरैर अछि ई गुदरा कयल गग ननल गेक अछि गुण पकलन कय गेक हास अछि इ मयया भइया अ बरहमिछा गुधरक हास मयया गुधर आयत मयय नेवार हास पैठ कयनेक अन्तर गुदराकल जेन गुदर फल जामुन गुलजामुन जामु कहल जाइत एते अन्तरक जामुन गुदरा अछि एकरा प्रमेद फलक मय्येज भागमे एकल नाम अकृतिक बीज होइत ।

जेन मय्येज मयय एक मय मयय गुदरमे गुदर हो जेन मयय कत विशेषके लिच्छी कहल जाइत एकर फल लिच्छीके कय भूरायदा हास फलक माधुर्य हास गेक हास छैक जे पकलन किछत ननलन फल जाइत छैक पश्चात् आधुनक गुदरा जाइत छैक जे भूरायदा गुदरा जेन एकर जाइत छैक जे अनेक शुद्धमे विपक रहैत एतेन अन्तमे बल भाग्य अन्तरके पाँट कल जाइत एते गुदरा भाग्य म डल जाइत छैक तथा एते फलक कागे बीज फल गत छैक फल मयय किछत मय हास एते एकरा खपन उतर खप गाग लीत छैक

बैसाख नाममे कटहरका भूधरमे गालकक आकृतिक एकार विशेष फल प्राप्त हास एकर बल कल जाइत एकरा बरह आवरण अत्यन्त कटहर जाइत छैक एकरा लोच कय पकलनमे किछत पीत गेक मय जाइत एते फलक मयमे भागमे पीठ गेक गुदराकल मय होत छैक जेन अन्त मय हास मिथलमे पछा गाधक बल मय अछि बलक गुदरा बल बीज भाग्य बजल भोजन मूला रहैत एकरा को उल्ल हास जे अन्तरक अन्तर हास एते भागमे अन्तरिक लम्मा होत रहैत वक्र बलक लम्मा कल जाइत ओ अन्तरक बलके लेली कहल जाइत एते कयलना ललक एतेके ओठवा लेल कहल जाइत बलक बागमे जनयल एतेक बलके कटहर कहल जाइत कटहर हास अकृति रहलपर ओकर कटवनी कहल जाइत बलक फलक अन्तरकल दद पायक दुकाक गध्या खपयइया खपयइया कहल जाइत एतेक हास एते सातवा जेन पीठक लीमटी अछि

एतेक फलक गुदराकल फलमे को कउ कोने पिता कउ शकन बनाओल जाइत जकर मय्येज शकन कहल जाइत बलक मय्येज पका पातके पैठ को फलक मय मय गगन बल जाइत एतेन मय्येज पधक पातके बलक दुसा/दुसा कहल जाइत एते गुदराकल बल बल बलक दुसाक शकन कहल जाइत

बैरजो चूँच कऽ आँसिध आँसिध अन्य पदार्थ १५ मिली के छत बन जाल जइछ । एकरा बैरजुन कहल जाइछ ।

आयाधिक पैठ आकारक मटकही वृक्षमें इतर अन्त नम छैत कदम करण एहि फलक आकार छोट गैदक मटक होइछ तथा एकलान एक रंग रंगत हुनन छैत एकर बाहरी आधेगज रंगवाच मटका पुष्पकवि होत छैत तथा अन्तक भेन २ अन्तक भूक्ष सहस्र बाँय होत छैक छुपछापी १ कल मटकाहु रंगत १ होत कल जइछ एकर फडकीक जस्य मज्जन मदव होइछ रंग चटनीच बनेछ

अनार दाहिम जइछ नमम एक गोल छतर मय आकारिह मल्लमें पुण्ड होजइवला फल थिक ई छतर मय पुन्नाक आकारिक होइछ तथा एकर लम्बा ३ कंच १ अङ्गुल इच होइछ । एकर बाँहच आकारा किञ्चित कटुर फलमें चल्त होइछ तथा परिपक्वावस्थामें एकर रंग अल्प कटरी होइत छैक अन्तक पुष्पक अतिरिध सक्का कलच पांग जकाँ दुषिगाव होत छैक अनारक भौकरी धन्य गैतक मटका हुन होइछ । एहि फलक चय भागमें बाँज होत छैक तथा बाँजक चरु कल मय भाग ए होत छैक । यह भाग चय होइछ अन्तक वजाक मय मज्ज चय होत छैक मज्ज अन्तक पुष्पक पुष्पक पामाल होइछ एकर एक गोल विशिष्ट उपरकें बंदना करन जइछ

समस्या वृक्षमें कइवला फल होइछ कंग रमणफल कदनी/कदरी । एकर गोष्ठि मेलचुक्त नाम बलनाका होइछ वकर चय कइनाक पफ कहन जाइछ एहि वृक्षमें बोजकथे बहिर होइत एकरा कोस कहल जाइछ काकरी हुन मज्ज कदनी फलक गुच्छा निकलेछ जइरा वीर/वीर कंगक वीर कहल जाइछ रंग दुई रंग रंग वीर संख्याम एक रंग फलक पुष्पक हक्का करन जाइछ इन्काउ अन्तक मल्लकें छिम्प/छिम्पि कहल जाइछ वीर गोष्ठा भागक क अन्त हुन होइछ उ मुनिय कंग कहल जाइछ

मोतरा कोसक पपरकें बीम पुठिय कंग कहल होइछ अन्तक जस्य बरीमठ हन्वावला बनीमा कहल जाइछ ।

विशिष्ट करक प्रमदकें बागम तंजोयत कहल जाइछ क रैय अन्तक कंग भिंगापुरी कहल जाइछ अति छोट छिम्पे पाया मडका आ मुनियत पुष्पकें पुक्त कंग चिन्धि/चिन्धि/अनुपन कहल जाइछ । अँडोवला कंगक उपरकें अँडोवा कंग कहल जाइछ ।

गायिमें आँसि लूनि कऽ आँसिमें पाजग अरिफैं अँड इत जइछ मज्ज एहिमाके कंगक हत्था व सप्पुन चौकें रंग मय जाइछ जगाई रंग मज्जक मज्जक २५ अरिपगो भाति न कऽ आँसि रंग जाइछ तथा एकरा एक मायन छतर मय पुँह छुँह

रंग होइछ आँसि जगाई २५ कऽ मुनिय कंगक जाइछ एही कंग नक चिन्धि जाइछ एहि प्रकारे फुकवाक किया बुकब होइछ अन्तक व पुक्त जाइछ नक बुकब कहल जाइछ एहि प्रकारे फुकवाक कंगक जवण पांग २५ होइछ तथा भीतरक गुदरा मलमल २, जाइछ एहि कंग चक्रान कंग बुकब कंग कहल जाइछ एहि फुकवाक अन्तक जगाई पुष्पकें मज्जक कंगक जवण कलना जस्यने करिअसोन तथा भीतरक गुदराक मज्ज पुष्प २५ जाइछ अन्तक पुष्पकें कंग कहल जाइछ जे कंग स्वयं गोल पदार्थ २५ जाइछ मज्जक कंग कहल जाइत आंग आँसिमें पूर्वपांर भीऽ काँच कहल जाइछ ।

नमक मल्लम फडवला लयी जालीय फल होइछ काँकहि/स. ककाँट ई चन्नाका अन्तक होइछ एकर उरका खोँया हरिय पीयर पिञ्जत चित्रवण होइछ एकर गुँदा मयम संश दाँकें पीठ होइछ एकरा एक जय प्रमदकें फुन कहल जाइछ फुकवाक ई स्वयं फटि जाइछ एकर उपरकें आवरण रज्ज रंग होइछ । एकरा जगतक छतर अन्तक एक अन्य प्रमदकें गुहरी/गुरमी/गुहरी/गुरमी कहल जाइछ कंग उपजयक म्थान करवाय/कोरवाय कहल जाइछ

ताबुज/ताबुजा तार्बुज/ताबुजा चत्तोजालीय गोल वृक्षकान फल विशेष थिक । एकर आँसिफक रंग करो हरिय तथा दूनु निश्चित धिखणक होइछ । एक उपरकें फलक अन्तक भाग पीठ होइछ पीठक अन्तक गुदरा लाल रंगक होइछ एकर बीज कपी रंगक होइछ ।

खगुज/खगुजा खगुजा खगुजा चत्तोजालीय जलपुक्त फल विशेष थिक ई फल अन्तक होइछ एकर दूनु मज्ज प्रमदकें छैक एकर उपरकें आवरण रंग रंगक होइछ अन्तक रंग रंग होइत वनन रहैछ फुट कौकलिक अपेक्षा ई विशेष भिन्न होइछ । एकरा लाली संश कहल जाइछ ।

एक इत वीर कंग मज्ज अन्तक लगीजालीय फल थिक खगुजा सोडास २५ इत खगुजा अन्तक उरका तथा रंग रंग पांग निश्चित चित्र वणक होइछ वृक्षक अन्तक भागकें धुहरी मुदरी कहल जाइछ नौचाक भाग घेनी कहल जाइछ एकर मुदरी गोल होइछ रंग एकरा कंग कंग जवण जाइछ खगुजा पीठकें गुदरा रंग मज्ज विपक्त रहैछ एहि विपक्त भागकें फौक कहल जाइछ

खोँया एक प्रमदकें बागम खोरा कहल जाइछ छोट खोराकें बच्चा/बजिया/छिम्प कहल जाइछ ई कौच खगुजा जाइछ रंग एण्डाकृतिक रंग वरिष्ठ खोँया फल अतिवा कहल जाइछ ।

मखान/मखान पानिम उपजवला एकटा फल थिक एकर बीमाके

हाइल हाथ नेको । एकरी भीतरक खुदय अंग पकताय नन पक ईदत । पक अंग
खटपथुर हाइल । ई फल सद्यः प्रहल कयते जाइल ।

पेशाकी अपरका आवणक बमि कए मने द छ भेल अन्तर्गत बमि अन्तर्गत
निमणी कहल बाइछ नकीक काँकण। गार एस्टि आनि ग खान खान बाइछ उकरा
चक्क/चुक कहल बाइछ एकरा उखो पेश खूब भेलाय कएल गेल

कईखला आगेदाय वशम फड, जन्तु, यन नभू अकिनेक फल हाइस अम्लो कांवेम एका रण हरिग तथी पकलाय कगिछायन हाइस विमान यथा ए अकिनेक अम्ल अम्लिक फल हाइस- फलमा उवा यनलाय काली नभू अकिनेक फल हाइस एका यथायु हाइस अम्लिक फल यथा एका काली अम्लिक एकायन यन काली काली होइछ ।

आम्रसन का तत्वकर्म त्रय मयस पर्यं अत्यन्तं शुद्धं निशचर्यं ब्रह्म इत्येव नाम अत्य
मूलं यिक पातरी, धात्री-अमोरा एकर म्बुद खरूटा ओ किञ्चित् कथय ब्रह्म
अग्नि ई ज्ञापना उत्तर न्दायत ब्रह्म एकर आकाश गीत मया य किञ्चित्
हमिया पीयस विभिन्न होइछ सम्पूर्ण फल अनेक प्रेति छुट्टम विद्वत् हेतु तथा
धन्यवती भाग गाल बोजसै युक्त होइछ एकर चटनी जैचर तथा माज्जर बनेछ ।

[illegible]

अन्यतः एव लोह पातवत्वा यथाशक्तं यथा विधाया कर्तव्यं चेति एव प्रकृतं
फलं वैमाश्रये इत्यलं तद्वत् । अकारं दुष्कर्तुं प्रवृत्तिं विवर्तते । अतएव कर्तव्यं भवति ।
एतत् स्नात कर्तव्यं भवति । अतएव एतत् तद्वत् । अतएव कर्तव्यं भवति । अतएव कर्तव्यं भवति ।
युक्तं मया ज्ञातं चेति । एकं व्यवहारं यथायत्नं कृतवत्क रूपं भवति । एतत् स्नात
पश्चिन्नेयक भागं कर्तव्यं भवति । अतएव कर्तव्यं भवति । अतएव कर्तव्यं भवति ।
एतत् आवरणं भवति । अतएव कर्तव्यं भवति । अतएव कर्तव्यं भवति ।
एतत् स्नात कर्तव्यं भवति । अतएव कर्तव्यं भवति । अतएव कर्तव्यं भवति ।
एतत् स्नात कर्तव्यं भवति । अतएव कर्तव्यं भवति । अतएव कर्तव्यं भवति ।

आयातित फल

जनक फर्म विधिनाम आयातित ५३ औसमान-युक्त भोजन-प्रवर्धक प्रचलित
 देवुल जाइत रहित चदामो भोजन गोल आयातित फर्म होइत मपताम्बा/सन्तना एकर
 दुनु पार्थ चयन तथा गौहो होइत एकर भोजनको छाट्य अंश नवो अन्तुलिक होइत
 कर स्वाद सिद्ध होइत एकर अन्य प्रपद मोसमी मौसमी मोसमी कहल जाइत
 एकर फलक बोज खाकरय नैहो तथा पातल गंधा गंधा होइत पेच लतामक आध्यात्म
 रक्षता अभ्यासित फल नमपताम्बा/सन्तना होइत अछि

कन्वर्ट लॉसि हज्यर मिमिलि गोमि अकालक फल सेव होइछ जका दुनु भा
काल तछ नैक सोइछ । एकर नेक प्रमद कछनौरी सेव कहल जाइछ

मौल अण्डाकारक कट्टी रंगक अन्य फल स्यादू कहल जाइत ।

गण आकृतिक एकल फल होइत यहि तरीफा मरिफत एकर उपरक प्रकरण हएत खोधा बहाक आकृतिक होइत जकर रंग हरियर होइत एकर पीतक छादत अर टण्डा रंगक होइत जे अनेक मगम विषयक होइत । एकरा बीचमे काली रंगक बोया होइत एकर स्वाद अति चिन्त होइत एकर अत्य प्रमद पीतकफल/आँता/आँका कहल बसत । ईकर रंगक जलीय खादय अंशमे युक्त गोम लघु आकृतिक फल फलइया कहल जाइत एकर उपरका आन्तरण पत्रियाय मूल जाइत नय ई फल होइत

अङ्कुरा लघु, आकृतिक हरियर रंगक जलयुक्त फल शिख अंगूर/अंगूर एक एक अनेक संख्याय एकत्रित होत जकरा अङ्कुर/अंगूरक इच्छा कहल जाइत अकर जका अने-अने लघु फलसो खट्टा इमरदक अंगूर सेहो होइत पैष आकृतिक अंगूरक ए अङ्कुर मानका प्रवक्ता/प्रवक्ता कहल जाइत अथ अने आकृतिक अंगूर मुखओलपर फलसिन्ध कहल जाइत आचरित फलस कागजी बदाम/कागजी बदाम अवैल चिन्तिया बदाम युद्धकली महा आदरित सामग्री पीक पैषानो भाजनक अरन्ध आधारित फल सब अङ्कुर- कागज, अखरोट, धिरीन्दी आदि ।

दृष्ट

मैथिल मन्त्रन विन्यास वन्द्य दूध ओ दहीक महत्त तत्पाधिक ज्ञान अछि ई
 'दुध'न्यै अपा आहार घिक निर्धिलतक पशुचमन गाय मशीस भवन्ती जौ पैदी दूधक
 सत जन्ते । बकरी ओ भैंसीक दूध मात्रामे अल्प प्राप्त होयबाक कारण मद्य पोषाक
 होय अपुक्त बाइछ मुदा गव आ महम्मिक दूधसँ दही ओ एव अनेक धिधानत तैयार कबल
 जतक । गाय आ मशीसक स्तन दूधकम्पान हो बन/अडकन कहल जइछ । एहिमे
 बाइक मद्ययन्त्रसँ दूध गाइल जाइछ । गाइबाक एहि क्रियाक 'दुइब कहल जाइत अछि

तेजसगर्ग कहान जइस पानक पुच्छबाक कयम जइस जइस गनक गनक अछिअन
झरक कयबाक बीपारो बढती कहल जइस ।

पानक गनती

बोस सखार पानक पान एक कली कहल जइस । पानक गनती चौधरी चौधरी आ
एक सय पानक आखी कानी जइस अछि । १० सय पानक पानक गनती चौधरी चौधरी जइस
छेक । सय गनतीक एक कनयो अछिअन बोसक एक बीओ छयन बोसक अछि
सो आ एक सय बान्ह बोसक एक लोमो बोस अछि । १०० गनतीक कय गनक गनक
सन्तुष्टक पीछा कहल जइस । बोसक पीछाक पीछाक पीछाक पीछाक पीछाक पीछाक
कहल जइस । पानक गनतीक पीछाक पीछाक पीछाक पीछाक पीछाक पीछाक
कहल जइस ।

पानक उपयोग

पानक खाद्य वनकबाक हुनु एकरा घाँ झाक कर हंडोबन्ता अछि । एका टुल्ल
काटे देल जइस । पानक रीहपर चूक पानक लगायल जइस । चूक कयबाक
बन्तु विशंग अकरा सोप कहल जइस । एक सखर छिपछिपछिपछि अकरा अछि । अछि
कऽ तइअनपान पानक फुला दऽ भटकअनपान प्राप्त जइस छेक । आ एहिमे अचरन्त
पानि दऽ गोल कऽ अछि जइस छेक । चूक पानक पानक अचरन्त मसालाविशंगक
गोल पानक लगायल जइस । एहि मसाला विशंगक कऽक/कऽक कऽक
चूक कऽक अछिअन पानक सगे खाद्य विभिन्न पदार्थमे सुपारी नामक फल प्राप्त
अछि । ई नारीपरेक लघु अकारक फल भिन्न । एकरा सोपारो कयन्तो/गुआ/पुला पुंगी
पुंगीफल/मुसशुद्धि कहल जइस छेक । सुपारीक अन्त्य छोट छोट पानिचन/मानचन
मानचन्दी पानिकचन पानिकचन्दी जइस अछि । अछिअन पानिचन आ कऽक पुंगीक
छातिपान कहल जइस अछि । छानिचनक कयबाक कऽक कहल जइस । अछिअन
गोटाकोटा अछि छानिचनक अन्य पदार्थ अछि । अछिअन कऽक सुपारीक अछि
कालापानी कहल जइस अछि । आपानसँ चयन्त पुंगीक अछि आपानसँ अचरन्त
करल जइस अछि । आपन अचरन्त कयबाक स्वादमे पुंगी पुंगीक अछि अछि
कऽक पानिचन अचरन्त पुंगीक अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
पानक गन गनक कऽक जइस । एकरा विशंग विभिन्न कऽक जइस ।
संस्कृतमे सुपारीकें सुपरी कहल गेल अछि ।

१ पानक कऽक सुपारीकें फाँक कहल जइस । एककें अचरन्त अछिअन
कयन्ता उतर प्राप्त जइस । एककें एक एककें एक एककें एक एककें
पानक पानक कऽक कहल जइस । एककें एककें एककें एककें एककें
कहल जइस ।

एकरा पानक सुपारीकें लवणक कयम जइस । एकरा पानक सुपारी कहल
जइस ।

पानक संगे मसाला यद्य विभिन्नविध नामसय अछि । सींग/लवण
नामक कऽक अछि । एककें एककें एककें एककें एककें एककें एककें
एकरा पानक सुपारीकें फाँक कहल जइस । एककें एककें एककें एककें
एकरा पानक सुपारीकें फाँक कहल जइस । एककें एककें एककें एककें
एकरा पानक सुपारीकें फाँक कहल जइस ।

एकरा पानक सुपारीकें फाँक कहल जइस । एककें एककें एककें एककें
एकरा पानक सुपारीकें फाँक कहल जइस । एककें एककें एककें एककें
एकरा पानक सुपारीकें फाँक कहल जइस ।

एकरा पानक सुपारीकें फाँक कहल जइस । एककें एककें एककें एककें
एकरा पानक सुपारीकें फाँक कहल जइस । एककें एककें एककें एककें
एकरा पानक सुपारीकें फाँक कहल जइस । एककें एककें एककें एककें
एकरा पानक सुपारीकें फाँक कहल जइस । एककें एककें एककें एककें
एकरा पानक सुपारीकें फाँक कहल जइस ।

एकरा पानक सुपारीकें फाँक कहल जइस । एककें एककें एककें एककें
एकरा पानक सुपारीकें फाँक कहल जइस । एककें एककें एककें एककें
एकरा पानक सुपारीकें फाँक कहल जइस ।

पानक उपयोग

पानक खाद्य वनकबाक हुनु एकरा घाँ झाक कर हंडोबन्ता अछि । एका टुल्ल
काटे देल जइस । पानक रीहपर चूक पानक लगायल जइस । चूक कयबाक
बन्तु विशंग अकरा सोप कहल जइस । एक सखर छिपछिपछिपछि अकरा अछि । अछि
कऽ तइअनपान पानक फुला दऽ भटकअनपान प्राप्त जइस छेक । आ एहिमे अचरन्त
पानि दऽ गोल कऽ अछि जइस छेक । चूक पानक पानक अचरन्त मसालाविशंगक
गोल पानक लगायल जइस । एहि मसाला विशंगक कऽक/कऽक कऽक
चूक कऽक अछिअन पानक सगे खाद्य विभिन्न पदार्थमे सुपारी नामक फल प्राप्त
अछि । ई नारीपरेक लघु अकारक फल भिन्न । एकरा सोपारो कयन्तो/गुआ/पुला पुंगी
पुंगीफल/मुसशुद्धि कहल जइस छेक । सुपारीक अन्त्य छोट छोट पानिचन/मानचन
मानचन्दी पानिकचन पानिकचन्दी जइस अछि । अछिअन पानिचन आ कऽक पुंगीक
छातिपान कहल जइस अछि । छानिचनक कयबाक कऽक कहल जइस । अछिअन
गोटाकोटा अछि छानिचनक अन्य पदार्थ अछि । अछिअन कऽक सुपारीक अछि
कालापानी कहल जइस अछि । आपानसँ चयन्त पुंगीक अछि आपानसँ अचरन्त
करल जइस अछि । आपन अचरन्त कयबाक स्वादमे पुंगी पुंगीक अछि अछि
कऽक पानिचन अचरन्त पुंगीक अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि अछि
पानक गन गनक कऽक जइस । एकरा विशंग विभिन्न कऽक जइस ।

१ पानक कऽक सुपारीकें फाँक कहल जइस । एककें अचरन्त अछिअन
कयन्ता उतर प्राप्त जइस । एककें एककें एककें एककें एककें एककें एककें
पानक पानक कऽक कहल जइस । एककें एककें एककें एककें एककें एककें
कहल जइस ।

- [illegible]

नवमः अध्यायः

भोजनक कार्य व्यापार सम्बन्धी शब्दावली

इन्तर्गत अर्थ समीक्षाको मुख्य उद्देश्यक रूपमा पाँचवर्गित कार्याज तथा पाँचवर्गित कर्मकाज समेत तथा विविध विशिष्ट शब्दावलीको व्याख्या सहित अर्थ शब्दावलीको भाषात्मक रूपमा व्याख्या सम्बन्धी शब्दावली (अर्थ) का मर्मोत्तर

एहि शब्दावलोके^१ विष्णुनिखिल धर्मि बाँटल खा सकैछ

- (क) अनर्ह सम्बद्ध शब्द
(ख) विपक्षित सम्बद्ध शब्द
(ग) दृघर्ह सम्बद्ध शब्द
(घ) मिथ्यात्व एवं वक्तव्यार्ह सम्बद्ध शब्द
(ङ) थांबनसदृश सम्बद्ध शब्द

(क) अन्तर्गत सामग्र्य शब्दावली

[illegible][illegible]

व्यंजनसं सम्बद्ध

कांनों प्रकारक व्यंजनादिकें तरकारी/तीसन कहल जाइत ।

आकृति बिबाधमे व्यंजनादिकें जटलापर ओ तरका खाइका कहल जाइत । लघु आकृतिक काटल तरकारी भुजिया/भुजुआ कहल जाइत ।

व्यंजनकें आकृति रक्का कें अथवा रतिलि कें अथवा तरकारी अथवा टाटल हटा दल जाइत या जोंकिम नोन दल पत्राड अदि र तयसी मरि कें पिला दल जाइत । एहन तैयार खाद्य सना सना चाखा/परप कहल जाइत ।

आलूसं निर्मित तरकारी

आलूकें सामान्य विधिसें काटि कऽ तेल कहल भोजन २५कऽ भोजनक आलूक तरकारी बनाओल जाइत । एहिमे कांनों अन्य वस्तुक पिलाव धौकक पुसराअक रूपमे लपवइत इन्हन अछि । रना-आलू-कांखे आलू-पराइ आलू-कुम्भीरौ भेलू मुसीरी पीटा-आलू, आलू-बिड़िक अदि ।

आलूक पातर पातर खुण्डकें तेलमे जलापर आलूक भुजिया कहल जाइत । तहिना अना व्यंजनक भुजिया बनाओल जाइत ओ ओ सभ विभिन्न नाम अछिदित जाइत । तहिना आकृति बिबाधमे व्यंजनकें काटि तेलमे जलापर विभिन्न तरकारी चक्का नाम जानल जाइत । अमिनल आलूकें गरम पशनी २३ कऽ बनल तरकारी आलूक दम कहल जाइत ।

आलूक सानाक पोसय परर कांनों अदि भुजि कऽ परि दल जाइत लघु बैसनमे लेपल कऽ छवि मंलापर आलूकर कहल जाइत ।

कांच आलूकें औजोगक मरुअसैं इन्हन अति गन्ध पत्ता चक्का रकें अने तेल जाइत । एकरा औसैंत पानिमे २३ कऽ चांगि सौंन मिन्त धरि छुटि दल जाइत । अहो पानिमे अन्दाजसैं नोन पिला दल जाइत अछि । तखन ओकरा इन्हन पानि कें रोदम मुखा कऽ राखि लल जाइत । एकरा आलूक सिध कहल जाइत अछि ।

एहि प्रक्रियामें आलूक तरकारी बनैत । अनेक मनकें बडोक प्रक्रियामें बनओलापर ओलबाड़ी कहल जाइत ।

पीटाकें छोट-छोट छण्डमे काटि कऽ भुजलापर पीटाक भुजुआ कहल जाइत । एहि भुजियामें नोपक दुम्मा २३ कऽ भुजलापर धौकका भुजल कहल जाइत । वैत भासमे अवश्यमे खुपकक विधान अछि । पीटाकें चक्का कएते छ । बसल क पिठाग तंगल कऽ तेलमे जलापर पीटाक नहउअ/पंटरक/बीकरी बनैत अछि । पीटाकें

कांनों तेल कें जलापर पीटा अहोइ कहल जाइत । पीटाकें नारि फाँक अछि । २३ कऽ भुजलापर कऽ छिड़ कें जलापर धौकका/मल्लउआ कहल जाइत । अने पीटाकें लघु र नोन खादम कएते बीयमे मलल पानि कें जलापर कनौजी कहल जाइत । तीसो दल पीटाक सन्ध सेहो बनाओल जाइत ।

एकरा "कौनक" र ह्मा छुटि कें एक पाग बोलहोए श्रीर जऽ भागल नल जाइत । तखन एहिमे मचइ धनं खुण्ड अदि अछि कें तयल भुजि कऽ कांनों धनं ज तरका जेतक भुजुआ अछि । एहि प्रक्रियामें अनेक व्यंजनकें बनाइत ।

एहि रकें या २३ मन्तकें जिला कें भुजलापर बनल पत्ता तीसग कहल जाइत । अनेकक पाक कें कमर । धनं वा बसलक तय लपा पागा अऽ अनेक पाक अछि तेल जाइत । एकरा कौनक लपवइत पाक बनलाकार बनतु बनेछ । रकें तेल कहल जाइत । पीटाकें किछु समयक पश्चात छुटि/छण्डमे काटि लेल जाइत । एहन काटल खण्डकें चक्का/अनेकक चक्का कहल जाइत ।

एहि चक्काकें तरि कऽ रस २३ कऽ रसदार तरकारी बनैत ।

कांच अरहनेवासं बनल सामग्री

अरहनेवासं ओल बना कें तयानि लेल जाइत तथा तरकारीक विधिमें जलापर जटलबाक तरकारी/अरहनेवासं घंड कहल जाइत । तयलल अरहनेवासं कहल गेल । यान तय अरहनेवासं रकें तीरि कऽ पिला दल जाइत । एकरा खुआ रहता लपक कहल जाइत । एहि प्रक्रियामें कांनों वस्तुक छया बनाओल जाइत आ विभिन्न नाम अछिदित जाइत ।

कांच नाम तेल अनेकक पशनी पिलाकऽ खुपलापर इन्हनका इन्हन कहल जाइत । अनेक उलू नल तय पिलातयमें इन्हनका बनेछ । मरल घटल कऽबाक हेतु अनेक मरु पात भुजि अनेककें छीर छुटि छण्डमे विधक कें अनेकमे नोन तेल कऽ पानिकारकें कऽ ३ जिला दल जाइत । एहि प्रक्रियामें इन्हनका पत्ता सलाद कहल जाइत । अनेककें काटि कें तय पानिमे २३ मरु कें अनेककें बिदलक पाग नल जाइत । एकरा लपकक खरी लीक कहल जाइत तथा मराना पानि कऽ तरलापर बनलावा कहल जाइत ।

दुधमें सम्बद्ध

व्यंजन आकरामें दुध सदा पांनक हेतु तै व्यवहृत होइत अछि । मराने रानिमे एहे कां इन्हन विविध खाद्य पान बनाओल जाइत अछि । एहो दुधकें अपाक बनेत ।

मैदासँ निर्मित मधुर

पाँचमं घांगत मैदाके मैदासँ कहल जाइत अछि। चिकित्सक हँ हँ मैदानिक लतीकेँ गये चीथे खुसाय जनक अन्तर्गुहक मिश्रण बनयनि बाइत अछि। एकरा चूचु कायबक हँनु चासनीमे दुबोआसँ जइत तैक। एहि मिश्रणकेँ त्रिमेसँ कउनो जइत छैक। पैव त्रिमेसँ जितबा कहल जाइत छैक। किनारमे चुकल त्रिमेसँ अतिरिक्त इमानो इमरिती/इमरिती कहल जाइत अछि।

जिनको बनयबाक हँनु दु तीन दिनक बाद मैदानिक इपयल जाइत छैक। मैदानो टटका रहसाथ कम चानना फाड़ेत छैक। एकरा मैदानसँ कउनो त्रिमेसँ तँ कम मधुर होइछ, एकरा केन्द्र कहल जाइत छैक।

मैदाक सनक पापनसँ वकन आयनाकाय मिश्रणकेँ खाजा कउनो जइत छैक। एकरा गत मपकेँ मोटा/वीड कहल जाइत छैक। शीत बनयबाक हँनु दु तीन दिनक बाद चीचम तेल ओ दुबोआसँ मैदाक फाड़न दल जाइत छैक। एहि फाड़नकेँ छेते कहल जाइत अछि। एहि मिश्रणकेँ बाद छेते जलमेसँ पाव दल जाइत अछि। एहि मिश्रणकेँ खाजा कहल जाइत अछि। एकरा पैव आकृतिक प्रपटकेँ खाजा कहल जाइत अछि। एकरा माताबिक खाजाकेँ केन्द्रिय खाजा कहल जाइत अछि। एकरा अन्तर्गत प्रपटकेँ खाजा/खाजा कहल जाइत अछि। कोकर मिश्रणक एकटा प्रपटकेँ गुलाब खाजा कहल जाइत अछि।

मैदानो साइ आ पैव ओ पाव कऽ मानल जाइत अछि। एकरा जेकर दु इंच मोटा परतक रूपमे एकरा बाटपर बलि कलैक। हुकडाक रूपमे जाइत अछि। हुकडा मपकेँ घांगत चामनाक पाव दल जाइत अछि। एकरा आकृतिक गैडाकेँ सकरपाव कहल जाइत अछि।

मैदाक हँनु मैदा कउनो पैवकेँ हँनुसँ घांगत जाइत अछि। एकरा जेकर दु इंच मोटा परतक रूपमे एकरा बाटपर बलि कलैक। हुकडाक रूपमे जाइत अछि। हुकडा मपकेँ घांगत चामनाक पाव दल जाइत अछि। एकरा आकृतिक गैडाकेँ सकरपाव कहल जाइत अछि।

चामनाकाय ४ फिनी नामक फकवानक उल्लंघन गल अछि। अथवा प्रपट मपकेँ सनक वकन जेकरा मूल सन हुकडाकेँ घांगत जाइत अछि। चामनाक पाव दल जाइत अछि।

मैदानो साइ आ पैव ओ पाव कऽ मानल जाइत अछि। एकरा जेकर दु इंच मोटा परतक रूपमे एकरा बाटपर बलि कलैक। हुकडाक रूपमे जाइत अछि। हुकडा मपकेँ घांगत चामनाक पाव दल जाइत अछि।

बेसनसँ निर्मित मधुर

बेसन बनयबाक हँनु २३ फिनी नामक फकवानक उल्लंघन गल अछि। अथवा प्रपट मपकेँ सनक वकन जेकरा मूल सन हुकडाकेँ घांगत जाइत अछि। चामनाक पाव दल जाइत अछि।

बेसनसँ निर्मित मधुर बनयबाक हँनु २३ फिनी नामक फकवानक उल्लंघन गल अछि। अथवा प्रपट मपकेँ सनक वकन जेकरा मूल सन हुकडाकेँ घांगत जाइत अछि। चामनाक पाव दल जाइत अछि।

बेसनसँ निर्मित मधुर बनयबाक हँनु २३ फिनी नामक फकवानक उल्लंघन गल अछि। अथवा प्रपट मपकेँ सनक वकन जेकरा मूल सन हुकडाकेँ घांगत जाइत अछि। चामनाक पाव दल जाइत अछि।

बेसनसँ निर्मित मधुर बनयबाक हँनु २३ फिनी नामक फकवानक उल्लंघन गल अछि। अथवा प्रपट मपकेँ सनक वकन जेकरा मूल सन हुकडाकेँ घांगत जाइत अछि। चामनाक पाव दल जाइत अछि।

खोआसँ निर्मित मधुर

खोआसँ निर्मित मधुर बनयबाक हँनु २३ फिनी नामक फकवानक उल्लंघन गल अछि। अथवा प्रपट मपकेँ सनक वकन जेकरा मूल सन हुकडाकेँ घांगत जाइत अछि। चामनाक पाव दल जाइत अछि।

छेनासँ निर्मित मधुर

छेनासँ निर्मित मधुर बनयबाक हँनु २३ फिनी नामक फकवानक उल्लंघन गल अछि। अथवा प्रपट मपकेँ सनक वकन जेकरा मूल सन हुकडाकेँ घांगत जाइत अछि। चामनाक पाव दल जाइत अछि।

मूलोक्तानां रसमुक्ता/रसमयं वाचकं पितृहं वनेन साहं वपुःश्लोकान् एकं दत्तं
 यमवतं विप्रशोला शोभायते शब्दकं प्रमाणं पत्रं श्रेष्ठं रसमयं रसं रसमुक्ता
 रसपत्राद् कथंमं शब्दतं हेतुं कथंमयं आशुतेतुं हेतुं कथंमं रसमुक्ता रसं पद्यमं रसमुक्ता
 रसमुक्ता रसमुक्ता रसमुक्ता रसमुक्ता रसमुक्ता रसमुक्ता रसमुक्ता रसमुक्ता रसमुक्ता
 रसमुक्ता रसमुक्ता रसमुक्ता रसमुक्ता रसमुक्ता रसमुक्ता रसमुक्ता रसमुक्ता रसमुक्ता
 रसमुक्ता रसमुक्ता रसमुक्ता रसमुक्ता रसमुक्ता रसमुक्ता रसमुक्ता रसमुक्ता रसमुक्ता

संलग्नक: संलग्नक पकमान कागज नं०३३ सं. घा एव कमपाति संलग्नक स्थान

पञ्चम्यान्

कृष्णजी ने कम ही देखा कि जो तोलेंगे वगैरे पण बहुत आसपास कञ्चित गोल
जो जोलेंगे वगैरे बहुत गोल जलेंगे एकलु कुलुआ बालन लोड्डु का कटुहुकटन हनन
दन्तुजै मकनयान महुनयान कहल वारुड पेश आ जाना तिककैयै महुनआ
वगैरे वगैरे महुन वगैरे महुन वगैरे महुन वगैरे महुन वगैरे महुन वगैरे महुन
कहल वगैरे महुन वगैरे महुन वगैरे महुन वगैरे महुन वगैरे महुन वगैरे महुन
महुन वगैरे महुन वगैरे महुन वगैरे महुन वगैरे महुन वगैरे महुन वगैरे महुन

अथवा गृह्यते चित्रकमकः त्रिंशत्क इति अग्नि नाम नाम शकल वस्तु १० भागं
उत्तम इत्येव चित्रा टिकई त्रिंशत्का भद्रा नामक एकपात्र धर्मा अष्टि कृत खजुरकः
खजुरा ६ इति वज्रकः चित्रा त्रिंशत्का भद्रा नामक चित्रकमकः टिकई १० भागं चारानाक
इति इत्येव भागं नामक एकपात्र वनेन त्रिंशत्का १० भागं चारानाक १२

चक्रान्तर्गत चौगुला २९ कडाहं खुब घाँत गम कयलापर हस्तुआ जकाँ शुष्क मला इतर जीका छान छँट लाइया बचाय चक्रान्तर दस गोस्तादालापर दबलामेँ खनयसा अलायसा मलक उहामेँ बँदा अछि एकरे चिन्तुत आकारक अन्य प्रमद किम्वद कइल अछि ।

धन हीन पंडितक तत् गृहक मुनि साधन गुरुमज विष्कामक लोभ्या कादि
 छट छट गल सक्त १५ नदी बलान जाडत अंशु लेलम कानि क १५ अक्ष सक्त कथल
 कडत जीस एत एकमानक गृहपूज बंनुआ पुनि बलान जाडत लेक सवैप गलल
 क १५ अक्ष सक्त कथल क १५ अक्ष सक्त कथल क १५ अक्ष सक्त कथल
 गोकुआ गृहकी खबोनां क १५ अक्ष सक्त कथल क १५ अक्ष सक्त कथल
 क १५ अक्ष सक्त कथल क १५ अक्ष सक्त कथल क १५ अक्ष सक्त कथल
 क १५ अक्ष सक्त कथल क १५ अक्ष सक्त कथल क १५ अक्ष सक्त कथल
 क १५ अक्ष सक्त कथल क १५ अक्ष सक्त कथल क १५ अक्ष सक्त कथल
 क १५ अक्ष सक्त कथल क १५ अक्ष सक्त कथल क १५ अक्ष सक्त कथल
 क १५ अक्ष सक्त कथल क १५ अक्ष सक्त कथल क १५ अक्ष सक्त कथल

पैदा: नाम ही में है। अर्थात् यह १. आध्यात्मिक मांड कावला मगकी
 २. १०० शास्त्र लेख ३. लब्ध कमल नरम खालि ४. गृहलापर आंखांटा ५. कलम गीत
 ६. एकल पौर कुलीन ७. पिंडिकिया पिंडिकिया पिंडिकिया पिंडिकिया पिंडिकिया पिंडिकिया
 ८. कपल बनेत बनेत ९. मन्त्र भाग्योत्तर १०. गृहलापर ११. पनबद्धिपना
 पिंडिकिया कहल अर्थ १२. कथामें बगल जगजगल घमूक हं १३. शब्दक कथामें

जाग्रत सतव्याक भावि साधने कहल जाइत ॥ सावन भेङ्गलस बनस शइत अडि ॥
 बर जगि अंग मानल जाइत ॥ भूक सनस कहल जाइत ॥ ऐहिन दाना लमक जगल
 कयल जाइत ॥ ऐहिन दानि अ मानल ॥ सावि दाना बनस अ टलिधना कवजै ॥

[illegible][illegible]

काना बंधुओं दौभाग्य करता रत्न कष्ट कस्त माता अति भक्ति कर्मा क
दौभाग्य खटवाक क्रिया हृषिकर्षण/हृषिकर्षण धारण कर्मा माता । अन्तर्गत धरणा कर्मा
क्रिया कर्मा कर्मा माता । वा वा शब्द पुनः धरणा कर्मा क्रिया कर्मा दग्धकर्मा
कर्मा माता । अनेक वस्तु पदान पान्थन कर्मा कर्मा कर्मा माता ।

पटका बटका जस्य मातां कः मातृवत् इत्येका इत्येव इह इह कथं
नादल मृगल रत्ने पत्रकः च। अथवा कथं इति कः कथं कथं
धातु-शरीरक संज्ञा तस्य पदार्थक अथवा भेदे मृग मृग कथं बटल

[illegible][illegible]

171/पेचिलोक भोजन सभ्यते ज्ञानात्मके

[illegible]

यत्र कलक अस्य पञ्चमके मुं ऐंठाथव कालव बाइव ।

[illegible]

१८ भरतनाट्य नृत्यशास्त्र किंवा बन्ध क० इति जाइल अछि एकरा हाथ बाहर
कहल जाइत अछि तबन्धनार्थक अछि ए० पंचमल जाइत अछि भाजनानाम एकरा चुन संभ
कहल जाइत अछि एकरा अर्थात् जलसँ हाथ दुनोकें भाष कथल जाइत अछि एकरा
अर्थात् अर्थात् कथल कहल जाइत अछि जल भूमि पर क० धातुप्रक बाहर

પોચનક કાર્ય-આપ્ત સમયની સમયાવલી/૨૭૩

वस्तु अंगुष्ठमं तं व धा नहिवाय कृतिं क। गप कयत् शिष्टं अन्तर
नेलम धृजास्य ननाम हापः नोष्ठं तं तलक एहि शिष्टिकं कइकक कइल वसत तं
कइकलकि गश्चातं व वस्तु लाहियं द क ननिदु कथन वाडन नकरा वस्तुआ कइल
काडल आ अंगुष्ठा वन्यवाय किय छानव इहल पित्राय श्रेष्ठ पालनं नाल क
छेनला उतर तकआ वइकल ननक कला पालय दला वाडल वाडनं तं व मिदु द
नन र वनन वस्तु अंगुष्ठा धृजुता कइल वसत ननक गात्रा कम इल्ल अंगु
वस्तु पयुआ/मयुआ कइल वाडल

सिद्धा संज्ञक इत्यर्थे खल्लापः विकारजन्य वस्तुन म्माद धित्तान्ति ककारे
उत्तरं भिज्जादः भिज्जकत्वं तल जंज्वल खल्लापरं मुहमं वना प्राणिकं तुता लकां दणि
देहं ग्रहणं स्वपाकं क्कडु कट्ठणं जडसं कट्ठु त्तात्तापरं दुंरं शेषेण कं सकारं भजनं संहित
चत्तात्तं न्हग्गुमं समुत्तायकं कल्ल वाड्डं ।

दशम अध्याय

मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक ध्वनि विचार

मैथिली ध्वनि संपन्न गिरान दन्तयुग्म सुधैरु ध्वनिको ज गांधार्या विचार कयन छथि भोजन सम्बन्धी शब्दावलीक ध्वनि मुख्य स्वर अ व्यञ्जन ध्वनि यथावत् देखल जाइत अछि ।

स्वर ध्वनि

भोजन सम्बन्धी शब्दावलीमे अ आ इ ई, इ ऊ ए ऐ ओ ओ, औ आउ (अए आए) एउ आओ आओ ' स्वर ध्वनि सुनिगोचर होइछ यदि प्रत्येक खानुपासिक ओ निरनुवर्तक भेल करैछ ।

समस्त स्वर ध्वनि शब्दक आदिमे स्थित अछि शब्दक मध्य ओ अन्तमे स्थित अनुवर्ती प्रथवा व्यञ्जनक संग सुनिगोचर होइछ मूला अ ई तथा ऊ ध्वनि यका उपरक अछि अ ध्वनि शब्दक सन्तरे व्यञ्जनक संग सुनिगोचर होइछ ई ध्वनि शब्दक सन्तरे स्वरक रूपेँ सुनिगोचर नहि होइछ मुदा मध्य ओ अन्तमे उपरक संग सुनिगोचर होइछ ऊ ध्वनि शब्दक आदिमे नै स्थित रूपेँ सुनिगोचर होइछ एउ मध्य ओ अन्तमे स्थित ध्वनिक संगहि सुनिगोचर होइछ ।

ह्रस्वतर स्वर

व्याकरणक दृष्टिसे मैथिलीक स्वरमे एकमे स्वर म ई उ ए ऐ ओ आ ओ ओइ तथा ह्रस्वतः स्वरमे सुनिगोचर होइछ तथा ओ रंग्य स्वर एउ ओ ओ मपुक्त स्वर स्वर ह्रस्व तथा शोभ स्वरमे सुनिगोचर होइछ यथा दृष्टव्य

मेल- मेलचो मेलमोरो

मोआ- मोआओ

कठौत- कठौतिया

पैच- पैचका

अगरीत- अगरीतही ।

व्यञ्जन ध्वनि

ध्वनि सम्बन्धी शब्दावलीमे निम्नलिखित व्यञ्जन ध्वनि भेटैत अछि

क ख ग घ ङ च

ज ञ ट ठ ड

ण त थ द ध न

प फ ब भ म

य र ल व श ष

स ह र ल व श ष इ तथा अनुस्वार

ईध ई शब्दक आदिमे स्थित ओ अन्तमे स्थित कयन प्रयुक्त नहि होइछ

- क ध्वनि क ध्वनिक किञ्चित् परिवर्तित रूपमे उत्तरित होइछ ई ध्वनि शब्दक आदिमे नहि भेटैछ तथात्त यथा- केछ शब्दक मध्य ओ अन्तमे स्थित रूपमे कयमणि नहि ।
- ङ, ङ, च, द, ध तथा न ध्वनि शब्दक आदिमे नहि भेटैछ मुदा मध्य ओ अन्तमे प्रयुक्त होइछ ।
- ज ध्वनिक ट, ठ, ड तथा ञ ध्वनिक-प, फ, ब, भ, म तथा न ध्वनि शब्दक आदिमे नहि भेटैछ जाइछ ई तथा च ध्वनि शब्दक मध्य ओ अन्तमे प्रयुक्त होइछ ।
- ण ध्वनिक आदिमे स्थित यथा- मण्ड ओ गण कुट ओ गुण पेडा ओ पैण, मण्डो ओ अणवी भेडा ओ भोण इत्यादि ।
- य तथा र ध्वनि शब्दमे अपभ्रुतिक रूपमे सुनिगोचर होइछ ई ई ए ध्वनिक यथा- म आ ध्वनिक अपभ्रुति य तथा व, अ ध्वनिक अनुवर्ती अ आ ध्वनिक अपभ्रुति य सुनिगोचर होइछ जेना-

गुआ	गूआ	छोआ	- छोवा
काआ	- काआ	दुधिआ	दुधिवा
सिलटिआ	मिलटिआ	पटुआ	- पटुवा
भरिआ	सोहिआ	धरिआ	- धरिवा

बहुधा	बहुधा	पुष्टि	पुष्टि
अतिशय	अतिशय	सदृश	सदृश
गह्वर	गह्वर	शक्ति	शक्ति
दीप्ति	दीप्ति	पराधीन	पराधीन

गणनात्मक चरणक आत्मतः अथवा गणनात्मक धी उक्त चरणक प्रत्येक चरणक
परिणत चरण

चङ्गलां	चङ्गलां	चङ्गलां
जानिआं	जानिआं	जानिआं
गुङ्गां	गुङ्गां	गुङ्गां
तमिआं	तमिआं	तमिआं
विनिआं	विनिआं	विनिआं
अमिआं	अमिआं	अमिआं

* अनुनासिके कार्यं चक्षुषो गतं ह प उक्तं यथा

रंग	रङ्ग
बैंग -	बैरा
टैंग	टेकर
मुंग -	मुङ्ग
लैंग	लैङ्ग

स्वर गुच्छः

[illegible]

अनुअंशकर्मिणी	गैमा
अद	मंथड पकड छ पुड
जइआ गूआ	सपैआ नमइआ
अक	- कलस, जमइन, भित्तजन, कमडन
अकत	- म्हाडि, धोरबाखर, कलस,

इम	होआ रनगिआ कुनिपा पिमिवा मंगमुनिअ
इउ	- बिठस बिठ
उअइ	धनमिअइ
इउने	बिअंग नंगमओम
उअ	मइअक
अअ	मुमिआइव मुमुआगव
अआ	मूआ
आइ	गडजो कानाहअ घाइन
अअअ	लइआ कहअ ग्याइअ

ਅਰਜੁਨ ਗੁਪਤ

भावन संयन्त्रण राज्यावलीये अञ्जन मुक्तक दृष्ट गाट कांठि देखि यईत अस्ति
क अनवर्ण अञ्जन मुक्त यथा

कृक	कृक्का यक्का शुष्क चिक्कस्स मनक्का
गृण	टग्गो
जृव	डिज्जस्स, डज्जा, सुज्जो
जृव -	सुज्जो
सृ -	कुट्टो, कुट्टो, सट्टा नुट्टो, णट्ट यट्टा
सृ -	सत्ता, जिता, पुत्तो दन्विषता
नी	पुत्तो, पुत्ता नलगुत्त ।
उप	गप्पा इप्पा
अड	मोग्ग
अड	अमिअ
अ	सुरो पुगं
अव	मुत्ता दत्ता फत्तो जित्तो
अव	उम्भस्स भुम्भो गम्भल

एते तस्मै समस्तं व्यञ्जनं सुखं सामान्यतः जगति श्रुत्यप्राप्तं तथा सा
अर्पयन् तस्मै पठेत्

(ख) विधम वर्ण व्यञ्जन गुच्छ

विधमवर्ण व्यञ्जन गुच्छे दुः कण्टिक टण्डि मट्टेह इधम वर्णान् इत व्यञ्जन गुच्छक सङ्काणि आ सकेह सङ्किन अवाध चल्म ज्ञा आ पदप्रणक मर्याद इत्युच जाइछि यथा-

कृष्	नैसकली,
च -	पुष्प
ट -	मिट्ट, तट्ट, मिट्टी, पिट्टे, पुट्टे
तृथ	हन्म कत्थ

दीर्घ कण्टिम सघाव अन्तराण आ पदप्रणक संपाद सङ्कि सङ्कि चल्म

दृष	दुष्टे मउगिद्धा
पृष -	मिन्मदू

साधुनादिक सघाव आ सघावक व्यञ्जन गुच्छ मंडा इत्युच जाइछ मुद् इत मङ्गर्गिय प्रकृतिक पट्टेह यथा-

डग	झिठगा
हृष	पङ्कभति
गृह	खण्ड
ण्ड	गुण्डइ
नृथ	बन्धा
रृष	बन्धा

एहि तरह व्यञ्जन गुच्छम साधुनादिक सघावक प्रकृति सङ्कि सङ्कि मुद् किम् शब्दमे एकर अपवादा इत्युच आ सकेछ यथा- गुच्छा सङ्का चल्म इत्युचि

ध्वनि परिवर्तन

भाजन सम्बन्धी शब्दावलीमे ध्वनि परिवर्तनक विभिन्न आयाम संस्कृत जाइछ यथा

आगम

ग्रा	कदच्छु	काच्छु	काच्छुन
ग	नसुन	नसुन	

लोप

ग	स्थाना	धत्ता	धत्ता
---	--------	-------	-------

सं - अजवाकन जमानि

सं - सराव - सराव - सराव सराव

स - चपुप पृष पृषो पृ

स - ताक ताक

स - ताक ताक

सं - तट्टक तट्टक तट्टक

स - तट्टक तट्टक

स - तट्टक तट्टक तट्टक

स - तट्टक तट्टक

विपर्यय

स - तट्टक तट्टक

स - तट्टक तट्टक

स - तट्टक तट्टक

स - तट्टक तट्टक

स - तट्टक तट्टक तट्टक

विकार

भाजन सम्बन्धी शब्दावलीमे ध्वनि विकारक बहुआवासी इत्युचि इति पट्टेह जाइ एहि अम किम् प्रमुख ध्वनि विकार इत्युचि अछि

कतिपयक शोधिकरण

स - वज्र वज्र वज्र

स - वज्र वज्र वज्र

सं - वज्र वज्र वज्र

स - वज्र वज्र वज्र

स - वज्र वज्र वज्र

स - वज्र वज्र वज्र

सं - वज्र वज्र वज्र

सम्प्लोकाय

श.	प्राण्यो	पं०	पां०
स.	भूय	गुण	गू
स.	व्यय	व्यन्ति	व्यव
स.	अग्न	अग्न	आग्न
स.	मिन्न	मिन्न	मिन्न
स.	मिन्निका	मिन्निका	मिन्निका
स.	मिन्न	मिन्न	मिन्न

श्रीशैवपाः

सं.	ककॉट	ककऑट	ककॉड	ककॉडि
मं.	कदु	कहु	कदु	
श.	शक	साग		
सं.	घट	बद		
स.	पईट	पपुद	पापद	
मं.	कटाह	कडाह	कडाह	

अधोषीकरण

का	अकलांग	अपलांग
अ	ग	ग

अकारण नार्तिवर्ण्यकरण

मं	अर्चि	अर्च	अर्चि	अर्च
सं	पुत्रा	पुत्र	पुत्र	पुत्र
सं	वृत्त	किञ्च	कञ्च	कञ्च
सं	मन्त्र	जगत्	मन्त्र	मन्त्र

पक्षपातो करण

स.	पंकित	पाति	पंथति
मं	कृष्ण	त्रिव्वि	
स.	भुंगी	मिडगी	मिडकी
धा	खरबज	खरभडा	

मूर्धन्वाक्षरणा

५	पुष्प	गङ्गा	गङ्गा	गङ्गा
६	सुख	सुख	सुख	सुख

महाराष्ट्र ४८

लक्ष्मि - लक्ष्मी
 शोभायन् - साहाय्य - साहाय्य - साहाय्य
 पिष्टान्नक - पिष्टान्नक - पिष्टान्नक - पिष्टान्नक
 कम्पात - कम्पात - कम्पात - कम्पात

अन्यविकार

त	च	मन्त्र	माध
श	ने	कतश	कुन्त
ह	ह	गुह	गुह
म	र	गरिकल	गरिकर
न	न	लवण	तुन
ध	ख	शोर	खीर

सर्वार्थ सुखी

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

निवेदन एवं विज्ञापन एवं प्रकाशन

3. कः ६ १५ अथवा १ त्व 3 वैश्वी आकषण मौसम हा सुपन्ना तपंगा २४
५० १-१३
4. पिपिता दादा इकाज २ ३
5. वैश्वी आकषण का विवरण २०००-०१
अथ २००१ ६ अथवा २००२ अथ २००३ तथ २००४-०५ का आकषण वैश्वी लिखित
२००४
6. वैश्वी आकषण का विवरण २०००-०१ २००१-०२

एकादश अध्याय

शब्द विचार

व्युत्पत्तिक दृष्टिर् शब्द विचार-

व्युत्पत्तिक दृष्टिर् धावन सम्बन्धी शब्दकालोमं बहु यौगिक अं यागरुह एहि तोन प्रकारक शब्द भेटैत अछि ।

एक

रुह शब्द अं धिक जकर समुदायक अर्थ हो भूदा अचञ्चक नहि

पात्रात्मक अभिरचनक दृष्टिर् धावन सम्बन्धी शब्दावलीमे सम्मिलित एकाक्षर शब्द रुह प्रकृतिक अछि । यथा- को, मो, जो, धी, पू इत्यादि ।

एकाक्षर शब्दक विवरण करैत पाणिनीयक कथन छनि । एकाक्षर शब्दमे एकाक्ष संज्ञा प्रथमा विशेषण नाम अछि । पूरा से कथमे उदाहरण इन्द्राणांसे सुविदुः श चङ्ग को, मो, जो, धी, धी, पू एकाक्ष संज्ञा शब्द धिक ।

एकाक्षर शब्दक मुख्य अवयव प्रत्यय अछि अ. एकरा सादृश नानाकारक से समीक्ष, तथापि अस्तित्वहीन नहि अछि ।

धावन सम्बन्धी शब्दकालोमं रुह शब्दमे दुवारा शब्दक संज्ञा उद्भूत भयो अछि । ई शब्दमे धावनक आधार समाने उपकरण एव धावन व्यापक विशेषण अथ धावनक हेतु इच्छा अछि यथा सुदरी गृह जानी इमो तहो कोनी हामि इमो धान, पोहो बाटी पात पाछ, महु, गहु, मानु इत्यादि । दुपला शब्द सबैत रुह अछि ।

धावन सम्बन्धी शब्दावलीमे मयाधिक संख्यामे प्रयोग शब्द दृष्टान्तक बहुर धावन अथवा, भन्तर कोकोइ कटीत कटुआ कुटिआ कटोना कटेल कनखो कडाही गहुप, गिलास धडेल ककना छगार छिपको जाबुन टोकना उकना चनन तमला तरुआ पटुआ, धियाजु पलाको फिन्च पकुहा खड्ग बटोम आआमे चनन

बोली बहुरा शङ्कर धूम भुरइ, मेठखी धकुआ महुनी मिलौट सुपारी, सरिसां काँदे । इहा शब्दमे सामान्यतः भई कर्तिक अछि । तथापि किछु शब्द यौगिक स्वरूपक सहा अछि यहेइ यथा सेबर दोबर, सतपू, रसपू इत्यादि ।

चतुर्धा शब्दावली आ बहुरा रुह शब्द जहो भेटैत जाहिमे सर्वाधिक संख्या चतुर्धा शब्द अछि यथा कनखुर तितकुट परिखन, धिउजुआ, धिराइन, बटखोही फटकुही, इत्यादि ।

पंचाक्षर- अलीतही, ककामकूट, सबकुहाइ

षडक्षर- सुभद्राइन

यौगिक

यौगिक शब्द अं धिक जकर अवयवक अर्थकायक संगहि समुदायक सहा अर्थ बोध हो ।

पात्रात्मक अभिरचनक दृष्टिर् धावन सम्बन्धी शब्दावलीमे यौगिक शब्द जकर शब्दमे प्रारम्भ होइत नया एकर अन्तमे बहुरा शब्द धरि अछि । यथा शब्दक उदाहरण धृति टन का चुकन अछि । एहिना अन्यो उदाहरण द्रष्टव्य अछि ।

— + धावन शब्द- दलिपूही, लमघेल

पञ्चाक्षर शब्द- कुसुमसारि, गुराचाम्प, पनबस्ता

षडक्षर शब्द - बरहबरना, बनठसिनिघी, बरहभसिया

धावन शब्दमे शब्दावलीमे एहन शब्द प्रचुर संख्यामे प्रयुक्त अछि । एहि शब्दावलीमे नन्त विवरण भेटा आ खतराकायक क्रममे संज्ञा विशेषण वा क्रियाक योगसे पैल देखि पढ़ैत ।

संज्ञा + संज्ञा

गहुम + बओ गहुइ

गहु + पही - गहुपही

घर + बने - घरजाना

चनने + बधुआ चननबधुआ

धुही + लाइ चुहलाइ

बओ + कूट बकाचुट

दहो + चहा दहिबाहा

वाल + पिट्टी बलिपिट्टी

वाल + पूड़ी बलिपूड़ी

वाल + साग बलिसाग

फूल + कोबी फूलकोबी

वन + धौज वनधौज

गाड़ + डाट मल्लडाट

रस + गुल्ला रसगुल्ला

संज्ञा विशेषण

मौड़ गील मैड़गिल/मैड़गिल्ला

औठा + अम्भत औठअम्भत

संज्ञा + क्रिया

कद्दू + रकस कद्दूरकस

छापट्टि + रमुल छापट्टमुल्ल

छापट्टि + रमुल छापट्टमुल्ल

गुड़ा + रबल गुड़बल

भर + रनीय भरनीय

धी + रक धीरक

तेल + रक तेलरक

बालि + रबोट बलिबोटना

दिवाड़ + रलाग दिवहलम्

मान + रतसिन मानतसिनक

पात + रबोट पातबोटना

पात + रबोट पातबोटना

पात + रबोट पातबोटना

पात + रबोट पातबोटना

पात + रबोट पातबोटना

पात + रबोट पातबोटना

पात + रबोट पातबोटना

विशेषण + संज्ञा

आवा + मैली आवामैली

आवा + पैट आवापैट

एक + पोट एकपोटिया

रौं + फाओ रौंफाओ

रू + मन रूमन

पौं + सैर पौंसैर

बारठ + मास बारठमास

भरि + पैट भरिपैट

मध्यम + नोन मध्यमनोन

मोट + बान मोटबान

रस + मुँ रसमुँ

ताल + चढी तालचढी

साव + पुतो सावपुतो

हल्लुक + बान हल्लुकबान

विशेषण + विशेषण

खट्ट + मिठ खट्टमिठ

खट्ट + मधुर खट्टमधुर

विशेषण + क्रिया

आवा + खीज आवाखीज

आवा + सोझ आवासोझ

क्रिया: एठ संज्ञाक चरणे बनल किछु रौंनक उदाहरण स्तह देखि भईछ यथा:

रू + मनी रूमनी

रू + तेल रूतेल

रौंनक शब्द विशेषण किछु विशेषता देखि भईछ कछना रौं अवयव रौंनक बनलाक परबाले यथाहते रहि शब्दनिर्माण कैने यथा:

मोल + बड़ी आलंबड़ी

पंच - कृषि - सचग्राम

धन + मंत्र = समझा

$$\text{रस} + \text{गुल्फा} = \text{रसगुल्फा}$$
$$\text{दास} + \text{सुन्दरी} = \text{दाससुन्दरी}$$

युद्धादि तत्त्वक क्रियासु अस्म्ये जीवक शब्दः स्यात् । अस्मिन् जीवकः
अविषयक स्वरूप परिगृहीतः यः प्रादुर्भूतः । परिगृह्यते विभिन्न स्थानेषु दृष्टव्यम् । अत्र
यथा

(क) पणिल अखयवक पणिल सौर्यस्वर इत्ये पण बाह्य नं-

भाषा • वैष्णवं अध्यात्मम्

$$\text{आपद्धि} + \text{अपुन} = \text{अपद्धपुन्य}$$

बलन + बधुआ बलनबधुआ

शान्ति + पिदतो = शान्तिपिदतुं

पाँच + सं = पंचसंग

फूल + कबो - फूलकबो

न्यास • मुँह • तालमूँहा

प्र. कतहु कतहु पहिल अन्तर्गत दामहु रोथ थ्या हुम्व प. २१६ चर

सद्यः + मिदुत - कार्यमिदुतो

दही = बस। दहिबध्वा

राष्ट्रीय + एक = ऐतिहासिकता

ग) अनङ्क भौगिक शब्दों में सँभार प्रत्ययों पर ध्यान देकर संतुलित करते हैं।

चूड़ा + स्नाह = वृद्धलाह

सालि + पृष्ठो इतिपृष्ठो

म कृतांक यौगिक शब्दपे दांदा अनाथक स्वरूपं $\frac{1}{2} \times 2 = 1$ प्रकाशक
परिकर्तन होइत । यथा-

आपदि + सुख - आपदसुख

गुहा + अल + गुह्यचाला

पर ६ अक्षर धारणा

$$3\text{H}_2 + \text{N}_2 \rightarrow 2\text{NH}_3$$

रात्रि + सप्त दशमिभ्याम्

बाराह + श्याम = बन्धमन्त्रिया

मंटे + धन = मोंटेशाना

मातृ + पुत्री = सप्तपुत्रिया

अने शब्द देखते छे ज सैमिक शब्दक शर अंत्य सामान्य निर्धृत एव
बाल्यिक उपात्त अमनोव हांडु अने शब्दक शर पयसमं व्यंजनित देखल
नइ अ अन्तिम ह्म ईधत्वकें शर करै ।

योगसूत्र

यागकृत अन्न शब्द धिक् उकर अर्धवाच हो भट्टहि भूमिपक अर्थ वित्तभान
ह। १० भन्नेक भन्नेको यागकृत शब्दाख्यानो अन्त्य सेख्याम कनाक शब्द परेत अति-

1. मूढमंद ई राक्ष मूढो आ घोटव एहि दुइ शब्दक योगसँ निर्मित अछि। मुदा ई राक्षक सङ्घ एकरा मूढाक योगसँ निर्मित तीयन विग्रह हेतु विनिराज आभामे प्रयत्न अछि ।

१. गणेशविष्णु- ई शब्द राम देवता विरुद्ध एव लिखनी हीन विनाश शब्दक
योग्य बनाने के लिए आ गणेशविष्णु नामक लक्षणक विलक्षण अर्थ में प्रयुक्त होना

इकनपांशे उ गुरु हाकन वास्तव औपचारिक शिक्षागत बामन विद्याय एवं पौरा
साधारणतः क साधने स्थिति अस्तु मुद्र ई सागव प्रकृत विशिष्ट प्रभदक हनु
रुद्र अस्ति ।

चनकपुष्पाः इत्येतन्नानां पुष्पाणि काष्ठविशेषा यथा बहुधा भागविशेषक
यागर्माणि विविधा अङ्गं इति बहुधा ज्ञातव्यं स्वस्वगतं प्रथमकं हेतुं विनिरागं अग्रे कृतं
कृत्स्नं

८. धनपिआइः इ शब्दं दानि ~~इत्य~~ नथा दिआइ प्राव शब्दक यागर्च बनल
उरुंइ इति वस्तुन इ शब्द अल्प खान्द ग्रहण अर्थार् अल्पहारक वितरण अर्थार्
क्ये अर्थि ।

6. **अमृतं** : एक उल पत्रे तथा एकाक यागर्त विहित अस्ति मृदा इ अयन विलक्षण अयं पत्रपिचुमे रूढ अस्ति ।

पञ्चदश पल्लव पादस पैचस पसासस पसससस पीयस फटकस फनस पनास
बारकास, पकोरास, गन्ध, लोकास, इकास, इत्यादि

सरल एवं संयुक्त क्रिया

सोजन सप्यसो शब्दावलीस आता ते संयुक्तस सन क्रियास व्यक्तस हाइस
पुता अनक संयुक्त क्रियास प्रयोग सहा देखल जाइस यथा भाग न्नास चद आदस
योग लगणस, लोडस फटस, इका बारस, इत्यादि ।

नामधातु

सोजन सप्यसो शब्दावलीस अनक विशिष्ट अर्थस शाब्दिक परिभाषिक शब्दास
प्रयोग वृत्तिगतास हाइस यथा असमायस असितस असनास कटुआपस सुटस
सुटिआवस गलिआवस चिकनास, चिमनास डोगस इंगस पनिआवस पंगस,
फुफुडिआवस बबुरिआवस बलुआवस बसिआवस भाफस मसुआवस रिखावावस
लटिआवस लमिआवस, सिमसिआवस, इत्यादि ।

किंतु नामधातुस अनुकरणत्मक अति सहा दृष्टांतस हाइस यथा

कुडकुडास, कुडआस, टटास कुडुआस, फल्लस फल्लस, फुफुआस
फुफुआस, सुसुआस इत्यादि ।

अव्यय

सोजन सप्यसो शब्दावलीस अव्यय धातुक सामान्य शब्दस असे
किंतु अव्यय परिभाषिक शब्दस सहा घेईस यथा कुच कुच उबर उबर
पुका पुका पसर पसर हाई हाई कळ कळ इबा इबा इत्यादि

हास प्रकारक अव्ययस एका शब्दस पुनरावृत्ति करुन विशेषणक हेतु प्रयुक्त
हाइस ।

स्वार्थक शब्द

स्वार्थक शब्दावलीस तावयें हेतु शब्द पुनरुपे जेणे करुन विशिष्ट अर्थ
वधावन बरल हेतु हेतु पुन आंठ विशिष्ट अर्थस हाइस पुन व इका उक्तांत
अर्थक छोटन स्वार्थिक प्रत्ययक योगस हाइस हेतु

एहन शब्दस किंतु ते सत्त्विक लघु दांठ आ वीचल्ल रूप घेईस यथा

तसल-तसलस, लाड-लाडस इत्यादि ।

३ किंतु स्वार्थक शब्द समूहस वेधस आ लघुत्वक चिन्तन रचून हाइस

वन-बार-बार होआर होआर, कडीना-कडीना पोटी पोटी कांहा कांहा वन-वनो
इकास इकास केतास केतास तसल तसल हांछ-हांछी कांतु कांतुली क्दा क्दा
पडस चडस घटकुड घटकुडा सोबरना सोबरना आस

किंतु स्वार्थिक शब्द समूहस अव्यय अव्यय अर्थगतक अर्थगतक हाइस
यथा- बोल-गिलस, बसल-बसलस, घडस घडस इत्यादि

पर्यायवाची शब्द

एकस अर्थक शब्दस भिन्न शब्दस वरुन पर्यायवाची शब्द कहल जाइस
तथास सनसोस हाइस सनस सनस हाइस एका शब्दस अर्थ किजिन भिन्न व्यक्तस,
जथेयाल्ल हाइस असे ते सामान्यत एक शब्द पळता आ पु अपका दुसरे अधिक शब्द
सका सामान्य अर्थ करुन कन प्रकारक मुख्य विवरणस पुनरुपे हो पर्याय कहल जाइस असे

सोजन सप्यसो शब्दावलीस अनक पर्यायवाची शब्द समूह सहेत असे जेना

डिंगा इचना कुडस मनुआ हांठि बसन तीसन ताकागी इत्यादि

तथास फटस आंठि यथास पर्यायक वरुन व्यक्त हाइस आ एका दुनू
मुखा छिआ दूधक करुन उतर गेल मा अंठा हेतु पुस फटस स्वत फाटा
दूधक हांठि करुन हेतु असे असे प्रयत्नपूर्वक काडल सन अर्थक हेतु शब्दस
अर्थ यथा असे किजित भिन्नतास बहूना तथाकथित पर्यायक पर्यायवत् कांठ
अधिक समीचीन असे ।

एहन सप्यसो शब्दावलीस उं प्रवृत्ति हेतुन जाइस वं आ पर्याय वनमुखस हांठि
हांठि हांठि ओ इमस सुत वेल वेल जाइस ।

वैकल्पिक शब्द ओ मानकीकरणक समस्या

एक शब्दक बहुलप इत्यादी केली सगळी शास्त्रात प्रवृत्ति धरुन एकाप
किंवा के शाब्दिकता शब्दस कहल जाइस आ पुनस पसस अन्त्यास शब्द
जकांय शब्दस सगळी पसस तरुन परिभाषा शब्दस सगळी सगळी सगळी
सगळी शब्दस सगळी पसस शब्दस सगळी पसस शब्दस सगळी पसस शब्दस
सगळी शब्दस सगळी पसस शब्दस सगळी पसस शब्दस सगळी पसस शब्दस

एक शब्दस भिन्न शब्दस सगळी शब्दस वैकल्पिक शब्द स्वभावक हाइस
हेतु शब्दस शब्दस शब्दस शब्दस शब्दस शब्दस शब्दस शब्दस शब्दस शब्दस
शब्दस शब्दस शब्दस शब्दस शब्दस शब्दस शब्दस शब्दस शब्दस शब्दस
शब्दस शब्दस शब्दस शब्दस शब्दस शब्दस शब्दस शब्दस शब्दस शब्दस

संज्ञायां विशेषण निमोक्षण इ प्रस्ताभेक एतेषु पठेत् यथा काठ-कठार
घुण्ड-घुण्डार पर-परार बाण-बाणार पुला-पुलार भन-भनार मर-मरार
रोह-रोहार । सन-सनाह सौर-सौरह । मार-मारह ।

आठ- इ प्रत्यय विशेषणक निमोक्षण करैत एतेषु यथा अठ-अठार अठन-अठनार
मठन-मठनार उमिनल-उमिनलार

उक- इ प्रत्यय संज्ञायां समवयवक विशेषण शब्दक न्याय करैत एतेषु पठेत् यथा
पोर-पोरक । एति-एतिक ।

एठ- एतिसे संज्ञा शब्दसे सम्बद्ध अथ यवक शब्द निमोक्षण होइत एता
अरवा-अरवेठ । नहरि-नहरेठ ।

औनी- इ प्रत्यय भावायक संज्ञा तथा स्थानमूक विशेषण निमोक्षण करैत एतेषु पठेत्
यथा कषाय-कसौनी । पोत्रि-पोत्रौनी ।

झा- इ संज्ञा विशेषण तथा भूतकालिक कुदन्तरी प्रपञ्चार्थक विशेषणक निमोक्षण करैत
यथा शीत-मितका । घायो-घरिक । पकल-पकलक । मित्र-मित्रका । भक्त-भक्तिका ।
मोड-मोडका । मीझल-मिझलका ।

गग- इ स्वाधिक प्रकृतिक अत्यन्त आचल प्रत्यय तथा अधिचयक अधिचयकक अर्थ
यथा काठ-कठार । शीत-मितार चिकन-चिकनार छनद-छनदार प्रस-प्रसार
झा-झांगार तेल-तेलार दूध-दूधार नान-नानार यति-यतिार मिट्ट-मिट्टार
सोह-सोहार फोक-फोकार

दान- इ स्थान मूक संज्ञा शब्दक निमोक्षण करैत यथा दान-दानार पाक-पाकन

दाग- इ प्रत्यय यन्त्राधिक सूत्रक अर्थ यथा दाग-दागार दाग-दागार दाग-दागार
रस-रसदार दा-सुधदा एकर सात अर्थभाषक 'दा' शब्दने जय ।

घा- इ स्वाधिक प्रत्यय संज्ञा शब्दक निमोक्षण करैत एतेषु पठेत् यथा
भाकुर-भाकुरा । लभ-लभन । खीण-खीण । मर-मर

विभिन्न शब्दसे इ आज्ञात्मक विशेषणक यथा चित्त करैत एते
कोठ-कोठा । खरभुन-खरभुनार वाग-वाग

पूठ- शब्दक संग इ सम्बन्धाधिक संज्ञाक निमोक्षण करैत एतेषु पठेत् यथा
मूठ-मूठक । मिष्टान-मिष्टान

पु- इ प्रत्यय अगाधिक संज्ञासे स्थानार्थक संज्ञाक निमोक्षण करैत एतेषु पठेत् यथा
पुखो-पुखार

री- इ भवत्यनुवर्तक विशेषण आ संज्ञाक निमोक्षण होइत एतेषु पठेत् यथा गौआ-गौआरी
आ- गौआरी सम्बन्धाधिक मूक शब्द निमोक्षण होइत एतेषु पठेत् यथा कूट-कूटार
चिन-चिनार इ स्थानमूक अर्थ देत चिन शब्दक अर्थ रह्य अछि

हो- इ प्रत्यय मूक भाव विशेषण से भवति पाषप उत्पन्न माछसे मछली दानिसे
रहित दूध-दूधार जेठ-जेठारी तेल-तेलारी सम्बन्धाधिक विशेषण शब्द निमोक्षण करैत

एकल प्रयुक्त उद्धृत प्रत्यय

संज्ञाक विशेषण गौआ शब्दक प्रत्यय अन्त्य अछि इ मग कोना खास एकल
शब्दक अन्त्य अन्त्य परिचलन करैत देत दुष्टिगाव होइत । यथा-

अओठ- पू- पुआठ पर भयम नवाके बांगियारी नंदनार विधि

अठ- चार-चारठ (चारक चिकन)

अनी- मोह-मोहनी (छोट मोह)

आठ- पैस-पैसठ (बकने पछीमक दूध)

अँठ- मधुर-मधुरँठ (आम मधुर)

अव- ठेल-ठेलाव (तेलक मुठियारा)

अर- ऐठ-ऐठार (ऐठ स्थल)

अर- बाप-बापिल (आमक सुखीत)

इल- फोक-फोकल (फोक सदा)

उको- डोर-डोरको (धोर डोर)

उल- नक-नकुला (नकसे युक्त)

उली- कडाह-कडाहली (छोट कडाही)

अनी- काठ-कठली (छोट कठार)

एनी- सभा-सभाती (सभा धरि)

अगि- दाभ-अगि-अगिनी दाभक आनंद दल आनंद मिष्टान

अँअ- सँअ-सँअ (सँअ पदक)

औकी- मोछ-मोछी (मोछा स्थानक पद)

औँइ- कषाय-कसौँइ (आमक खाद्य विशेष)

औँठ- पान्नि-पान्नी (पान्नि अक्सरपर पसारीकेँ देल पकयार)

औड़- उकल-उकली (उकलर सग खगल अन्न)

सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दावलीक मुक्त आ सुसंगठित विशद दत्त जइह अर्थज्ञानक
पावन सम्बन्धी शब्दावलीक कौनक अद्यतनक निर्यातमे यथा रूप न इत्यदि कालक
शब्द साधक स्थितिमे यथा वाचो कालनि वाचन कृत्वा दूरनि कालनि भेद
मिलनि मर्यादा मर्यादा इत्यदि कालक जनि परिवर्तनक निर्यात यथा ज्ञान
सुदृढी कालनि विषय निर्यात ज्ञान सुदृढी इत्यदि यथा कालक गत अथ
परिवर्तनक स्थितिमे, यथा विरहोत्पन्न सेवन इत्यदि अस्ति ।

पञ्चकालीन अद्यतन रचना पञ्चकालीन वा पञ्चकालीन तन्त्र अधुनिक युगक
महाकाव्य युगक काव्य अथ उपन्यास निर्यात अथवा सा साहित्यिक काल
विषय विषयमे पावन सम्बन्धी शब्दावलीक प्रयोग एकर भावने तन्त्रकालीन
कारण स्वाभाविक रूप होइत देखि पडैत अस्ति ।

साधुनिक वैदिकी भाषा पावन सम्बन्धी शब्दावलीक स्तन अधुनिक सम्बद्ध
उपकरण अधुनिक भाषा आ कालीन भाषा अस्ति विरहा शब्दावलीक अद्यतनक
उपकरणमे अनेक अद्यतनक भाषाक निर्यात देखि पडैत छान के काल आ निर्यात
सम्बद्ध उपकरण ।

पावन सम्बन्धी शब्दावलीमे भानु, पाय पादि काल वस्ति आ तृणक
उपकरणक व्यवहार होइत रहल अस्ति नुन बहान उपकरण अधुनिक भाषाक अद्यतन
भाषाक कारण एहिमे सम्बद्ध शब्दावली कालक स्थितिमे देखि पडैत ।

भाषाक साधन भाषाक विषय उपकरण अथवा शब्दावलीक अद्यतन रचना
अस्ति एहि भाषाक पञ्चकालीन शब्दावलीक अद्यतनक अथवा अद्यतन
पडैत भाषाक काल व्यापक सम्बद्ध शब्दावलीक अद्यतनक अथवा अद्यतन
प्रक्रियामे अस्ति ।

एहि भाषा निर्यात महिमे आ भाषाक अद्यतन भाषा अथवा शब्दावलीक अद्यतन
व्यापक होइवाक अर्थ निर्यात विकासमे अस्ति ।

एहि शब्दावलीक अद्यतनक अथवा शब्दावलीक अद्यतन अथवा अद्यतन
एहि शब्दावलीक अद्यतनक अथवा शब्दावलीक अद्यतन अथवा अद्यतन
सम्बन्धी शब्दावलीक अद्यतनक अथवा शब्दावलीक अद्यतन अथवा अद्यतन

पावन सम्बन्धी शब्दावलीमे अथवा शब्दावलीक अद्यतनक अथवा शब्दावलीक अद्यतन
पौराणिक शब्दावलीक अद्यतनक अथवा शब्दावलीक अद्यतनक अथवा शब्दावलीक अद्यतन
आ कालीन भाषाक अथवा शब्दावलीक अद्यतनक अथवा शब्दावलीक अद्यतन
निर्यात पडैत अस्ति पावन सम्बन्धी शब्दावलीक अद्यतनक अथवा शब्दावलीक अद्यतन
योगरूप शब्दावलीक अद्यतनक अथवा शब्दावलीक अद्यतनक अथवा शब्दावलीक अद्यतन

पावन सम्बन्धी शब्दावलीक अद्यतनक अथवा शब्दावलीक अद्यतनक अथवा शब्दावलीक अद्यतन
एहि भाषा अथवा शब्दावलीक अद्यतनक अथवा शब्दावलीक अद्यतनक अथवा शब्दावलीक अद्यतन
अथवा शब्दावलीक अद्यतनक अथवा शब्दावलीक अद्यतनक अथवा शब्दावलीक अद्यतन
अथवा शब्दावलीक अद्यतनक अथवा शब्दावलीक अद्यतनक अथवा शब्दावलीक अद्यतन

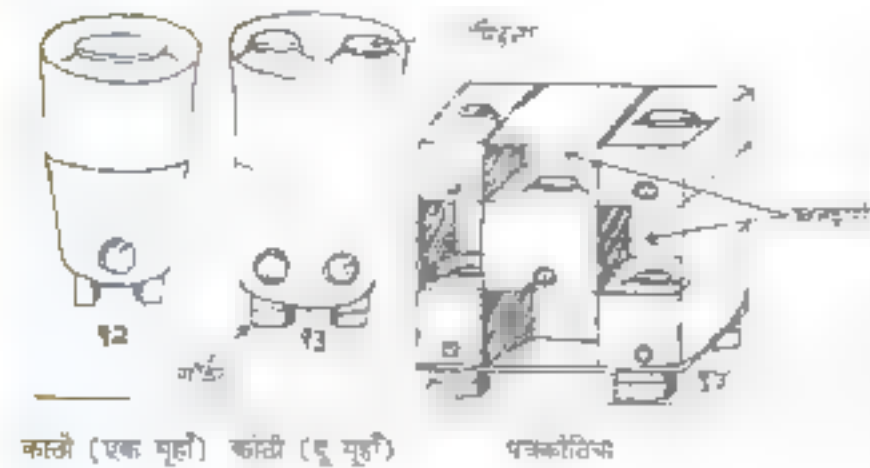
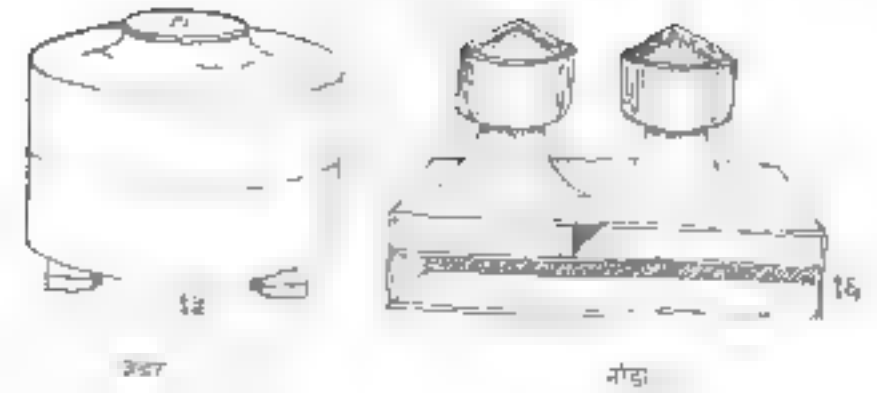
अथवा शब्दावलीक अद्यतनक अथवा शब्दावलीक अद्यतनक अथवा शब्दावलीक अद्यतन
शब्दावलीक अद्यतनक अथवा शब्दावलीक अद्यतनक अथवा शब्दावलीक अद्यतन
अथवा शब्दावलीक अद्यतनक अथवा शब्दावलीक अद्यतनक अथवा शब्दावलीक अद्यतन
अथवा शब्दावलीक अद्यतनक अथवा शब्दावलीक अद्यतनक अथवा शब्दावलीक अद्यतन

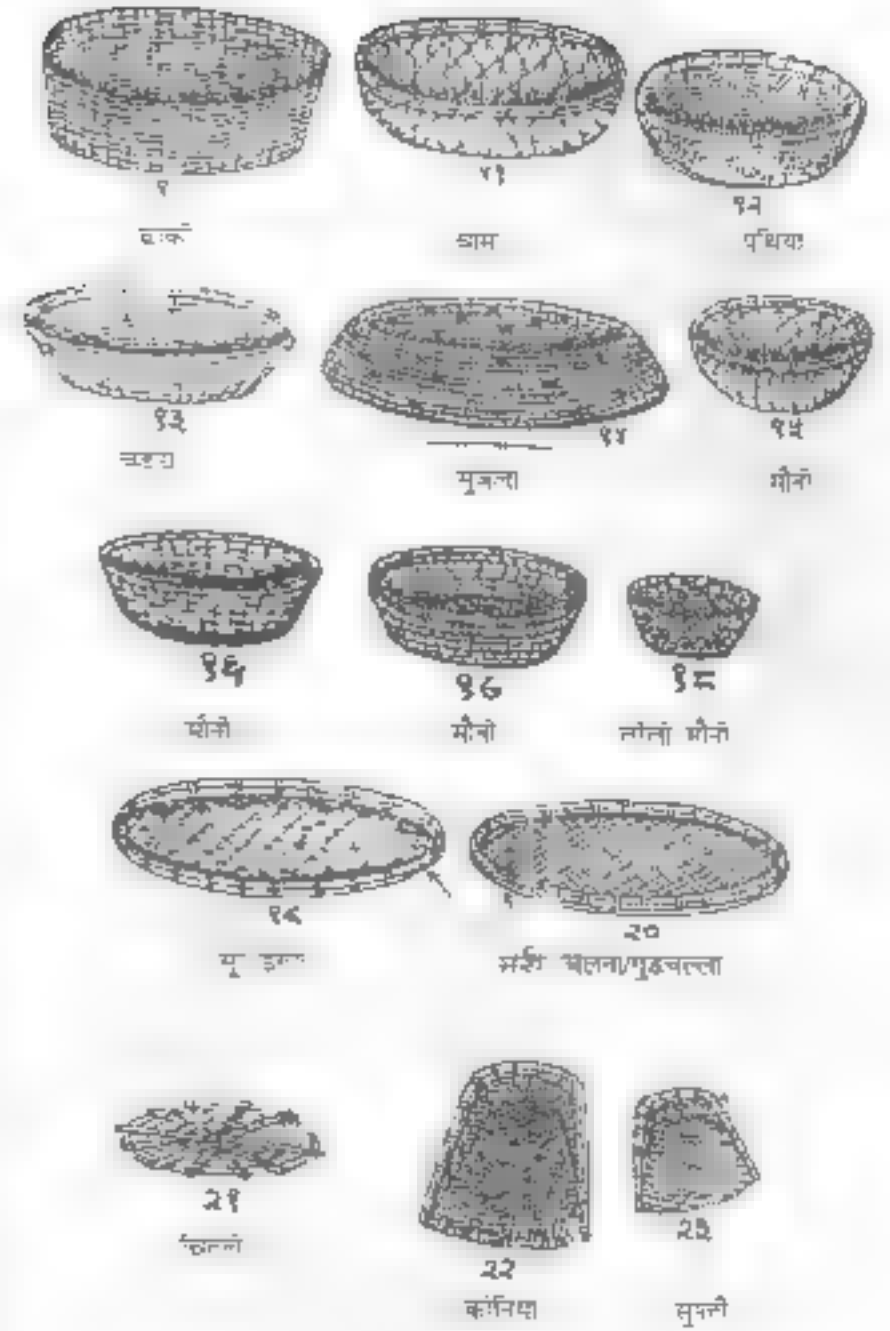
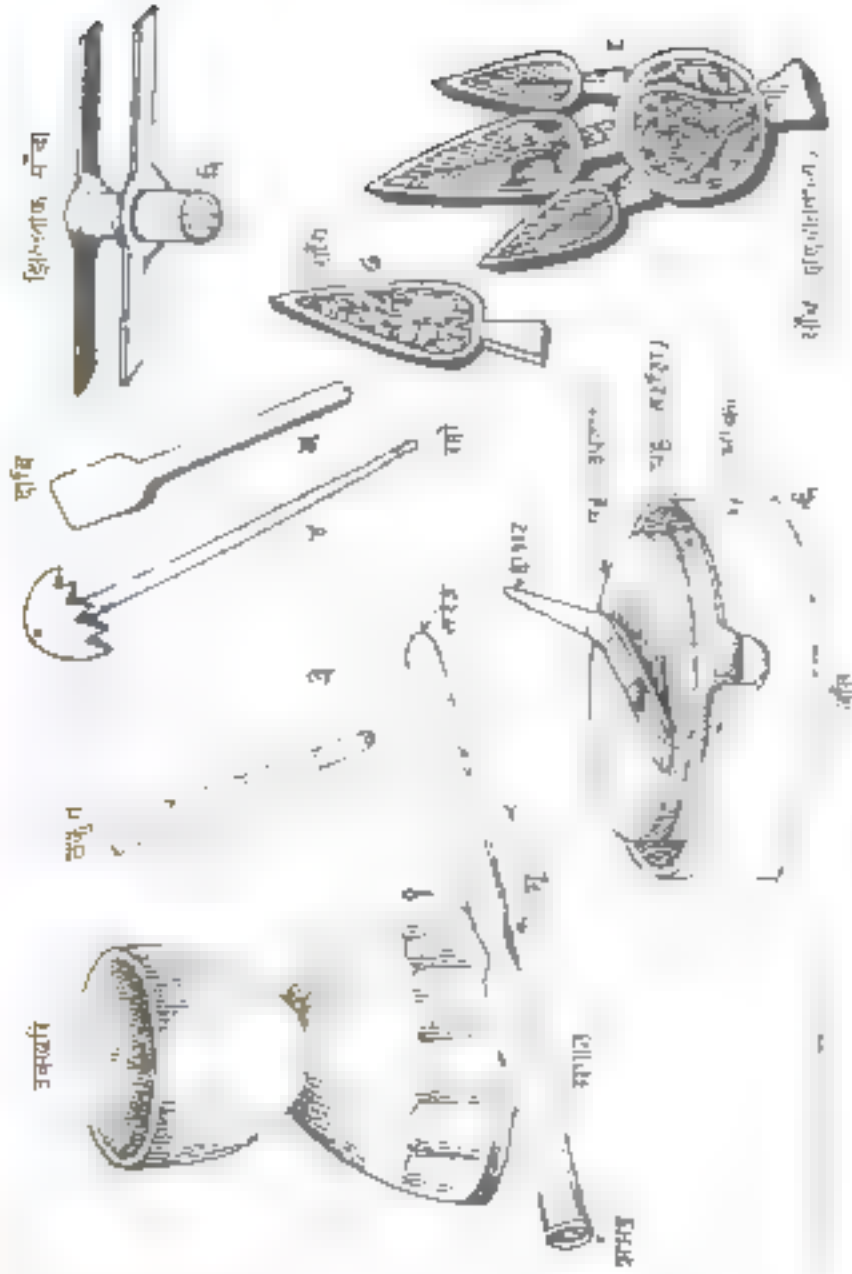
पावन सम्बन्धी शब्दावलीमे स्वाधिक अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा
अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा
अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा

भाषाक अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा
अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा
अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा

पावन सम्बन्धी शब्दावलीक अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा
अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा
अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा

पावन सम्बन्धी शब्दावलीमे अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा
अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा
अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा
अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा





परिशिष्ट-ख
अधीत ग्रन्थक सूची

संस्कृत

1. कादम्बरी बाणभट्ट, पं. मोहनदास पन्त सर्वोच्च न्यायाधीश, जस्टिस दिल्ली-6
2. गुरुश्वर गलाकर चण्डेश्वर मं. कश्मिकुण्ड मुक्ति, गुरु प्रशिक्षण मन्त्रालय आंध्र प्रदेश, कलकत्ता, 1928
3. चरक भूय स्थान चरक मंत्रालय आंध्र प्रदेश विश्वविद्यालय, बंगलूरु बंगलूरु, बंगलूरु नगर दिल्ली-6
4. ए. व्यंकटेश्वर मन्त्रालय आंध्र प्रदेश विश्वविद्यालय, बंगलूरु नगर दिल्ली-6
5. दानवकुमारजी विद्यापति संस्कृत विश्वविद्यालय दिल्ली भाग 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 32, 33, 34, 35, 36, 37, 38, 39, 40, 41, 42, 43, 44, 45, 46, 47, 48, 49, 50, 51, 52, 53, 54, 55, 56, 57, 58, 59, 60, 61, 62, 63, 64, 65, 66, 67, 68, 69, 70, 71, 72, 73, 74, 75, 76, 77, 78, 79, 80, 81, 82, 83, 84, 85, 86, 87, 88, 89, 90, 91, 92, 93, 94, 95, 96, 97, 98, 99, 100, 101, 102, 103, 104, 105, 106, 107, 108, 109, 110, 111, 112, 113, 114, 115, 116, 117, 118, 119, 120, 121, 122, 123, 124, 125, 126, 127, 128, 129, 130, 131, 132, 133, 134, 135, 136, 137, 138, 139, 140, 141, 142, 143, 144, 145, 146, 147, 148, 149, 150, 151, 152, 153, 154, 155, 156, 157, 158, 159, 160, 161, 162, 163, 164, 165, 166, 167, 168, 169, 170, 171, 172, 173, 174, 175, 176, 177, 178, 179, 180, 181, 182, 183, 184, 185, 186, 187, 188, 189, 190, 191, 192, 193, 194, 195, 196, 197, 198, 199, 200, 201, 202, 203, 204, 205, 206, 207, 208, 209, 210, 211, 212, 213, 214, 215, 216, 217, 218, 219, 220, 221, 222, 223, 224, 225, 226, 227, 228, 229, 230, 231, 232, 233, 234, 235, 236, 237, 238, 239, 240, 241, 242, 243, 244, 245, 246, 247, 248, 249, 250, 251, 252, 253, 254, 255, 256, 257, 258, 259, 260, 261, 262, 263, 264, 265, 266, 267, 268, 269, 270, 271, 272, 273, 274, 275, 276, 277, 278, 279, 280, 281, 282, 283, 284, 285, 286, 287, 288, 289, 290, 291, 292, 293, 294, 295, 296, 297, 298, 299, 300, 301, 302, 303, 304, 305, 306, 307, 308, 309, 310, 311, 312, 313, 314, 315, 316, 317, 318, 319, 320, 321, 322, 323, 324, 325, 326, 327, 328, 329, 330, 331, 332, 333, 334, 335, 336, 337, 338, 339, 340, 341, 342, 343, 344, 345, 346, 347, 348, 349, 350, 351, 352, 353, 354, 355, 356, 357, 358, 359, 360, 361, 362, 363, 364, 365, 366, 367, 368, 369, 370, 371, 372, 373, 374, 375, 376, 377, 378, 379, 380, 381, 382, 383, 384, 385, 386, 387, 388, 389, 390, 391, 392, 393, 394, 395, 396, 397, 398, 399, 400, 401, 402, 403, 404, 405, 406, 407, 408, 409, 410, 411, 412, 413, 414, 415, 416, 417, 418, 419, 420, 421, 422, 423, 424, 425, 426, 427, 428, 429, 430, 431, 432, 433, 434, 435, 436, 437, 438, 439, 440, 441, 442, 443, 444, 445, 446, 447, 448, 449, 450, 451, 452, 453, 454, 455, 456, 457, 458, 459, 460, 461, 462, 463, 464, 465, 466, 467, 468, 469, 470, 471, 472, 473, 474, 475, 476, 477, 478, 479, 480, 481, 482, 483, 484, 485, 486, 487, 488, 489, 490, 491, 492, 493, 494, 495, 496, 497, 498, 499, 500, 501, 502, 503, 504, 505, 506, 507, 508, 509, 510, 511, 512, 513, 514, 515, 516, 517, 518, 519, 520, 521, 522, 523, 524, 525, 526, 527, 528, 529, 530, 531, 532, 533, 534, 535, 536, 537, 538, 539, 540, 541, 542, 543, 544, 545, 546, 547, 548, 549, 550, 551, 552, 553, 554, 555, 556, 557, 558, 559, 560, 561, 562, 563, 564, 565, 566, 567, 568, 569, 570, 571, 572, 573, 574, 575, 576, 577, 578, 579, 580, 581, 582, 583, 584, 585, 586, 587, 588, 589, 590, 591, 592, 593, 594, 595, 596, 597, 598, 599, 600, 601, 602, 603, 604, 605, 606, 607, 608, 609, 610, 611, 612, 613, 614, 615, 616, 617, 618, 619, 620, 621, 622, 623, 624, 625, 626, 627, 628, 629, 630, 631, 632, 633, 634, 635, 636, 637, 638, 639, 640, 641, 642, 643, 644, 645, 646, 647, 648, 649, 650, 651, 652, 653, 654, 655, 656, 657, 658, 659, 660, 661, 662, 663, 664, 665, 666, 667, 668, 669, 670, 671, 672, 673, 674, 675, 676, 677, 678, 679, 680, 681, 682, 683, 684, 685, 686, 687, 688, 689, 690, 691, 692, 693, 694, 695, 696, 697, 698, 699, 700, 701, 702, 703, 704, 705, 706, 707, 708, 709, 710, 711, 712, 713, 714, 715, 716, 717, 718, 719, 720, 721, 722, 723, 724, 725, 726, 727, 728, 729, 730, 731, 732, 733, 734, 735, 736, 737, 738, 739, 740, 741, 742, 743, 744, 745, 746, 747, 748, 749, 750, 751, 752, 753, 754, 755, 756, 757, 758, 759, 760, 761, 762, 763, 764, 765, 766, 767, 768, 769, 770, 771, 772, 773, 774, 775, 776, 777, 778, 779, 780, 781, 782, 783, 784, 785, 786, 787, 788, 789, 790, 791, 792, 793, 794, 795

सौमित्रवैजयन्त्यानुसंगान्तप्राग्वहः पुन विद्यार्थि संस्कृत ग्रन्थ-ताना प्रतीय मद्रः
रा क जयमान जिह्वा अनान्दसा कामध्वजास्त इषणा संस्कारा विशदविद्यालय
दरभंगा

- संस्कृत-विभाग : संतंदर विद्यालय, मंगलनाथ बजार, गोरख जिला
दिनांक :-

श्रुति-स्मृति-पुराण

१. अग्नि पुराण
२. भगवद्गीता
३. ब्रह्मसूत्र
४. छान्दोग्य उपनिषद्
५. तैत्तिरीय उपनिषद्
६. मनुस्मृति
७. राजतन्त्रकथा सूक्ति
८. विश्वसु पुरुष
९. श्रीमद्भागवत पुराण

ਅਫ਼ਰੇਜ਼ਾ

- [illegible]

10. द स्टूडेंट्स सस्कृत शैक्षणिक शिक्षणार्थी बोर्ड, अन्तर्गत पत्राचार, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस, दिनांक: 7
- निहार धीरेन्द्र तन्त्रक श्रियम्भर जन्म: एकेन्द्रकेशव 74 वीं अन्तर्गत पत्राचार, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस, दिनांक: 6, 1975
11. भास ए स्टूडेंट्स एंड टीचर्स एसोसिएशन, मुम्बई, अन्तर्गत पत्राचार, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस, दिनांक: 6, 1988
12. पेश्वेती प्राध्यापक जी. ए. श्रियम्भर अन्तर्गत पत्राचार, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस, दिनांक: 6, 1978
13. कृष्ण एण्ड एनर्जेटिकल कम्पनी प्रा. लि. ए. नैरे एण्ड एनर्जेटिक कम्पनी प्रा. लि. अन्तर्गत पत्राचार, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस, दिनांक: 6, 1988

हिन्दी

- 3.5 कवि कालिदास जं जन्म पर अज्ञात नकारात्मक मतों पर संस्कृति ड. गायत्री
धर्मा हिंदी प्रतापक पुस्तकालय रा. रा. न. 10 दिशाचर्याधन वाचस्पति
16. कृष्ण जीवित सम्बन्धों वृत्तभाषा शब्दावली भाषा 1 एवं 2 हिन्दुस्तानी एकदम
इलाहाबाद 1960-61.
37. ग्रामाशांश और उनकी शब्दावली डा. हरिहर प्रसाद गुप्त राजकमल पब्लिकेशन्स
लिमिटेड बम्बई 1969
38. जैन आगम साहित्य में भाषाई संज्ञा डा. बालदेवचन्द्र जैन नई दिल्ली विश्वविद्यालय
प्राणसी 1, 1963
39. प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक धर्म का गहन अध्ययन एवं प्रकाशन
प्रकाशन इलाहाबाद, 1966
40. पदकालानुसंधार डा. रत्नदत्त शर्मा कोटुवा विश्वविद्यालय प्रकाशन 1970
- 4 हिंदी गद्य का आगम अध्ययन डा. बालदेवचन्द्र जैन इलाहाबाद 1965

पथिली

- [illegible]

31. अरिपर-रूपरायणकीवरी 'अनूप' वरतन गोष्ठी, दरभंगा
32. उत्तरका श्रवण पत्र 2 संतारमझा मास्टर खानाई शाल एण्ड कम कबीरान्वी खराणसी 1341 साल
33. औषिक समझा, यजनन्दझा पौहदी दरभंगा- 2003
34. अमर नरुपुनर 'उदई' पत्रिका, विद्यमान मिसर भगमाइटी कविलपुर दरभंगा 1977
35. इन्टरनेशनल मैथिली गद्य पद्य संग्रह मैथिली अकादमी पटना 48
36. एक खोरा : तीन फौक- रामदेवझा, सुधा प्रकाशन दरभंगा, 1965
37. एकांकी कथनिक- तन्त्रनाथझा, भारती प्रकाशन केन्द्र, दरभंगा
38. एकांकी संग्रह डॉ. सुरन्द्रझा 'सुमन' मैथिली अकादमी, पटना, 1977
39. अनुपम चन्द्रनाथमिश्र अमर मैथिली ग्रन्थमाला, प्रकाशन मिथिलांला दरभंगा 1976
40. कथा संग्रह- मैथिली अकादमी पत्र 1977
41. कन्यादान हर्षिप्रसादझा, जनसेदन प्रकाशन कुमर बाजितपुर वैशाली 982
42. कविता कलाप से शंकरकुमारझा अखिल भारतीय मैथिली भाषिण्य परिषद दरभंगा 1970
43. कविता कसूम गुं रमानाथझा विद्यमान प्रकाशन दरभंगा 2 3 साल
44. कविता संग्रह-मैथिली अकादमी, पटना- 1977
45. कविता श्रवण पत्र रचनवर्ती मू रामदेवझा मैथिली अकादमी पटना 1980
46. कौत्क चष-तन्त्रनाथझा एवकुमारगंज, दरभंगा, सन् 1372 साल
47. कविता संग्रह 'विद्यमान' म. ओरुमय देवसेना गवरी प्रचलित रफा बाराणसी 1977
48. कृष्ण शर्मा नवीन म. गुण्डला 'सुन' मैथिली मॉटर राजकुमारगंज दरभंगा
49. कोशी गीत जगदशर मल्लिक मल्लिक सदन, जहगंज मधेपुरा
50. कदम्बकाक तन्त्र हर्षिप्रसादझा भरतोमदन एजिजकीशन रोड पटना 1976
51. गीतक फुलवर्ती परमानन्द एवं मझासद, पचावी प्रकाशन, 985
52. गीतनाद-सं विपुल आनन्द, पचावी प्रकाशन पटना, 1986
53. गुदपुटी-चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' वरतन गोष्ठी दरभंगा साल 1364

68. योगेन्द्र गीतावलि - स. सुरेन्द्रा 'सुमन', मैथिली मन्दिर, राजकुमार गंज, दरभंगा
69. ज्वरी- हरिमोहनदा, मैथिली प्रकाशन, 6/1 वायव्य बाइल लेन, कलकत्ता- 19, 1989
70. चन्द्र रचनावली- स. विश्वेश्वरधरमिश्र, मैथिली अकादमी, पटना, 1981
71. विद्या-यात्री, जगन्मित्र भाग्यलोक मैथिली साहित्य समिति- 1, कां. सर गे.सी. बनर्जी रोड, प्रयाग, 1390 साल
72. चीनीक लट्ठू-ईशनाथदा, विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा, 1964
73. लौक-हरिमोहनदा, 'हरीरा' ग्रन्थालय प्रकाशन, टावर चौक, दरभंगा, 1964
74. बीरो पावर, चन्द्रनयनमिश्र अमर, नवराज गोपनी, दरभंगा, 2008
75. जट-जटिन- उपेन्द्रका, मैथिली साहित्य संस्थान, पटना- 1971
76. नमोनेम फूटै छै अंकुर- दयानन्दमिश्र, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, कविलपुर, दरभंगा, 2010
77. टूटल तागक एकटा और-यहेंद्र मल्लगिया, श्रौत्रानका पुस्तक भण्डार, जानकौल, जनकपुरधाम, 1983
78. डाक वचनामृत- 1-4 भाग, कन्हैखाल कुशदास, कच्छी चौक, लहेरियासराय
79. तेसर कमिर्जा- ब्रजकिशोर शर्मा 'मणिपद्म' कर्णगोश्री, 1, डा. अम्बिका राजा लेन, कलकत्ता 15, 1986
80. छदशी- कामोकांतमिश्र 'मधुप' उत्तरतसंध, कोरु, दरभंगा, 1979
81. हिरामन- हरिमोहनदा, पुस्तक भण्डार, पटना- 4
82. दुखिया नाबाक छदछम- राजेश्वरदा, मैथिली साहित्य संस्थान, पटना, 1972
83. दू पत्र- उपेन्द्रका 'व्यास'
84. धातुपाठ- दोनबन्धुदा, मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा, 1949-50
85. धूर्तमहागय-जयतिशेखर, मिथिला परम्परागत गायक संग्रह, प्रथम खण्ड-स. भागिनाथदा, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, 1985
86. नक्षत्रिया-यात्री, विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा 1965
87. नीतिपञ्चावली- कनार्दनदा 'जनमोदन', पुस्तक भण्डार, पटना
88. प्रणय देवता- हरिमोहनदा, जनमोदन प्रकाशन, कुवर कविलपुर, वैशाली
89. प्रतिनिधि एकांकी- स. चन्द्रनाथमिश्र अमर, मैथिली ग्रन्थालय प्रकाशन, मिथिला, दरभंगा, 1980

90. प्रतिपदा- सुरेन्द्रा 'सुमन', मैथिली मन्दिर, राजकुमार गंज, दरभंगा, 1984
91. पत्रहीन नयन गल- यात्री, मैथिली एकांकी, इलाहाबाद, 1967
92. पसिझैत पावर, उपेन्द्रका, संकल्प लोक लहेरियासराय, दरभंगा, 1989
93. प्रेरण पुष्प- कामोकांतमिश्र 'मधुप', मैथिली अकादमी, पटना, 1980
94. पुष्पोप-लालि, विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा, 1964
95. ब्रजाल-योगेन्द्रका, दरभंगा प्रेस वर्क लिमिटेड, 1958
96. बौद्धगानपे तान्त्रिक सिद्धांत, जयघाटी सिंह, मधुबनी, 1969
97. पतञ्जलि-योगेन्द्रका, पुस्तक भण्डार, लहेरियासराय, सन् 1352 साल
98. भावगजनी- स. देवेन्द्रका, मैथिली अकादमी, पटना 1983
99. मधुसूतनी पूजा कथा- ईशनाथदा, कन्हैया खाल कुशदास, लहेरियासराय, दरभंगा, 1975
100. मनुक सन्तान- उपेन्द्रका, भारती प्रकाशन केन्द्र, दरभंगा, 1968
101. मन्दिर- मामयनयनका, छत्र पुस्तक भण्डार, मधुबनी
102. मिथिला भाषा कोष- दोनबन्धुदा, इनहपुर, सरिसब पाटी, दरभंगा, शाके 1872
103. मिथिल भाषा प्रकाश- रामनाथदा, ग्रन्थालय प्रकाशन, दरभंगा, 1964
104. मिथिल भाषा रामायण-चन्द्रका, मैथिली अकादमी, पटना- 1977
105. मिथिल भाषा विशालन-दोनबन्धुदा, मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा, 1353 साल
106. मैथिल संस्कृति ओ सम्पदा (द्वितीय भाग)- स.प. उपेन्द्रका, वैदिकी समिति, दरभंगा
107. मैथिलीक आधुनिक कथा- स. रामनाथदा 'रमण', अधीत प्रकाशन, प्रोफेसर क्वार्टर, पटना, 1978
108. मैथिली काव्य बटस-सोतारामदा, मास्टर प्रकाशन पवन, कायस्थी, 2025
109. मैथिली भाषा का विकास -योगेन्द्रका, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना- 4, 1974
110. मैथिली लोकगीत- रामझवालीसंह शर्मा-हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, स. 2012
111. मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य, उपेन्द्रका, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, दरभंगा, 2002

112. मैथिली व्याकरण मीमांसा- सुन्दर, चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय, दरभंगा 1983
113. मैथिली साहित्यिक इतिहास- दुर्गाधर 'श्री', भागी पुस्तक केंद्र, दरभंगा, 1977
114. मिथिला संस्कार गीत- कामेश्वरीदेवी, मैथिली अकादमी, पटना
115. रंगशाला- हरिप्रसाद, पुस्तक भंडार, पटना
116. रमेश्वरचरित मिथिला रामायण- लालदास, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 1999
117. राजा शिवसिंह-गोविन्द, 2/6, राजशरीरंग, पटना-1
118. राधाचरित- काशीकान्तमिश्र 'पद्म'- हरिनन्दन सिंह स्थापक निधि, राधेपुर, कुशीनर रोड, दरभंगा 1969
119. रामकोशी कागलक पौखन, रामदेव, मिथिला रिजर्व सोसाइटी, कबिलपुर, दरभंगा, 2002
120. रत्नमणि परिणय- नवुआजी 'अज्ञात', मैथिली अकादमी, पटना 1980
121. लोकजीवन ओ लोक साहित्य- योगानन्द, कोरिलता कोकारटेव सोसाइटी कबिलपुर लक्ष्मीवासराय, दरभंगा, 1986
122. सोचन- डॉ. चन्द्रनाथमिश्र 'अमर', धैर्यन्याय विद्यापति गोष्ठी, वैद्य, 1960
123. लोचनकृत छात्रागण- डॉ. शशिनाथ, मैथिली अकादमी, पटना, 1981
124. वर्णरत्नाकर-न्यायिरीश्वर- डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी एवं नवुआजी, राजकीय सोसाइटी आफ बंगाल, कलकत्ता, 1940
125. विद्यापति- मित्र मबुमदार
126. विद्यापति अनुशोचन एवं मूल्यांकन, डॉ. वीरेन्द्र चौधरी, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना- 3, 1976
127. विद्यापति कालीन मिथिला- इन्द्रकांत, मैथिली अकादमी, पटना, 1986
128. विद्यापति गीतावली- डॉ. गोविन्द, मैथिली अकादमी, पटना- 1981
129. विद्यापति- चन्द्रनाथमिश्र 'अमर', विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा 1971
130. वीर सोनद नरक- जीवनचर, दीनबन्धु पुस्तकालय, इसरापुर, लक्ष्मीवासराय, दरभंगा, 1956
131. वृद्ध मैथिली शब्दकोष- जगन्नाथमिश्र- इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ एडवन्स स्टडीज, शिमला- 5, 1973

132. शिक्षा सोचन- कुशीनरकुमार, साहित्य कार्यालय, कुशीनर, पुनपुनपुर, संवत् 1993
133. सोचन- प्रपुनरायण 'प्रदीप', ग्रन्थमाला प्रकाशन, दरभंगा, 1971
134. संकलन- डॉ. रौलेन्द्रमोहन, मिथिला प्रकाशन, लक्ष्मीवासराय 1967
135. संकलन- मैथिली अकादमी, पटना 1977
136. सन्धि सम्मेलन, शंकरदेव, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2008
137. हरिप्रसाद चरित-जगन्नाथमिश्र, डॉ. रामदेव, मिथिला रिजर्व सोसाइटी, लक्ष्मीवासराय, 1982
138. क्षमादान- विनोदचर मण्डल, मैथिली रंगमंच, जयवंत मिश्र रोड, कलकत्ता- 26

पत्र-पत्रिका

धर्मपुर, हिन्दी साप्ताहिक, बम्बई

मिथिला मिहिर, पटना

मैथिली अकादमी पत्रिका, पटना

स्वदेश मासिक, दरभंगा

रुच (हस्तलिखित, पत्रिका), दरभंगा



डा. ललितम्बा

जन्म - 3 फरवरी 1951, पतिवडीप, दरभंगा

शिक्षा - एम. ए. मैथिली, 1976

ल.ना.मि.वि., दरभंगा

पी.एच.डी., 1988

ल.ना.मि.वि., दरभंगा

वृत्ति - भ्रूणनिवृत्त शिक्षिका

अभिधात्रि - लेखन एवं गणकर्म

● लिखित पत्र-पत्रिकादिमें रचना प्रकाशित

● 1976में ल.ना.मि.वि., दरभंगामें आयोजित युवा महोत्सवमें मैथिली एकांकिक अभिनय हेतु पुरस्कृत

● 1976में चंडवा समिति, फटनाक रंगमंचपर 'समिद्धेत पाथर' नाटकमें चम्पाक अभिनय हेतु प्रशंसित

● 1984में साहित्य अकादेमी, पई दिल्ली द्वारा कोलकातामें आयोजित 'इण्डियन ओरल ट्रेडिशन फॉर्म' 59 इंटर्नल इण्डियन लैंग्वेजेंस' विषयक राष्ट्रीय सम्मेलनमें सहभागिता

प्रकाशक पता - द्वारा - शिवकान्तदा (अधिलेखन)

ग्राम-पं. : हावी-भोजार

जिला - दरभंगा (बिहार)

